bjpkamaljyoti@gmail.com www.up.bjp.org संवत 2081 युगाब्द 5126 कुल पृष्ठ – अगस्त संयुक्तांक 2024, वर्ष –36 : अंक –01–02

सुराज की विचार यात्रा
वर्तमान कमल ज्योति

वर्तमान कमल ज्योति

RNI-51899/91- UPHIN16701

₹20

सदस्यता
अभियान-2024
कार्यशाला
सदस्यता
अभियान-2024
कार्यशाला

सदस्यता
अभियान-2024
कार्यशाला
88 00 00 2024
सदस्यता
अभियान-2024
कार्यशाला
88 00 00 2024

वर्तमान
कमल ज्योति

संरक्षक
श्री भूपेन्द्र सिंह
सम्पादक
अरुण कान्त त्रिपाठी
प्रबन्ध/कार्यकारी सम्पादक
राजकुमार
प्रकाशक
प्रो0 श्याम नन्दन सिंह
पृष्ठ संयोजक
ओम प्रकाश पंडित

कार्यालय

कमल ज्योति, 7–विधानसभा मार्ग
लखनऊ – 1
फोन :– 0522–2200187
फैक्स :– 0522–2612437

Email-
bjpkamaljyoti@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेखों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं

मुद्रक

नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, राजेन्द्र नगर, लखनऊ–4

www.up.bjp.org
bjpkamaljyoti
bjpkamaljyoti
@bjpkamaljyoti

शत्-शत् नमन

सम्पादकीय

नव संकल्प ''विकसित भारत''

15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री ने ''**विकसित भारत**'' के संकल्प को पूरा करने में सभी देश वासियों का आह्वान किया। इसके साथ ही विश्व में शाँति के प्रयासों को दुहराते हुए कहा कि भारत की शक्ति से किसी को डरने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि हमरा बुद्ध का देश हैं, यह संदेश विरोधी देशो के साथ संघर्षरत विश्व के लिए था। प्रधानमंत्री ने अपने संबोधान में पाकिस्तान का नाम तक नही लिया और बांग्लादेश के हिन्दुओं के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि बांग्लादेश शीघ्र ही भारत के साथ विकास यात्रा में शामिल होगा। उनका स्पष्ट लक्ष्य था, विकसित भारत 2047 जिसके लिए वह 24 घंटे अनवरत बिना रुके, बिना थके देश के विकास के लिए ''**राष्ट्र प्रथम**'' की भावना से कार्य करने के लिए संकल्पवान हैं।

प्रधानमंत्री ने राष्ट्र की विकास यात्रा में सहभागी बन रहे सभी समाज के सभी क्षेत्रों और वर्गों को छुआ। गांव, गरीब, किसान, युवा, महिला व सेना के जवान सहित सभी की चिंता करते हुए कई महत्वपूर्ण घोषणाएं करते हुए सरकारी योजनाओं का संक्षिप्त खाका भी प्रस्तुत किया।

प्रधानमंत्री ने कहा कि सरकार अब समान नागरिक संहिता पर आगे बढ़ने जा रही है । संविधान निर्माताओं, संविधान की भावना और सुप्रीम कोर्ट के आदेशों व समय –समय पर की गई टिप्पणियों का उल्लेख करते हुए कहा कि देश में भेदभाव वाले कानून अब नहीं रह सकते। वर्तमान सिविल कोड को सांप्रदायिक बताते हुए कहा कि देश ऐसे किसी कानून को बर्दास्त नहीं कर सकता जो धार्मिक आधार पर विभाजन का कारण बने। देश को ऐसे भेदभावकारी कानूनों से मुक्ति लेनी ही होगी। सुप्रीम कोर्ट ने अपने कई आदेशों में देश में समान नागरिक संहिता लागू करने का निर्देश दिया है। कई राज्य अब समान नागरिक संहिता लागू करने की ओर बढ़ रहे हैं।

प्रधानमंत्री ने स्पष्ट संकेत कर दिया है कि अब धार्मिक आधार पर अलग–अलग कानूनों के दिन लदने वाले हैं। जो कानून देश को धर्म के आधार पर देश को बांटते हैं, जो ऊँच नीच का कारण बन जाते हैं ऐसे कानूनों का आधुनिक समाज में कोई स्थान नहीं हो सकता, अतः अब देश मे सेक्युलर सिविल कोड होना चाहिए। वहीं इस बार प्रधानमंत्री ने सेकुलर शब्द के माध्यम से एक तीर से कई निशाने साधने का प्रयास किया है जिसने न सिर्फ समान नागरिक संहिता को बल दिया है वरन विपक्ष को भी निःशब्द करने का प्रयास किया है। इन बातों से यह भी संकेत मिल रहा है कि आगामी दिनों में अल्पसंख्यक, समाजवाद व धर्मनिरपेक्ष जैसे शब्द भी गायब हो जायेंगे और उसकी जगह पंथनिरपेक्ष जैसे शब्दों का समावेश हो जायेगा। समाजवाद व धर्मनिरपेक्ष शब्द के विरुद्ध सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका भी लम्बित है।

संविधान के नीति निर्देशक तत्व में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि देश में सभी नागरिकों के लिए एक समान नागरिक संहिता लागू हो। सुप्रीम कोर्ट ने भी 1985,1995, 2003 और 2015 में महत्वपूर्ण मामलों की सुनवाई के दौरान स्पष्ट रूप से कहा कि देश में समान नागरिक संहिता लागू होनी चाहिए। प्रधानमंत्री के संबोधन से यह तय हो गया है कि आगामी समय में एक देश एक चुनाव के साथ ही समान नागरिक संहिता लागू होकर रहेगी और वक्फ कानून में संशोधन भी होकर ही रहेगा। प्रधानमंत्री न्यायिक सुधार के प्रति और भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई के प्रति भी गंभीर हैं। उन्होंने स्पष्ट रूप से कह दिया है कि अब भ्रष्टाचार के खिलाफ जंग रुकने वाली नहीं है अपितु अब यह और अधिक तीव्र होने जा रही है। प्रधानमंत्री के शब्द संकल्पों ने स्पष्ट कर दिया है कि भारत विश्व की बड़ी ताकत बने के तरफ अग्रसर है। जिससे ''**विकसित**'' भारत का सपना साकार होगा। आइये मिलकर इन संकल्पों को साकार करे।

संकल्प विकसित भारत 2047 : मोदी

आज वो शुभ घड़ी है, जब हम देश के लिए मर–मिटने वाले, देश की आजादी के लिए अपना जीवन समर्पित करने वाले, आजीवन संघर्ष करने वाले, फांसी के तख्ते पर चढ़ करके भारत माँ की जय के नारे लगाने वाले अनगिनत आजादी के दीवानों को नमन करने का यह पर्व है। उनका पुण्य स्मरण करने का पर्व है। आजादी के दीवानों ने आज हमें आजादी के इस पर्व में स्वतंत्रता की सांस लेने का सौभाग्य दिया है। यह देश उनका ऋणी है। ऐसे हर महापुरूष के प्रति हम अपना श्रद्धाभाव व्यक्त करते हैं।

आज जो महानुभाव राष्ट्र रक्षा के लिए और राष्ट्र निर्माण के लिए पूरी लगन से, पूरी प्रतिबद्धता के साथ देश की रक्षा भी कर रहे हैं, देश को नई ऊंचाई पर ले जाने का प्रयास भी कर रहे हैं। चाहे वो हमारा किसान हो, हमारा जवान हो, हमारे नौजवानों का हौसला हो, हमारी माता–बहनों का योगदान हों, दलित हो, पीड़ित हो, शोषित हो, वंचित हो अब हम लोगों के बीच भी स्वातंत्रता के प्रति उसकी निष्ठा, लोकतंत्र के प्रति उसकी श्रद्धा यह पूरे विश्व के लिए एक प्रेरक घटना है। मैं आज ऐसे सभी को आदरपूर्वक नमन करता हूं।

इस वर्ष और पिछले कुछ वर्षों से प्राकृतिक आपदा के कारण हम सबकी चिंता बढ़ती चली जा रही है। प्राकृतिक आपदा में अनेक लोगों ने अपने परिवारजन खोये हैं, सम्पत्ति खोई है, राष्ट्र ने भी बारम्बार नुकसान भोगा है। मैं आज उन सबके प्रति अपनी संवेदना व्यक्त, करता हूं और मैं उन्हें विश्वास दिलाता हूं, यह देश इस संकट की घड़ी में उन सबके साथ खड़ा है।

हम जरा आजादी के पहले के वो दिन याद करें, सैकड़ों साल की गुलामी में हर कालखंड संघर्ष का रहा। युवा हो, बुजुर्ग हो, किसान हो, महिला हो, आदिवासी हो, वे गुलामी के खिलाफ जंग लड़ते रहे, अविरत जंग लड़ते रहे। इतिहास गवाह है कि 1857 के स्वतंत्रता संग्राम जिसको हम याद करते हैं, उसके पूर्व भी हमारे देश के कई आदिवासी क्षेत्र थे, जहां आजादी की जंग लड़ी जाती थी।

गुलामी का इतना लम्बा कालखंड, जुल्मी शासक, अपरंपा यातनाएं, सामान्य से सामान्य मानवीयों का विश्वास तोड़ने की हर तरकीब, उसके बावजूद भी, उस समय की जनसंख्यां के हिसाब से करीब 40 करोड़ देशवासी आजादी के पूर्व 40 करोड़ देशवासियों ने वो जज्बा, दिखाया, वो सामर्थय दिखाया, एक सपना ले करके चले, एक संकल्प ले करके चलते रहे, जूझते रहे; एक ही स्वोर था वंदे मातरम्, एक ही सपना था भारत की आजादी का। 40 करोड़ देशवासियों ने, और हमें गर्व है की हमारी रगों में उन्हीं का खून है। वो हमारे पूर्वज थे, सिर्फ 40 करोड़। 40 करोड़ लोगों ने दुनिया की महा सत्ता को उखाड़ करके फेंक दिया था, गुलामी की जंजीरों को तोड़ दिया था। अगर हमारे पूर्वज, जिनका खून हमारी रगों में है, आज हम तो 140 करोड़ हैं। अगर 40 करोड़ गुलामी की बेड़ियों को तोड़ सकते हैं, अगर 40 करोड़ आजादी के सपने को पूर्ण कर सकते हैं, आजादी ले करके रह सकते हैं तो 140 करोड़ देश के मेरे नागरिक, 140 करोड़

मेरे परिवारजन अगर संकल्प ले करके चल पड़ते हैं, एक दिशा निर्धारित करके चल पड़ते हैं, कदम से कदम मिलाकर, कंधे से कंधा मिलाकर अगर चल पड़ते हैं, तो चुनौतियां कितनी भी क्यों न हों, अभाव की मात्रा कितनी ही तीव्र क्यों न हो, संसाधनों के लिए जूझने की नौबत हो तो भी, हर चुनौती को पार करते हुए हम समृद्ध भारत बना सकते हैं। हम 2047 विकसित भारत का लक्ष्य प्राप्ती कर सकते हैं। अगर 40 करोड़ देशवासी अपने पुरुषार्थ से, अपने समर्पण से, अपने त्याग से, अपने बलिदान से आजादी दे सकते हैं, आजाद भारत बना सकते हैं तो 140 करोड़ देशवासी उसी भाव से समृद्ध भारत भी बना सकते हैं।

एक समय था जब लोग देश के लिए मरने के लिए प्रतिबद्ध थे और आजादी मिली। आज ये समय है देश के लिए जीने की प्रतिबद्धता का। अगर देश के लिए मरने की प्रतिबद्धता आजादी दिला सकती है तो देश के लिए जीने की प्रतिबद्धता समृद्ध भारत भी बना सकती है।

विकसित भारत 2047, ये सिर्फ भाषण के शब्द नहीं हैं, इसके पीछे कठोर परिश्रम चल रहा है। देश के कोटि–कोटि जनों के सुझाव लिए जा रहे हैं और हमने देशवासियों से सुझाव मांगे और मुझे प्रसन्नता है कि मेरे देश के करोड़ों नागरिकों ने विकसित भारत 2047 के लिए अनगिनत सुझाव दिए हैं। हर देशवासी का सपना उसमें प्रतिबिंबित हो रहा है। हर देशवासी का संकल्प उसमें झलकता है। युवा हो, बुजुर्ग हो, गांव के लोग हों, किसान हों, दलित हों, आदिवासी हों, पहाड़ों में रहे वाले लोग हों, जंगल में रहने वाले लोग हों, शहरों में रहने वाले लोग हों, हर किसी ने 2047 में जब देश आजादी का 100 साल मनाएगा, तब तक विकसित भारत के लिए अनमोल सुझाव दिए हैं और मैं जब इन सुझावों को देखता था, मेरा मन प्रसन्न हो रहा था, उन्होंने क्या लिखा, कुछ लोगों ने कहा कि दुनिया का स्किल कैपिटल बनाने का सुझाव हमारे सामने रखा। 2047 विकसित भारत के लिए कुछ लोगों ने भारत को मैन्युफैक्चरिंग का ग्लोबल हब बनाने का सुझाव दिया। कुछ लोगों ने भारत की हमारी यूनिवर्सिटीज ग्लोबल बने इसके लिए सुझाव दिया। कुछ लोगों ने ये भी कहा कि क्या आजादी के इतने सालों के बाद हमारा मीडिया ग्लोबल नहीं होना चाहिए। कुछ लोगों ने ये भी कहा कि हमारा स्किल्ड युवा विश्व की पहली पसंद बनना चाहिए। कुछ लोगों ने सुझाव दिया भारत को जल्दा से जल्द जीवन के हर क्षेत्र में आत्म निर्भर बनना चाहिए।

कई लोगों ने सुझाव दिया कि हमारे किसान जो मोटा अनाज पैदा करते हैं, जिसको हम श्रीअन्न कहते हैं, उस सुपर फूड को दुनिया के हर डाइनिंग टेबल पर पहुंचाना है। हमें विश्व के पोषण को भी बल देना है और भारत के छोटे किसानों को भी मजबूती देनी है। कई लोगों ने सुझाव दिया कि देश में स्थानीय स्वराज की संस्था ओं से लेकर के अनेक इकाइयां हैं, उन सब में गर्वनेंस के रिफॉर्म्र्स की बहुत जरुरत है। कई लोगों ने लिखा कि न्याय के अंदर जो विलंब हो रहा है, उसके प्रति चिंता जाहिर की और ये भी कहा कि हमारे देश में न्याय व्यवस्था में रिफॉर्म्र्स की बहुत बड़ी जरुरत है। कई लोगों ने लिखा कि कई ग्रीन फील्ड सिटिज बनाने की अब समय की मांग है। किसी ने बढ़ती हुई प्राकृतिक आपदाओं के बीच शासन–प्रशासन में कैपेसिटी बिल्डिंग के लिए एक अभियान चलाने का सुझाव दिया।

बहुत सारे लोगों ने ये सपना भी देखा है कि अंतरिक्ष में भारत का स्पेस स्टेशन जल्दा से जल्द बनना चाहिए। किसी ने कहा भारत की जो पारंपरिक ट्रेडिशनल मेडिसिन है, हमारी औषधि है, दुनिया जब आज हॉलिस्टिक हेल्थीकेयर की तरफ जा रही है, तब हमें भारत की पारंपरिक औषधियाँ और

वेलनेस हब के रूप में भारत को विकसित करना चाहिए। कोई कहता है कि अब देर नहीं होनी चाहिए, भारत अब जल्द से जल्दभ दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी इकोनॉमी बनना चाहिए।

मैं इसलिए पढ़ रहा था कि ये मेरे देशवासियों ने ये सुझाव दिए हैं। मेरे देश के सामान्य नागरिक ने ये सुझाव हमें दिए हैं। मैं समझता हूं कि जब देशवासियों की इतनी विशाल सोच हो, देशवासियों के इतने बड़े सपने हो, देशवासियों की इन बातों में जब संकल्प झलकते हों, तब हमारे भीतर एक नया संकल्पप दृढ़ बन जाता है। हमारे मन में आत्मविश्वास नई ऊंचाई पर पहुंच जाता है और साथियों देशवासियों का ये भरोसा सिर्फ कोई intellectual debate नहीं है, ये भरोसा अनुभव से निकला हुआ है। ये विश्वास लंबे कालखंड के परिश्रम की पैदावार है और इसलिए देश का सामान्य मानवीय याद करता है जब लाल किले से कहा जाता है कि हिन्दुस्तान के 18 हजार गांवों में समय सीमा में बिजली पहुंचाएंगे और वो काम हो जाता है, तब भरोसा मजबूत हो जाता है। जब ये तय होता है कि आजादी के इतने सालों के बाद भी ढाई करोड़ परिवार ऐसे हैं, जहां बिजली नहीं है, वो अंधेरे में जिंदगी गुजारते हैं, ढाई करोड़ घरों में बिजली पहुंच जाती है। तब सामान्य मानवीय का भरोसा बढ़ जाता है। जब स्वच्छ भारत की बात कही जाए तभी देश के अग्रिम घरों के पंक्ति में बैठे हुए लोग हों, गांव के लोग हों, गरीब बस्ती में रहने वाले लोग हों, छोटे–छोटे बच्चे हों, हर परिवार के अंदर स्वच्छता का वातावरण बन जाए, स्वच्छता की चर्चा हो, स्वच्छता के संबंध में एक दूसरे को रोक टोकने का निरंतर प्रयास चलता रहे, मैं समझता हूं कि ये भारत के अंदर आई हुई नई चेतना का प्रतिबिंब है।

जब देश के सामने लालकिले से कहा जाए कि आज हमारे परिवारों में तीन करोड़ परिवार ऐसे हैं जिनके घर में नल से जल मिलता है। आवश्यक है हमारे इन परिवारों को पीने का शुद्ध पानी पहुंचे। जल जीवन मिशन के तहत इतने कम समय में नए 12 करोड़ परिवारों को जल जीवन मिशन के तहत नल से जल पहुंच रहा है। आज 15 करोड़ परिवार इसके लाभार्थी बन चुके हैं। हमारे कौन लोग वंचित थे इन व्यवस्थाओं से? कौन पीछे रह गए थे? समाज के अग्रिम पंक्ति के लोग इसके लिए अभाव में नहीं जीते थे। मेरे दलित, मेरे पीड़ित, मेरे शोषित, मेरे आदिवासी भाई–बहन, मेरे गरीब भाई–बहन, मेरे झुग्गी–झोपड़ी में जिंदगी गुजारने वाले लोग, वही तो इन चीजों के अभाव में जी रहे थे। हमने अनेक ऐसे प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जो प्रयास किया और उसका परिणाम हमारे इन सारे समाज के बंधुओं को मिला है।

हमने वोकल फॉर लोकल का मंत्र दिया। आज मुझे खुशी है कि वोकल फॉर लोकल ने अर्थतंत्र के लिए एक नया मंत्र बन गया है। हर डिस्ट्रिक्ट अपनी पैदावर के लिए गर्व करने लगा है। One district one product का माहौल बना है। अब one district one product को one district का one product export कैसे हो उस दिशा में हर जिले सोचने लगे हैं। Renewable energy का संकल्प लिया था। जी–20 समूह के देशों ने जितना किया है उससे ज्यादा भारत ने किया है। और भारत ने ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने के लिए, global warming की चिंताओं से मुक्ति पाने के लिए हमने काम किया है।

देश गर्व करता है आज जब fintech की सफलताओं को लेकर पूरा विश्व भारत से कुछ सीखना समझना चाहता है।

तब हमार गर्व और बढ़ जाता है।

हम कैसे भूल सकते हैं कोरोना के वो संकट काल। विश्व में सबसे तेज गति से करोड़ों लोगों को vaccination का काम हमारे इसी देश में हुआ। जब देश की सेना Surgical Strike करती है, जब देश की सेना Air Strike करती है तो उस देश के नौजवानों का सीना ऊंचा हो जाता है, तन जाता है, गर्व से भर जाता है और यही बातें हैं जो आज 140 करोड़ देश वासियों का मन गर्व से भरा हुआ है, आत्म विश्वास से भरा हुआ है।

इन सारी बातों के लिए एक सुविचारित प्रयास हुआ है। रिफार्म की परंपरा को सामर्थ्य दिया गया है। नक्तर तरीकों को लेकर के और जब राजनीतिक नेतृत्व की संकल्प शक्ति हो, दृढ़ विश्वास हो, जब सरकारी मशीनरी उसको लागू करने के लिए समर्पण भाव से जुट जाती है और जब देश के हर नागरिक उस सपने को पूरा करने के लिए जनभागीदारी करने के लिए, जनआंदोलन बनाने के लिए आगे आता है। तब हमें निश्चित परिणाम मिलता ही रहता है।

हम ये न भूलें कि इस देश उस परिस्थितियों से दशकों तक भी आजादी के बाद समय बिताया है। जब होती है, चलती है, अरे यार ये तो चलेगा, अरे हमें क्या मेहनत करने की जरूरत है, अरे मामला है अगली पीढ़ी देखेगी, हमको मौका मिला हे यार मौज कर लो। आगे वाला आगे का जाने हमें क्या करना है, हम अपना समय निकाल दें। अरे नया करने जाओगे कोई बवाल उठ जाए। पता नहीं क्यों देश में एक Status quo का माहौल बन गया था। जो है उसी से गुजारा कर लो यही का माहौल बन गया था। और लोग तो कहते अरे भई छोड़ो अब कुछ होने वाला नहीं है। चलो ऐसा ही मन बन गया था।

हमें इस मानसिकता को तोड़ना था, हमें विश्वास से भरना था और हमने उस दिशा में प्रयास किया। कई लोग तो कहते थे अरे भई अगली पीढ़ी के लिए काम हम अभी से क्यों करें, हम तो आज का देखें। लेकिन देश का सामान्य नागरिक ये नहीं चाहता था, वो बदलाव के इंतजार में था, वो बदलाव चाहता था, उसकी ललक थी। लेकिन उसके सपने को किसी ने तवज्जों नहीं दी, उसकी आशा, आकांक्षाओं, अपेक्षाओं को तवज्जो नहीं दी गई और उसके कारण वो मुसीबतों को झेलते हुए गुजारा करता रहा। वो reforms का इंतजार करता रहा। हमें जिम्मेदारी दी गई और हमने बड़े reforms जमीन पर उतारे।

गरीब हो, मिडिल क्लास हो, हमारे वंचित लोग हों, हमारी बढ़ती जाती शहरी आबादी हो, हमारे नौजवानों के सपने हो, संकल्प हो, आकांक्षाएं हो, उनके जीवन में बदलाव लाने के लिए reforms का मार्ग हमने चुना और मैं देशवासियों को विश्वास दिलाना चाहता हूं, reforms के प्रति हमारी जो प्रतिबद्धता है वो pink paper के editorial के लिए सीमित नहीं है। हमारे reforms की ये प्रतिबद्धता है वो चार दिन की वाहावाही के लिए नहीं है। हमारी reforms की प्रक्रिया किसी मजबूरी में नहीं है, देश को मजबूती देने के इरादे से है और इसलिए मैं आज कह सकता हूं reforms का हमारा मार्ग एक प्रकार से growth की blueprint बनी हुई है। ये हमारा reform ये growth, ये बदलाव ये सिर्फ debate club के लिए intellectual society के लिए expert लोगों के लिए सिर्फ चर्चा का विषय नहीं है।

हमने राजनीतिक मजबूरी के कारण नहीं किया है। हम जो कुछ भी कर रहे हैं, वो राजनीति का भाग और गुणा करके नहीं सोचते हैं, हमारा एक ही संकल्प होता हैं– Nation First, Nation First, राष्ट्रहित सुप्रीम। ये मेरा भारत महान बने इसी संकल्प को लेकर के हम कदम उठाते हैं।

जब reforms की बात आती है, एक लंबा परिवेश है, अगर मैं उसकी चर्चा में चला जाऊंगा तो शायद घंटों निकल जाएंगे। लेकिन मैं एक छोटा सा उदाहरण देना चाहता हूं। बैंकिंग क्षेत्र में जो reform हुआ। आप सोचिए–बैंकिंग क्षेत्र का क्या हाल था, ना विकास होता था, ना विस्तार होता था, ना विश्वास बढ़ता था। इतना ही नहीं जिस प्रकार के कारनामें चले उसके कारण हमारे बैंक संकटों से गुजर रहे थे। हमने बैंकिंग सेक्टर को मजबूत बनाने के लिए अनेक विद रिफॉर्म्स किए और आज उसके कारण हमारे बैंक विश्व में जो गिने चुने मजबूत बैंक हैं उसमें भारत के बैंकों ने अपना स्थान बनाया है। और जब बैंक मजबूत होती है ना तब formal economy की ताकत भी बढ़ती है। जब बैंक व्यवस्था बन जाती है, जब सामान्य गरीब खासकर के मध्यम वर्गीय परिवार की जो requirement होती हैं, उसको पूरा करने की सबसे बड़ी ताकत बैंकिंग सेक्टर में होती है। अगर उसको होम लोन चाहिए, उसको व्हीकल का लोन चाहिए, मेरे किसान को ट्रैक्टर के लिए लोन चाहिए, मेरे नौजवानों को स्टार्ट अप्स के लिए लोन चाहिए, मेरे नौजवानों को कभी पढ़ने के लिए, education के लिए लोन चाहिए, किसी को विदेश जाने के लिए लोन चाहिए। ये सारी बातें उससे संभव होती है।

मुझे तो खुशी है कि मेरे पशुपालक भी, मेरे मछली पालन करने वाले भाई–बहन भी आज बैंकों से लाभ ले रहे हैं। मुझे खुशी है मेरे रेहड़ी–पटरी वाले लाखों भाई–बहन आज बैंक के साथ जुड़कर के अपनी नई ऊंचाइयों को प्राप्त कर रहे हैं और विकास की दिशा में वो भागीदार बन रहे हैं। हमारे MSMEs, हमारे लघु उद्योग के लिए तो बैंक एक सबसे बड़ी सहायक होती है। उसको रोजमर्रा पैसों की जरूरत होती है, अपने नित्य मर्जी प्रगति के लिए और वो काम हमारी मजबूत बैंकों के कारण आज संभव हुआ है।

दुर्भाग्य से हमारे देश में आजादी तो मिली, लेकिन लोगों को एक प्रकार से माई–बाप culture से गुजरना पड़ा। सरकार के पास मांगते रहो, सरकार के आगे हाथ फैलाते रहो, किसी

की सिफारिश के लिए रास्तेन खोजते रहो, वो ही culture develop हुआ था। आज हमने गवर्नेंस के उस model को बदला है। आज सरकार खुद लाभार्थी के पास जाती है, आज सरकार खुद उसके घर गैस का चूल्हा पहुंचाती है, आज सरकार खुद उसके घर पानी पहुंचाती है, आज सरकार खुद उसके घर बिजली पहुंचाती है, आज सरकार खुद उसको आर्थिक मदद दे करके विकास के नये आयामों को तय करने के लिए प्रेरित करती है, प्रोत्साहित करती है, आज सरकार खुद नौजवान के skill development के लिए अनेक कदम उठा रहा है।

बड़े reforms के लिए हमारे सरकार बहुत ही प्रतिबद्ध है और हम इसी के द्वारा देश में प्रगति की राह को चुनना चाहते हैं।

देश में नई व्यवस्थाएं बन रही हैं। देश को आगे ले जाने के लिए अनेक वित्त नीतियों को, अनेक वित्त पॉलिसीस को निरंतर बनाया जाए और नए सिस्टम पर देश का भरोसा भी बढ़ता रहता है, निरंतर बढ़ता रहता है। आज जो 20–25 साल का नौजवान है, जो 10 साल पहले जब 12–15 साल की उम्र का नौजवान था, उसने अपनी आंखों के सामने यह बदलाव देखा है। 10 साल के भीतर–भीतर उसके सपनों को आकार मिला है, धार मिली है और उसके आत्म विश्वास में एक नई चेतना जगी है और वही देश के एक नये सार्मथ्य के रूप में उभर रहा है। आज विश्वभर में भारत की साख बढ़ी है, भारत के प्रति देखने का नजरिया बदला है।

आज विश्व में युवाओं के लिए संभावना के द्वार खुले हैं। रोजगार के अनगिनत नये अवसर, आजादी के इतने सालों के बाद भी नहीं आए थे, वो आज उनके दरवाजे पर दस्तक दे रहे हैं। संभावनाएं बढ़ती गई हैं। नये मौके बन रहे हैं। मेरे देश के युवाओं को अब धीरे–धीरे चलने का इरादा नहीं है। मेरे देश का नौजवान incremental प्रगति में विश्वास नहीं करता। मेरा देश का नौजवान छलांग मारने के मूड में है। वो छलांग मार करके नई सिद्धियों को प्राप्त करने के मूड में है। मैं कहना चाहूंगा भारत के लिए Golden Era है। वैश्विक परिस्थितयों की तुलना में भी देखें यह Golden Era है, यह हमारा स्वर्णिम कालखंड है।

मेरे प्यारे देशवासियों, यह अवसर हमें जाने नहीं देना, यह मौका हमें जाने नहीं देना चाहिए और इसी मौके को पकड़ करके अपने सपने और संकल्पों को ले करके चल पड़ेंगे तो हम देश की स्वर्णिम भारत की जो अपेक्षा और हमें विकसित भारत का 2047 का लक्ष्य हम पूरा करके रहेंगे। हम सदियों की बेड़ियों को तोड़ करके निकले हैं।

आज Tourism का क्षेत्र हो, MSMEs का क्षेत्र हो, Education हो, Health sector हो, Transport sector हो, खेती और किसानी का सेक्टर हो, हर सेक्टर में एक नया आधुनिक सिस्टम बन रहा है। हम विश्व की इमेज practices को भी आगे रखते हुए हम हमारे देश की परिस्थितियों के अनुसार आगे बढ़ना चाहते हैं। हर सेक्टर में आधुनिकता की जरूरत है, नयेपन की जरूरत है। टेक्नोलॉजी को जोड़ने की जरूरत है। और हर सेक्टर में हमारी नई नीतियों के कारण इन सारे क्षेत्रों में एक नया support मिल रहा है, नयी ताकत मिल रही है। हमारे सारे अवरोध हटे, हमारी मंदी से दूर हो, हम पूरे सार्मथ्य के साथ चल पड़े, खिल उठे, सपनों को पा करके रहे, सिद्धि को हम अपने निकट देखें, हम आत्मसात करें उस दिशा में हमने चलना हैं। अब आप देखिए, कितना बड़ा बदलाव आ रहा है।

मैं एकदम ज़मीनी स्तर की बात कर रहा हूं, women self help group, आज दस साल में हमारी 10 करोड़ बहनें women self help group में जुड़ी हैं, 10 करोड़ नई बहनें। हमें गर्व हो रहा है कि हमारे सामान्य परिवार की गांव की 10 करोड़ महिलाएं आर्थिक रूप से आत्म निर्भर बन रही हैं और जब महिलाएं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनती हैं तब परिवार की निर्णय प्रक्रिया की हिस्सेदार बनती हैं, एक बहुत बड़े सामाजिक परिवर्तन की गारंटी ले करके आती हैं।

आज विश्व में युवाओं के लिए संभावना के द्वार खुले हैं। रोजगार के अनगिनत नये अवसर, आजादी के इतने सालों के बाद भी नहीं आए थे, वो आज उनके दरवाजे पर दस्तक दे रहे हैं। संभावनाएं बढ़ती गयी हैं। नये मौके बन रहे हैं।

हमारे लिए खुशी की बात है कि एक तरफ मेरे C-E-O- दुनियाभर में नाम कमा रहे हैं, भारत का नाम बना रहे हैं तो दूसरी तरफ women self help groups से एक करोड़ मेरी सामान्य परिवार की माताएं–बहनें लखपति दीदी बनती हैं, मेरे लिए ये भी उतनी ही गर्व की बात है। अब हमने self help group को 10 लाख रुपये से 20 लाख रुपये देने का निर्णय किया है। अब तक 9 लाख करोड़ रुपये बैंकों के माध्यतम से हमारे इन women self help groups को मिले हैं और जिसकी मदद से वो अपने अनेक विद् कामों को बढ़ा रहे हैं।

मेरे नौजवान इस तरफ ध्यान दें, स्पेस सेक्टर एक फ्यूचर है हमारे साथ जुड़ा हुआ, एक महत्व पूर्ण पहलू है, हम उस पर भी बल दे रहे हैं। हमने स्पेस सेक्टर में बहुत reform किए हैं। जिन बंधनों में स्पेस सेक्टर को बांध कर रखा था, उसे हमने खोल दिया है। आज सैंकड़ों Startups स्पेस के सेक्टर में आ रहे हैं। Vibrant बनता जाता हमारा स्पेस सेक्टर भारत को एक शक्तिशाली राष्ट्र बनाने का एक महत्वपूर्ण अंग है और हम इसको दूर की सोच के साथ मजबूती दे रहे हैं। आज प्राइवेट सेटेलाइट्स, प्राइवेट रॉकेट लान्च हो रहे हैं, ये गर्व की बात है। आज मैं कह सकता हूं जब नीति सही होती है, नीयत सही होती है और पूर्ण समर्पण से राष्ट्र का कल्याण यही मंत्र होता है तो निश्चित परिणाम हम प्राप्त करके रहते

हैं।

मेरे प्यारे देशवासियों,

आज देश में नए अवसर बनें, तब मैं कह सकता हूं दो चीजें और हों, जिसने विकास को एक गति दी है, विकास को एक नई छलांग दी है और ये है– पहला है आधुनिक इंफ्रास्ट्रिक्चसर का निर्माण। हमने इंफ्रास्ट्रक्चर को आधुनिक बनाने की दिशा में बहुत बड़े कदम उठाए हैं और दूसरी तरफ सामान्य मानवी के जीवन में जो बाधाएं हैं, Ease of living का हमारा जो सपना है, उस पर भी हमने उतना ही बल दिया है।

पिछले एक दशक में अभूतपूर्व इंफ्रास्ट्रसक्चर का विकास हुआ है। रेल हो, रोड हो, एयरपोर्ट हो, पोर्ट हो, broadband connectivity हो, गांव–गांव नए स्कूल बनाने की बात हो, जंगलों में स्कूल बनाने की बात हो, दूर–सुदूर इलाकों में अस्पताल बनाने की बात हो, आरोग्य मंदिर बनाने की बात हो, मेडिकल कॉलेजों का काम हो, आयुष्मान आरोग्य मंदिरों का निर्माण चलता हो, 60 हजार से ज्यादा अमृत सरोवर बने हों, दो लाख पंचायतों तक Optical fiber network पहुंचा हो, नहरों का एक बहुत बड़ा जाल बिछाया जा रहा हो, चार करोड़ पक्के घर बनना, गरीबों को एक नया आश्रय मिलना, तीन करोड़ नए घर बनाने के संकल्प के साथ आगे बढ़ने की हमारी कोशिश हो।

हमारा पूर्वी भारत–नॉर्थ ईस्ट उसका इलाका आज इंफ्रास्ट्राक्चर के लिए जाना जाने लगा है और हमने ये जो कायाकल्प किया है, उसका सबसे बड़ा लाभ समाज के उन वर्गों तक हम पहुंचे हैं, जब ग्रामीण सड़कें वहां बनी हैं, जिनकी तरफ कोई देखता नहीं था, जिन इलाकों को नहीं देखता था, जिन गांवों को नहीं देखता था। दलित हो, पीड़ित हो, शोषित हो, वंचित हो, पिछड़े हों, आदिवासी हों, जंगल में रहने वाले हों, दूर–सदूर पहाड़ों में रहने वाले हों, सीमावर्ती स्थाान पर रहने वाले हों, हमने उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति की है।

हमारे मछुआरे भाई–बहनों की आवश्यकताओं को पूरा करना, हमारे पशुपालकों के जीवन को बदलना, एक प्रकार से सर्वांगीण विकास का प्रयास हमारी नीतियों में रहा, हमारी नियत में रहा है, हमारे Reforms में रहा है, हमारे कार्यक्रमों में रहा है, हमारी कार्यशैली में रहा है। हमारे मछुवारे भाई बहनों की आवश्यकताओं को पूरा करना, हमारे पशुपालकों के जीवन को बदलना, एक प्रकार से सर्वांगीण विकास का प्रयास, हमारी नीतियों में रहा, हमारी नियत में रहा है, हमारे रिफॉर्म में रहा है, हमारे कार्यक्रमों में रहा है, हमारी कार्यशैली में रहा है और उन सबसे, सबसे बड़ा लाभ मेरे युवाओं को मिलता है। उनको नए–नए अवसर मिलते हैं, नए–नए क्षेत्र में कदम रखने का उसके लिए संभावनाएं बन जाती है और वही तो सबसे ज्याेदा रोजगार दे रहा है और सबसे ज्याकदा रोजगार प्राप्त करने का अवसर इन्हीं समय में उनको मिला है।

हमारा जो मध्यम वर्गीय परिवार है, मध्यम वर्गीय परिवार को Quality of Life, वो स्वाभाविक उसकी अपेक्षा रहती है। वो देश के लिए बहुत देता है, तो देश का भी दायित्वय है कि उसकी जो Quality of Life में उसकी जो अपेक्षाएं हैं, सरकार की कठिनाईयों से मुक्ति की उसकी जो अपेक्षाएं हैं उसको पूर्ण करने के लिए हम निरंतर प्रयास करते हैं और मैंने तो सपना देखा है कि 2047 जब विकसित भारत का सपना होगा, तो उसकी एक ईकाई ये भी होगी कि सामान्य मानवीय के जीवन में सरकार की दखलें कम हों। जहां सरकार की जरुरत हो वहां आभाव न हो और जहां सरकार की देर के कारण प्रभाव भी न हो, इस प्रकार की व्यवस्था पर हम प्रतिबंधित हैं।

मेरे प्यारे देशवासियों,

हम छोटी–छोटी जरुरतों पर भी ध्यान देते हैं। हम छोटी–छोटी आवश्यकताओं पर ध्या न देते हैं और उसको लेकर के हम चलते हैं। चाहे हमारे गरीब के घर का चूल्हा जलता रहे, गरीब की मां कभी आंसू पी करके सोना न पड़े और इसके लिए मुफ्त इलाज की योजना हमारी चल रही है। बिजली, पानी, गैस, अब सैच्युसरेशन के मोड पर हैं और जब हम सैच्यू रेशन की बात करते हैं तो शत–प्रतिशत होता है। जब सैच्यूसरेशन होता है, तो उसको जातिवाद का रंग नहीं लगता है। जब सैच्यूबरेशन होता है, तो उसमें वामपंथिकता का रंग नहीं लगता है। जब सैच्यू रेशन का मंत्र होता है, तब सच्चे– अर्थ में सबका साथ, सबका विकास का मंत्र साकार होता है।

जब सैच्यूबरेशन होता है, तो उसमें वामपंथिकता का रंग नहीं लगता है। जब सैच्यू रेशन का मंत्र होता है, तब सच्चे-अर्थ में सबका साथ, सबका विकास का मंत्र साकार होता है।

लोगों के जीवन में सरकार की दखल कम हो, उस दिशा में हमने, हजारों compliances के लिए सरकार सामान्ये मानवीय पर बोझ डालती थी, हमने देशवासियों के लिए डेढ़ हजार से ज्याादा कानूनों को खत्मर कर दिया ताकि कानूनों के जंजाल कें अंदर देशवासियों को फंसना न पड़े। हमने छोटी–छोटी गलतियों के कारण ऐसे कानून बने थे, उनको जेल में अंदर ढकेल दिया जाए। हमने उन छोटे–छोटे कारणों से जेल जाने की जो परंपराएं थीं, उन सारे कानूनों को नष्ट कर दिया और उसको कानूनों को जेल भेजने के प्रावधान को व्यपवस्थाक से बाहर कर दिया है। आज हमने जो आजादी के विरासत के गर्व की जो हम बात करते हैं, सदियों से हमारे पास जो क्रिमिनल लॉ थे, आज हमने उसको नए क्रिमिनल लॉ जिसको हमने न्या य संहिता के रूप में और जिसके मूल में दंड नहीं तो नागरिक को न्या य इस भाव को

हमने प्रबल बनाया है।

Ease of Living बनाने में देशव्यापी मिशन में हम काम कर रहे हैं। हर लेवल पर मैं सरकार के प्रति इन चीजों का आह्वान करता हूं। मैं जन–प्रतिनिधि वो किसी भी दल के क्यों न हो, किसी भी राज्य के क्यों न हो सबसे आग्रह करता हूं कि हमने एक मिशन मोड में Ease of Living के लिए कदम उठाने चाहिए। मैं हमारे युवाओं को, Professionals को, सबको मैं कहना चाहता हूं, आप अपने स्थायन पर जहां पर आपको छोटी–छोटी दिक्कत्तें होती हैं आप उसको solutions को लेकर के सरकार को चिट्ठी लिखते रहिए। सरकार को बताइए कि बिना कारण की कठिनाई आए, उसको दूर करने से कोई नुकसान नहीं है, मैं पक्कार मानता हूं आज सरकारें संवेदनशील हैं। हर सरकार स्थानीय स्वराज की सरकार होगी या राज्य सरकार होगी या केंद्र सरकार होगी, उसको तवज्जों देगी।

Governance में Reforms, ये हमें विकसित भारत/2047 के सपने के लिए हमने उसको जोर लगाकर के आगे बढ़ाना होगा ताकि सामान्य मानवीय के जीवन में अवसर ही अवसर पैदा हों, रुकावटें खत्म ही खत्म होती चली जाएं। नागरिकों को Dignity of Citizen, नागरिकों के जीवन में सम्मान मिलें, डिलिवरी के संबंध में कभी किसी को ये कहने की नौबत न आए कि ये तो मेरा हक था कि मुझे मिला नहीं, उसको खोजना न पड़े, सरकार के Governance में Delivery System को और मजबूती चाहिए।

आप देखिए देश में जब हम रिफॉर्म की बात करते हैं। आज देश में करीब–करीब तीन लाख संस्थाएं काम कर रही हैं। चाहे पंचायत हो, नगर पंचायत हो, नगर पालिका हो, महानगर पालिका हो, UT हो, State हो, District हो, केंद्र हो, छोटी–मोटी तीन लाख करीब–करीब इकाइयां हैं। अगर ये हमारे तीन लाख इकाईयों का मैं आज आह्वान करता हूं कि अगर आप साल में अपने स्तर पर जिन चीजों की जरूरत है सामान्य मानवीय के लिए, दो रिफार्म करें, ज्यादा नहीं कह रहा हूं मेरे साथियों। एक पंचायत हो, एक राज्य सरकार हो, कोई विभाग हो, सिर्फ एक साल में दो रिफार्म और उसको जमीन पर उतारें। आप देखिए हम देखते ही देखते एक साल में करीब–करीब 25–30 लाख रिफार्म कर सकते हैं। जब 25–30 लाख रिफार्म हो जाएं तब सामान्य मानवीय का विश्वास कितना बढ़ जाएगा। उसकी शक्ति राष्ट्र को नई ऊंचाई पर ले जाने में कितनी काम आएगी और इसलिए हम अपने स्तर पर होती है, चलती से मुक्ति पाकर के बदलावों के लिए आगे आएं, हिम्मत के साथ आगे आएं और सामान्य मानवीय की जरूरत तो छोटी–छोटी जरूरत होती है, पंचायत लेवल पर भी वो मुसीबतें झेल रहा है। उन मुसीबतों से मुक्ति दिलाएं तो मुझे पक्का विश्वास है कि हम सपनों को पार कर सकते हैं।

मेरे प्यारे देशवासियों,

आज देश आकांक्षाओं से भरा हुआ है। हमारे देश का नौजवान नई सिद्धियों को चूमना चाहता है। नए–नए शिखरों पर वो कदम रखना चाहता है और इसलिए हमारी कोशिश है हर सेक्टर में कार्य को हम गति दें, तेज गति दें और उसके द्वारा पहले हम हर सेक्टर में नए अवसर पैदा करें। दूसरा ये बदलती हुई व्यवस्थाओं के लिए ये जो supportive infrastructure चाहिए। उन infrastructure पर हम बदलाव के मजबूती देने की दिशा में काम करें और तीसरी बात है नागरिकों की मूलभूत सुविधाओं के विषय में हम प्राथमिकता दें, उसको बल दें। इन तीनों ने भारत में एक Aspirational Society का निर्माण किया है और उसके परिणाम स्वरूप आज समाज खुद एक विश्वास से भरा हुआ है। हमारे देशवासियों की आकांक्षाएं उनके aspirations, हमारे नौजवानों की ऊर्जा, हमारे देश के सामर्थ्य के साथ जोड़कर के, हम आगे बढ़ने के, एक ललक लेकर के चल रहे हैं।

आज देश आकांक्षाओं से भरा हुआ है। हमारे देश का नौजवान न सिद्धियों को चूमना चाहता है। नए-नए शिखरों पर वो कदम रखना चाहता है और इसलिए हमारी कोशिश है हर सेक्टर में कार्य को हम गति दें, तेज गति दें और उसके द्वारा पहले हम हर सेक्टर में नए अवसर पैदा करें।

मुझे विश्वास है रोजगार और स्वरोजगार नए रिकॉर्ड के अवसर पर हमने काम किया है। प्रति व्यक्ति आज आय दोगुनी करने में हम सफल हुए हैं। Global growth में भारत का योगदान बड़ा है। भारत का एक्सपोर्ट लगातार बढ़ रहा है। विदेशी मुद्रा भंडार लगातार बढ़ा हुआ है, पहले से दो गुना पहुंचा है। ग्लोबल संस्थानों का भारत के प्रति भरोसा बढ़ा है। मुझे विश्वास है भारत की दिशा सही है, भारत की गति तेज है और भारत के सपनों में सामर्थ्य है। लेकिन इन सबके साथ संवेदनशीलता का हमारा मार्ग हमारे लिए ऊर्जा में एक नई चेतना भरता है। ममभाव हमारे कार्य की शैली है। समभाव भी चाहिए और ममभाव भी चाहिए, उसको लेकर के हम चल रहे हैं।

आज नई शिक्षा नीति में कई राज्यों ने अच्छे initiatives लिए हैं और उसके कारण आज एक 21वीं सदी के अनुरूप हमारी शिक्षा व्यवस्था को जो हम बल देना चाहते हैं। और विकसित भारत के सपने के लिए जिस प्रकार से मानव समूह तैयार करना चाहते हैं, नई शिक्षा नीति की बहुत बड़ी भूमिका है। मैं नहीं चाहता हूं कि मेरे देश के नौजवानों को अब विदेशों में पढ़ने के लिए मजबूर होना पड़े। मध्यमवर्गीय परिवार का लाखों–करोड़ो रूपया बच्चों को विदेश पढ़ने के लिए भेजने में खर्च हो जाए। हम यहां ऐसी शिक्षा व्यवस्था को विकसित

करना चाहते हैं कि मेरे देश के नौजवानों को विदेश जाना न पड़े। मेरे मध्यमवर्गीय परिवारों को लाखों–करोड़ों रुपया खर्च न करना पड़ें, इतना ही नहीं, ऐसे संस्थानों का निर्माण हो ताकि विदेशों से भारत के अंदर उनका मुंह मोड़े।

अभी–अभी हमने बिहार का हमारा गौरवपूर्ण इतिहास रहा है। नालंदा यूनिवर्सिटी का पुनर्निर्माण किया है। फिर से एक बार नालंदा यूनिवर्सिटी ने काम करना शुरू कर दिया है, लेकिन हमें शिक्षा के क्षेत्र में फिर से एक बार सदियों पुराने उस नालंदा स्पिरिट को जगाना होगा, उस नालंदा स्पिरिट को जीना होगा, उस नालंदा स्पिरिट को ले करके बड़े विश्वास के साथ विश्व, की ज्ञान की परंपराओं को नई चेतना देने का काम हमें करना होगा। मुझे पक्का विश्वास है कि नई शिक्षा नीति ने मातृभाषा पर बल दिया है। मैं राज्य सरकारों से कहूंगा, मैं देश की सभी संस्थानों से कहूंगा कि भाषा के कारण हमारे देश के टैलेंट को रूकावट नहीं आनी चाहिए। भाषा अवरूद्ध नहीं होनी चाहिए। मातृभाषा का सामर्थ्य हमारे देश के छोटे–छोटे, गरीब से गरीब मां के बेटे को भी सपने पूरा करने का ताकत देती है और इसलिए हमने हमारी मातृभाषा में पढ़ाई, जीवन में मातृभाषा का स्थान, परिवार में मातृभाषा का स्थान उसकी ओर हमें बल देना होगा।

जिस प्रकार से आज विश्व में बदलाव नजर आ रहा है और तब जा करके skill का महत्व बहुत बढ़ गया है। और हम skill को और एक नई ताकत देना चाहते हैं। हम Industry 4-O को ध्यान में रख करके हम skill development चाहते हैं। हम जीवन के हर क्षेत्र में, हम Agriculture Sector में भी capacity building करने के लिए skill development चाहते हैं। हम तो हमारा सफाई का क्षेत्र हो उसमें भी एक नई skill development की ओर बल देना चाहते हैं। और हम Skill India Programme को बहुत व्यापक रूप से इस बार ले करके आए हैं। बजट में भी इसका बहुत बड़ा, इस बजट में internship पर भी हमने बल दिया है, ताकि हमारे नौजवानों को एक experience मिले, उनकी capacity building हो, और बाजार में उनकी ताकत दिखाई दें, उस प्रकार से मैं Skilled युवाओं को तैयार करना चाहता हूं। और दोस्तो, आज विश्व की परिस्थितियों को देखते हुए मैं साफ–साफ देख रहा हूं कि भारत का Skilled manpower जो है, हमारे Skillful जो नौजवान हैं, वो ग्लोबल जॉब मार्केट में अपनी धमक बनाएं, हम उस सपने को ले करके आगे चल रहे हैं।

विश्वो जिस तेजी से बदल रहा है, जीवन के हर क्षेत्र में Science और Technology का महात्मय बढ़ता चला जा रहा है। हमें Science पर बहुत बल देने की आवश्यकता है। और मैंने देखा चंद्रयान की सफलता के बाद हमारे स्कूंल, कॉलेज के अंदर Science और Technology के प्रति एक नई रूचि का वातावरण बना है, नई दिलचस्पी् बढ़ी है। तब हमारे शिक्षा संस्थानों ने, यह जो मनोभाव बना है उसको नरचर करने के लिए आगे आना होगा। भारत सरकार ने भी रिसर्च के लिए support बढ़ा दिया है। हमने ज्यादा से ज्यादा चेयर्स स्थापित किये हैं। हमने National Research Foundation बना करके हमने उसको एक कानूनी परिवेश में ला करके स्थायी रूप से एक व्यवस्था विकसित की है, ताकि research को ले करके निरंतरबल मिले और यह research foundation उस काम को करें। बड़े गर्व की बात है कि बजट में हमने एक लाख करोड़ रुपया research और innovation के लिए हमने देने का निर्णय किया है, ताकि हमारे देश के नौजवान के पास जो पकमें हैं, उस पकमें को हम जमीन पर उतार पाएं।

आज भी हमारे देश में Medical Education के लिए हमारे बच्चे बाहर जा रहे हैं। वो ज्यादातर मध्यम वर्ग परिवार के हैं। उनके लाखों–करोड़ों रुपये खर्च हो जाते हैं और तब जा करके हमने पिछले 10 साल में Medical सीटों को करीब–करीब एक लाख कर दिया है। करीब–करीब 25 हजार युवा हर साल विदेश में Medical Education के लिए जाते हैं। और ऐसे–ऐसे देश में जाना पड़ रहा है, कभी–कभी तो मैं सुनता हूं तो हैरान हो जाता हूं और इसलिए हमने तय किया है कि अगले 5 साल में, Medical line में 75 हजार नई सीटें बनाई जाएंगी।

नई शिक्षा नीति की बहुत बड़ी भूमिका है। मैं नहीं चाहता हूं कि मेरे देश के नौजवानों को अब विदेशों में पढ़ने के लिए मजबूर होना पड़े।

मेरे प्याईरे देशवासियों,

विकसित भारत 2047, वो स्वस्थ भारत भी होना चाहिए और जब स्वस्थ भारत हो तो आज जो बच्चे हैं, उनके पोषण पर आज से ही ध्यान देने की जरूरत है। और इसलिए हमने विकसित भारत की जो पहली पीढ़ी है, उनकी तरफ विशेष ध्योन दे करके हमने पोषण का एक अभियान चलाया है। हमने राष्ट्रीय पोषण मिशन शुरू किया है, पोषण को हमने प्राथमिकता दी है।

मेरे प्यारे देशवासियों,

हमारी कृषि व्यवस्था को transform करना बहुत जरूरी है, समय की मांग है। हम सदियों से जिस परम्परा में दबे हुए हैं, जकड़े हुए हैं, उससे मुक्ति पानी होगी और हमारे किसानों को उसके लिए हम मदद भी दे रहे हैं। हम उसको transform करने की दिशा में लगातार काम करते आए हैं। आज आसान ऋण दे रहे हैं किसानों को, टेक्नोलॉजी की मदद दे रहे हैं। किसान जो पैदावार करता है उसको Value Addition के लिए हम काम कर रहे हैं। उसके लिए मार्केटिंग के लिए पूरा प्रबंध करते हैं ताकि उसको End to End हर जगह पर पर Hand Holding की व्यावस्था हो, उस दिशा में हम काम कर रहे हैं।

आज जब धरती माता के प्रति सारा विश्व चिंतित है, जिस

प्रकार से उर्वरक के कारण हमारी धरती माता की सेहत दिनोंदिन बिगड़ती जा रही है, हमारी धरती माता की उत्पादकता क्षमता खत्म होती चली जा रही है, कम होती चली जा रही है, और उस समय मैं मेरे देश के लाखों किसानों का आभार व्यक्त करना चाहता हूं, जिन्होंने प्राकृतिक खेती का रास्ता चुना है और हमारी धरती माता की भी सेवा करने का उन्होंने बीड़ा उठाया है। और इस बार बजट में भी हमने प्राकृतिक खेती को बल देने के लिए बहुत बड़ी योजनाओं के साथ बहुत बड़ा बजट में प्रावधान किया है।

मेरे प्यारे देशवासियों,

आज दुनिया की स्थिति मैं देखता हूं, पूरा विश्व Holistic Health Care की तरफ मुड़ रहा है और तब उनको Organic Food जो उनकी प्रथम पसंद बनी है, आज विश्व के लिए Organic Food का अगर कोई Food Basket बन सकता है तो मेरे देश का किसान बना सकता है, मेरा देश बन सकता है। और इसलिए हम आने वाले दिनों में उस सपने को ले करके आगे चलना चाहते हैं ताकि Organic Food की जो विश्व की मांग है और Organic Food का Basket हमारा देश कैसे बने।

हमारी धरती माता की उत्पादकता क्षमता खत्म होती चली जा रही है, कम होती चली जा रही है, और उस समय मैं मेरे देश के लाखों किसानों का आभार व्यक्त करना चाहता हूं, जिन्होंने प्राकृतिक खेती का रास्ता चुना है और हमारी धरती माता की भी सेवा करने का उन्होंने बीड़ा उठाया है।

किसानों का जीवन आसान बने, गांव में Top Class Internet Connectivity मिले, किसानों को स्वाकस्थ्उन सुविधाएं मिलें, किसान के बच्चों को पढ़ने के लिए स्मार्ट स्कूल available हो, किसान के बच्चों को रोजगार उपलब्ध हो। छोटे–छोटे खेती के टुकड़ों पर पूरा परिवार आज जीना बड़ा मुश्किल हो रहा है, तब उनके नौजवानों के लिए वो स्किल मिले ताकि उनको नए रोजगार मिलें, नए आय के साधन बनें, इसका एक Comprehensive प्रयास हम कर रहे हैं।

बीते वर्षों में Women led development Model पर हमने काम किया है। Innovation हो, Employment हो, Entrepreneurship हो, हर सेक्टर में महिलाओं के कदम बढ़ते जा रहे हैं। महिलाएं सिर्फ भागीदारी बढ़ा रही हैं ऐसा नहीं है, महिलाएं नेतृत्व दे रही हैं। आज अनेक क्षेत्रों में, आज हमारे रक्षा क्षेत्र में देखिए हमारा एयरफोर्स हो, हमारी आर्मी हो, हमारी नेवी हो, हमारा स्पेंस सेक्टर हो, आज हमारी महिलाओं का हम दमखम देख रहे हैं, देश के लिए। लेकिन दूसरी तरफ कुछ चिंता की बातें भी आती हैं और मैं आज लाल किले से फिर से एक बार अपनी पीड़ा व्यक्त करना चाहता हूँ। एक समाज के नाते, हमे गंभीरता से सोचना होगा कि हमारी माताओं–बहनों बेटियों के प्रति जो अत्याचार हो रहे हैं, उसके प्रति देश का आक्रोश है। जन सामान्य का आक्रोश है। इस आक्रोश को मैं महसूस कर रहा हूं। इसको देश को, समाज को, हमारी राज्य सरकारों को गंभीरता से लेना होगा। महिलाओं के विरुद्ध अपराधों की जल्द से जल्द जांच हो। राक्षसी कृत्य् करने वालों को जल्द से जल्द कड़ी सजा हो, वो समाज में विश्वास पैदा करने के लिए जरुरी है। मैं ये भी बताना चाहूँगा कि जब बलात्कार की महिलाओं पर अत्याचार की घटनाएं घटती हैं तो उसकी बहुत चर्चा होती है, बहुत प्रचार होता है, मीडिया में छाया रहता है। लेकिन जब ऐसे राक्षसी मनोवृत्ति व्यक्ति को सजा होती है, तो वो खबरों में कहीं नजर नहीं आती है, एक कोने में कहीं पड़ा रहता है। अब समय की मांग है कि जिनको सजा होती है उसकी व्यापक चर्चा हो ताकि ऐसा पाप करने वालों को भी डर पैदा हो कि ये पाप करने की हालत ये होती है कि फांसी पर लटकना पड़ता है और मुझे लगता है कि ये डर पैदा करना बहुत जरुरी है।

हमारे देश में ऐसी एक आदत बन गई थी स्वभाव से हम देश को कम आंकना, देश के प्रति गौरव के भाव का अभाव होना, ये पता नहीं क्यों हमारे जेहन में घुस गया था। और हम तो कभी कभी तो लेट आए तो कहते थे Indian Sign, शर्म के साथ हम बोल देते थे। देश को इन चीजों से हमने बाहर लाने में सफलता पाई है। किसी जमाने में कहा जाता था अरे खिलौने भी बाहर से आते थे, वो दिन देखे हमने। आज मैं गर्व से कह सकता हूं कि मेरे देश के खिलौने इस दुनिया के बाजार में अपनी धमक लेकर के पहुंच रहे हैं। खिलौने हमारे एक्सरपोर्ट होने शुरू हुए हैं। कोई एक जमाना था, हम मोबाइल फोन इम्पोर्ट करते थे, आज मोबाइल फोन के Manufacturing का Ecosystem बना है, एक बहुत बड़ा हब बना है और आज हम मोबाइल फोन दुनिया में एक्सपोर्ट करने लगे हैं। ये भारत की ताकत है।

आज विश्व की बहुत बड़ी कंपनियां भारत में निवेश करना चाहती हैं। ये चुनाव के बाद मैंने देखा है, मेरे तीसरे कार्यकाल में जितने लोग मुझसे मिलने के लिए मांग कर रहे हैं वो ज्यादातर निवेशक लोग हैं। विश्वभर के निवेशक हैं, वो आना चाहते हैं, भारत में निवेश करना चाहते हैं। ये एक बहुत बड़ी golden opportunity है। मैं राज्य सरकारों से आग्रह करता हूं कि आप निवेशकों को आकर्षित करने के लिए स्पष्ट नीति निर्धारित कीजिए। Good Governance का आश्वासन दीजिए, Law & Order situation के लिए उनको

भरोसा दीजिए। हर राज्य एक तंदुरुस्त स्पर्धा में आगे आएं। राज्य–राज्य के बीच निवेशकों को खींचने के लिए स्पर्धा होनी चाहिए निवेशकों के लिए, ताकि उनके राज्य में निवेशक आएंगे उनके राज्य के नौजवानों को स्थानीय रूप से अवसर मिलेगा, रोजगार का अवसर मिलेगा।

मैं देख रहा हूं gaming की दुनिया का बहुत बड़ा मार्केट खड़ा हुआ है। लेकिन आज भी gaming की दुनिया पर प्रभाव, खासकर के उन खेलों को बनाने वाले लोग, product करने वाले लोग विदेश से कमाई होती है। भारत के पास बहुत बड़ी विरासत है। हम gaming की दुनिया में बहुत नई talent को लेकर के आ सकते हैं। विश्व के हर बच्चे को हमारे देश की बनी हुई gaming की ओर आकर्षित कर सकते हैं। मैं चाहता हूं कि भारत के बच्चे, भारत के नौजवान, भारत के IT professionals भारत के AI ds professionals, वे gaming की दुनिया को लीड करें। खेलने में नहीं, गेमिंग की दुनिया में हमारे प्रोडक्ट पूरे विश्व में पहुंचने चाहिए। और पूरी दुनिया में हमारे animators काम कर सकते हैं। Animation की दुनिया में हम अपनी धाक जमा सकते हैं, हम उसी दिशा में काम करें।

आज विश्व के अंदर global warming, climate change हर क्षेत्र में चिंता और चर्चा का विषय रहता है। भारत ने उस दिशा में काफी कदम उठाए हैं। हम विश्व को आश्वस्त करते रहे हैं और शब्दों से नहीं अपने कार्यों से, प्राप्त परिणामों से हमने विश्व को आश्वस्त भी किया है और विश्व को आश्चर्य चकित भी किया है। हम ही हैं, जिन्होंने single use plastic पर प्रतिबंध लगाया है। हमने renewable energy पर विस्तार किया है, हमने renewable energy को एक नई ताकत दी है। आने वाले कुछ वर्षों में हम net zero future की ओर आगे बढ़ रहे हैं। मुझे याद है Paris Accord में जिन देशों ने अपने लक्ष्य निर्धारित किए थे, आज मैं लाल किले की प्राचीर से मेरे देशवासियों की ताकत दुनिया को बताना चाहता हूं। G–20 देश के समूह जो नहीं कर पाए वो मेरे देश के नागरिकों ने करके दिखाया है, मेरे देशवासियों ने करके दिखाया है, हिन्दुस्तान ने करके दिखाया है। Paris Accord के अंदर जो टारगेट हमने तय किए थे, उन टारगेट को समय से पहले पूरा करने वाला G–20 देशों के समूह में अगर कोई है तो एकमात्र मेरा हिंदुस्तान है, एकमात्र मेरा भारत है। और इसलिए गर्व होता है साथियों renewable energy के टारगेट हमने पूरे किए। हम 2030 तक renewable energy को 500 गीगावॉट तक ले जाने के लिए मकसद से काम कर रहे हैं, आप कल्पना कर सकते हैं कि कितना बड़ा लक्ष्य है। दुनिया के लोग सिर्फ 500 गीगावॉट शब्द सुनते हैं ना तो मेरी तरफ ऐसे–ऐसे देखते हैं। लेकिन आज मैं विश्वास से कह रहा हूं देशवासियों को कि इस लक्ष्य को भी हम पूरा करके रहेंगे। और ये मानवजाति की भी सेवा करेगा, हमारे भविष्य की भी सेवा करेगा, हमारे बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की गारंटी बनेगा। हमने 2030 तक हमारी रेलवे को net zero emission का लक्ष्य लेकर के हम चल रहे हैं।

पीएम सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना उसको एक नई ताकत देने वाली है और ये बदलाव का फल मेरे देश के सामान्य परिवार को मिला है, विशेषकर के मेरे मध्यमवर्ग को मिलेगा, जब उसका बिजली का बिल मुफ्त हो जाएगा। Electrical vehicle, उसकी मांग बढ़ती जा रही है। जब पीएम सूर्यघर योजना से, कोई बिजली उत्पादन करता है सूर्य से तो उसका व्हीकल का प्रवास का खर्चा भी वो कम कर सकता है।

हम Green Hydrogen Mission लेकर के एक global hub बनना चाहते हैं। बहुत तेजी से नीतियां बनाई गई हैं, बहुत तेजी से उसका implementation का काम हो रहा है और भारत green hydrogen एक new energy की दिशा में हम जाना चाहते हैं। और ये सारे जो प्रयास चल रहे हैं climate की चिंता तो है ही है, global warming की चिंता है। लेकिन इसके अंदर green jobs की बहुत बड़ी संभावना है। और इसलिए आने वाले कालखंड में green jobs का महत्व बढ़ता है तो उसको सबसे पहले कैप्चर करने के लिए, मेरे देश के नौजवानों को अवसर देने के लिए और green jobs के लिए एक बहुत बड़े क्षेत्र को बढ़ावा दे रहे हैं।

चुनौतियां हैं, अनगिनत चुनौतियां हैं, चुनौतियां भीतर भी हैं, चुनौतियां बाहर भी हैं और जैसे–जैसे हम ताकतवर बनेंगे, जैसे–जैसे हमारा तवज्जो बढ़ेगा तो चुनौतियां भी बढ़ने वाली हैं। बाहर की चुनौतियां और बढ़ने वाली हैं और मुझे उसका भलीभांति अंदाज है। लेकिन मैं ऐसी शक्तियों को कहना चाहता हूं भारत का विकास किसी के लिए संकट ले करके नहीं आता है। हम विश्व में समृद्ध थे तब भी, हमने कभी दुनिया को युद्ध में नहीं झोंका है। हम बुद्ध का देश हैं, युद्ध हमारी राह नहीं है। और इसलिए विश्व चिंतित न हो, भारत के आगे बढ़ने से मैं विश्व समुदाय को विश्वास दिलाता हूं कि आप भारत के संस्कारों को समझिए, भारत के हजारों साल के इतिहास को समझिए, आप हमें संकट मत मानिए, आप उन तरकीबों से न जुड़िए, जिसके कारण पूरी मानव जाति का कल्याण करने का सामर्थ्य जिस भूमि में है, उस भूमि को ज्यादा मेहनत करनी पड़े। लेकिन फिर भी मैं देशवासियों को कहना चाहता हूं, चुनौतियां कितनी ही क्यों

न हों, चुनौती को चुनौती देना, ये हिन्दुस्तान की फितरत में है। न हम डिगेंगे, न हम थकेंगे, न हम रुकेंगे, न हम झुकेंगे। हम संकल्पों की पूर्ति के लिए 140 करोड़ देशवासियों का भाग्य बदलने के लिए, भाग्य सुनिश्चित करने के लिए, राष्ट्र के सपनों को साकार करने के लिए हम कोई कोर–कसर नहीं छोड़ेंगे। हर बदनीयत वालों को हम हमारी नेकनीयत से जीतेंगे, ये मैं विश्वास देता हूं।

मेरे प्यारे देशवासियों,

समाज की मनोरचना में भी बदलाव कभी–कभी बहुत बड़ी चुनौती का कारण बन जाता है। हमारा हर देशवासी भ्रष्टाचार की दीमक से परेशान रहा है। हर स्तर के भ्रष्टाचार ने सामान्य मानवी का व्यवस्थाओं के प्रति विश्वास तोड़ दिया है। उसको अपनी योग्यता, क्षमता के प्रति अन्याय का जो गुस्सा् होता है, वो राष्ट्र की प्रगति में नुकसान करता है। और इसलिए मैंने व्यापक रूप से भ्रष्टाचार के खिलाफ एक जंग छेड़ी है। मैं जानता हूं, इसकी कीमत मुझे चुकानी पड़ती है, मेरी प्रतिष्ठा को चुकानी पड़ती है, लेकिन राष्ट्र से बड़ी मेरी प्रतिष्ठा नहीं हो सकती है, राष्ट्रा के सपनों से बड़ा मेरा सपना नहीं हो सकता है। और इसलिए ईमानदारी के साथ भ्रष्टाचार के खिलाफ मेरी लड़ाई जारी रहेगी, तीव्र गति से जारी रहेगी और भ्रष्टाचारियों पर कार्रवाई जरूर होगी। मैं भ्रष्टाचारियों के लिए भय का वातावरण पैदा करना चाहता हूं ताकि देश के सामान्य नागरिक को लूटने की जो परम्परा रही है, उस परम्परा को मुझे रोकना है। लेकिन सबसे बड़ी नई चुनौती आई है, भ्रष्टाचारियों से निपटना तो है ही, लेकिन समाज जीवन में उच्च स्तर पर एक जो परिवर्तन आया है वो सबसे बड़ी चुनौती भी है और एक समाज के लिए सबसे बड़ी चिंता भी है। क्या कोई कल्पना कर सकता है कि मेरे ही देश में, इतना महान संविधान हमारे पास होने के बावजूद भी कुछ ऐसे लोग निकल रहे हैं जो भ्रष्टाचार का महिमामंडन कर रहे हैं। खुलेआम भ्रष्टाचार का जय–जयकार कर रहे हैं। समाज में इस प्रकार के बीज बोने का जो प्रयास हो रहा है, भ्रष्टाचार का जो महिमामंडन हो रहा है, भ्रष्टाचारियों की स्वीकार्यता बढ़ाने का जो निरंतर प्रयास चल रहा है, वो स्वस्थ समाज के लिए बहुत बड़ी चुनौती बन गया है, बहुत बड़ी चिंता का विषय बन गया है, बहुत बड़ी चुनौती का विषय बन गया है। भ्रष्टाचारियों के प्रति, समाज में दूरी बना रखने से ही किसी भी भ्रष्टाचारी को उस रास्ते पर जाने से डर लगेगा। अगर उसका महिमामंडन होगा, तो जो आज भ्रष्टाचार नहीं करता है, उसको भी लगता है कि ये तो समाज में प्रतिष्ठा का रंग बन जाता है, उस रास्ते पर जाने में बुरा नहीं है।

भारत का स्वर्णिम कालखंड है 2047 विकसित भारत ये हमारी प्रतीक्षा कर रहा है। बाधाएं, रूकावटें, चुनौतियां, उसको परास्त करके एक दृढ़ संकल्प के साथ ये देश चलने के लिए प्रतिबंद्ध है।

मेरे प्यारे देशवासियों,

बांग्लादेश में जो कुछ भी हुआ है, उसको लेकर पड़ोसी देश के नाते चिंता होना, मैं इसको समझ सकता हूं। मैं आशा करता हूं कि वहां पर हालात जल्द ही सामान्य होंगे। खासकर के 140 करोड़ देशवासियों की चिंता कि वहां हिंदू, वहां के अल्पसंख्यक, उस समुदाय की सुरक्षा सुनिश्चित हो। भारत हमेशा चाहता है कि हमारे पड़ोसी देश सुख और शांति के मार्ग पर चलें। शांति के प्रति हमारा Commitment है, हमारे संस्कार हैं। हम आने वाले दिनों में बांग्ला देश की विकास यात्रा में हमेशा हमारा शुभ चिंतन ही रहेगा क्योंकि हम मानव जाति की भलाई सोचने वाले लोग हैं।

मेरे प्यारे देशवासियों,

जब मैं देश में एक चिंता के बारे में हमेशा कहता हूं परिवारवाद, जातिवाद भारत के लोकतंत्र को बहुत नुकसान कर रहा है। देश को, राजनीति को हमें परिवारवाद और जातिवाद से मुक्ति दिलानी होगी। आज हमने, मैं देख रहा हूं मेरे सामने जो नौजवान हैं उसमें लिखा हुआ है My Bharat जिस संगठन का नाम है उसकी चर्चा लिखी है। बहुत बढ़िया तरीके से लिखा हुआ है। My Bharat के अनेक मिशन हैं। एक मिशन ये भी है कि हम जल्द से जल्द देश में राजनीतिक जीवन में जनप्रतिनिधि के रूप में एक लाख ऐसे नौजवानों को आगे लाना चाहते हैं शुरूआत में, एक लाख ऐसे नौजवानों को आगे लाना चाहते हैं जिनके परिवार में किसी का भी कोई राजनीतिक background न हो। जिसके माता–पिता, भाई–बहन, चाचा, मामा–मामी कभी भी राजनीति में नहीं रहे। किसी भी पीढ़ी में नहीं रहे ऐसे होनहार नौजवानों को fresh blood एक लाख चाहे वो पंचायत में आए, चाहे नगर पालिका में आए, चाहे जिला परिषदों में आए, चाहे विधानसभा में आए, लोकसभा में आए। उनके परिवार का न हो ऐसे fresh लोग राजनीति में आए ताकि जातिवाद से मुक्ति मिले, परिवारवाद से मुक्ति मिले, लोकतंत्र को समृद्धि मिले और जरूरी नहीं है कि एक दल में जाए, उनको जो पसंद हो उस दल में जाए। उस दल में जाकर के वो जनप्रतिनिधि बनकर के आगे आए।

मैं आपके भविष्य के लिए जीता हूं, मैं भारत माता के उज्ज्वल भविष्य के लिए जी रहा हूं और उन सपनों को पूरा करने के लिए आज राष्ट्रध्वज की छाया में, तिरंगे की छाया में दृढ़ संकल्प के साथ हम आगे बढ़े, इसी के साथ मेरे साथ बोलिए– भारत माता की जय।

विकसित भारत के लिए राष्ट्र प्रथम की भावना जरूरी : योगी आदित्यनाथ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर गुरुवार को अपने सरकारी आवास पांच कालिदास मार्ग पर ध्वजारोहण के पश्चात विधान सभा पहुंचे। विधान भवन के भव्य द्वार पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ध्वजारोहण किया। इस अवसर पर शहीदों के परिजनों को सीएम योगी ने सम्मानित किया। लोक नृत्य संगीत का सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए। यूपी, उत्तराखंड, महाराष्ट्र, सिक्किम, जम्मू कश्मीर और मध्यप्रदेश समेत अन्य राज्यों के कलाकारों ने मनमोहक प्रस्तुतियां दीं।

इस मौके पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि हमारा तिरंगा आन बान शान का प्रतीक है। यह वर्ष भारत के लिए ऐतिहासिक है। पीएम मोदी 22 जनवरी को श्रीराम के विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा कर स्थापित किया है। उनके नेतृत्व में बिना भेदभाव के देश के सभी राज्यों का विकास हो रहा है। कभी बीमारू राज्य के रूप में पहचान रखने वाला यूपी 9.2 प्रतिशत जीडीपी के साथ देश मे दूसरी अर्थव्यवस्था बनकर उभरा है। राज्य सरकार पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है। सात वर्ष में 56 लाख से अधिक गरीबों को पीएम आवास दिया गया। दो करोड़ 65 लाख से अधिक जल का कनेक्शन, 15 करोड़ को मुफ्त राशन बांटा जा रहा है। शौचालय बना है, उज्ज्वला गैस कनेक्शन दिया गया है। 100 विकास खंडों को विकास की मुख्य धारा से जोड़ा जा रहा है। योगी ने कहा कि यूपी पीएम मोदी के संकल्पों को दोहराने के लिए तत्पर है। प्रत्येक परिवार को फैमिली आईडी उपलब्ध करा रही है। हमारा युवा प्रतिभाशाली है। उसके लिए शिक्षा और रोजगार पर विशेष प्रयास कर रही है। इस मौके पर नई योजना की घोषणा करते हुए खुशी हो रही है। मुख्यमंत्री युवा उद्यमी योजना के तहत 10 लाख युवाओं को रोजगार मिलेगा। 50 लाख युवाओं के रोजगार के नए सृजन को गति मिलेगी। सात साल साढ़े छह लाख युवाओं को सरकारी नौकरी मिली है। युवाओं को तकनीकी रूप से सक्षम बनाने के लिए दो करोड़ से अधिक टैबलेट बांटे गए हैं। इस साल 20 लाख से अधिक बच्चों ने परिषदीय विद्यालयों में दाखिला लिए हैं।

एक मंडल एक विश्वविद्यालय की संकल्पना साकार हो रही है। अब हम एक जनपद एक विश्वविद्यालय की ओर बढ़ रहे हैं। लखनऊ में अटल बिहारी चिकित्सा विश्वविद्यालय बन कर तैयार है। मेरठ में प्रदेश का पहला खेल विश्वविद्यालय बन रहा है। हमारे अन्नदाता किसानों का ही योगदान है कि यूपी देश मे 20 फीसदी से अधिक खाद्यान्न उपलब्ध करा रहा है। अबतक 31 सिचाई परियोजना पूर्ण हो चुकी है। मुख्यमंत्री योगी ने इसी प्रकार प्रदेश के विकास के बारे में बताते हुए अपनी सरकार की उपलब्धियां गिनाई।

पीएम मोदी के 5 ट्रिलियन डॉलर के लक्ष्य के सात यूपी ने एक ट्रिलियन डॉलर इकोनॉमी का लक्ष्य रखा है। यूपी का निर्यात 86 हजार करोड़ से बढ़कर दो लाख करोड़ पहुंच गया है। बिगत सात साल में 16 लाख करोड़ से अधिक के निवेश प्रस्तावों को धरातल पर उतारा गया है। आज यूपी एक्सप्रेसवे प्रदेश के रूप में पहचान है। जेवर एयरपोर्ट के साथ यूपी पांच अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा वाला देश का इकलौता राज्य बन गया है। पूर्वांचल समेत कई अन्य जिलों में इंसेफेलाइटिस से हजारों। बच्चों की मौत होती थी। आज हमारी सरकार ने इससे होने वाली मौत पर रोक लगा दी है। 2023 में 48 करोड़ पर्यटक यूपी में आये हैं। यह देश में सर्वाधिक है।

सीएम योगी ने कहा कि महाकुम्भ 2025 के लिए राज्य सरकार निरंतर कार्य कर रही है। 2019 के कुम्भ में स्वच्छता को विशेष महत्व दिया गया था। कानून व्यवस्था के बारे में यूपी ने पिछले सात सालों में इतिहास रचा है। आज प्रदेश दंगा मुक्त हैं। अपराधियों पर कड़ी कार्रवाई से माफिया राज समाप्त हुआ है। यूपी के बारे में परसेप्शन बदला है। विकास, सुशासन, कानून व्यवस्था के साथ ही अर्थव्यवस्था पर भी हमारी सरकार कार्य कर रही है। जनता से अपील करते हुए कहा कि छल, कपट और स्वार्थी लोगों से सजग रहना होगा। बंगाल का जिक्र करते हुए कहा कि हमे विभाजनकारी ताकतों को पहचानना होगा। पीएम मोदी का पंच प्रण का आह्वान हमारा मार्गदर्शन करता है। इन संकल्पों की पूर्ति से 2047 में भारत दुनिया की महाशक्ति बनाना है। जब हम आजादी का शताब्दी वर्ष मना रहे होंगे तो विकसित भारत होगा। इसके लिए हम सबको राष्ट्र प्रथम के संकल्प के साथ जुड़ना होगा। आज 78वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर हम सबको संकल्प लेना है। सीएम योगी ने इस अवसर पर शहीदों को नमन भी किया।

सरकार ने समाजिक उत्थान का कार्य किया : भूपेन्द्र

पिछड़ा वर्ग मोर्चा प्रदेश कार्यसमिति बैठक

भारतीय जनता पार्टी पिछड़ा वर्ग मोर्चा की प्रदेश कार्यसमिति की बैठक राजधानी लखनऊ में सम्पन्न हुई। मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ, पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी, उपमुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य व श्री ब्रजेश पाठक, कैबिनेट मंत्री व पूर्व प्रदेश अध्यक्ष श्री स्वतंत्र देव सिंह ने कार्यसमिति की बैठक में उपस्थित प्रतिनिधियों का मार्गदर्शन किया। अध्यक्षता पिछड़ा वर्ग मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेन्द्र कश्यप ने की। इस अवसर पर पार्टी के प्रदेश महामंत्री रामप्रताप सिंह चौहान, पिछड़ा वर्ग मोर्चा के राष्ट्रीय महामंत्री संगम लाल गुप्ता, पिछड़ा वर्ग मोर्चा के प्रदेश महामंत्री विनोद यादव, रामचन्द्र प्रधान व संजय पटेल, प्रदेश उपाध्यक्ष प्रमेन्द्र जागड़ा, प्रदेश मीडिया प्रभारी पिछड़ा वर्ग मोर्चा सौरभ जायसवाल सहित कई अन्य प्रमुख नेता भी उपस्थित रहे।

पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने सोमवार को कांग्रेस और समाजवादी पार्टी को पिछड़ा विरोधी पार्टी बताते हुए कहा कि ये दल परिवारवादी दल है और जब–जब ये दल सत्ता में आये इन्होंने भ्रष्टाचार और परिवारवाद को ही बढ़ावा देने का काम किया है। आजादी के बाद लम्बे टर्म तक सत्ता में रहने के बावजूद कांग्रेस ने ओबीसी समाज के लोगो के कल्याण के लिए कुछ नही किया।

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि मोदी जी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार द्वारा पिछड़ा वर्ग आयोग का गठन किया गया। पिछले 10 वर्षों के केन्द्र के कार्यकाल में मोदी जी के नेतृत्व में और योगी जी के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश सरकार के 7 वर्षों के कार्यकाल में पिछड़े समाज के लोगों के लिए अभूतवपूर्व कार्य किये गये है। उन्होंने कहा कांग्रेस सहित समूचा विपक्ष झूठ और भ्रम के सहारे लगातार समाज को गुमराह करने का काम कर रहा है। हम सबका यह कर्तव्य है कि भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के संकल्प के साथ विपक्ष द्वारा लगातार फैलाये जा रहे झूठ और भ्रम के बारे में सभी लोगो को बताते हुए उन्हें आगाह करें।

श्री चौधरी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व की केंद्र सरकार ने समाज के वंचित, पीड़ित, शोषित वर्गों के आर्थिक व सामाजिक उत्थान का काम किया है। सबका साथ, सबका विकास यही भाजपा सरकार का मूलमंत्र है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में विगत 10 वर्षों में भाजपा सरकार ने न सिर्फ वंचित, शोषित वर्ग को मुख्यधारा से जोड़ा बल्कि उनका सशक्तिकरण भी किया है। केवल भाजपा सरकार ने ही समाज के सभी वर्गों को साथ लेकर चलने का काम किया है। पिछड़ा वर्ग आयोग को मोदी सरकार ने ही संवैधानिक दर्जा देने का काम किया है। मोदी जी के नेतृत्व में तीसरी बार लगातार सरकार बनने के बाद पिछड़ों–वंचितों के सशक्तिकरण के लिए और भी बड़े काम किए जाएँगे।

प्रदेश के उपमुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य ने पिछड़ा वर्ग मोर्चा की प्रदेश कार्यसमिति की बैठक में कहा कि सभी लोग अभी से आगामी विधानसभा के उपचुनाव और 2027 के विधानसभा चुनाव की तैयारियों में विजय संकल्प के साथ जुट जायें। समाजवादी पार्टी समाप्तवादी पार्टी है। सपा प्रमुख कांग्रेस का मोहरा बन चुके है। श्री मौर्य ने कहा उत्तर प्रदेश के

अपराधी, माफियाओं और भ्रष्टाचारियों के सरगना अगर कोई है तो वे अखिलेश यादव एण्ड कम्पनी है। समाजवादी पार्टी का अपराधी माफियाओं से रिश्ता खत्म नही हुआ है। श्री मौर्य कटाक्ष करते हुए कहा कि अगर समाजवादी पार्टी का अपराधी, माफियाओं से रिश्ता खत्म हो जाएगा तो समाजवादी पार्टी स्वयं खत्म हो जाएगी। समाजवादी पार्टी ने लोकसभा चुनाव में बहुत झूठ बोला है। सपा और कांग्रेस ने इतना झूठ और भ्रम फैलाया कि भाजपा संविधान को बदल देगी। कहा कि बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर द्वारा इस देश के दलितो, पिछड़ों व आदिवासियों को तरजीह दी गई है, उसे हम लोग खत्म करने वाले नही बल्कि और मजबूत बनाने वाले है।

प्रदेश के उपमुख्यमंत्री श्री ब्रजेश पाठक ने कहा कि दिन–प्रतिदिन मोदी जी के नेतृत्व में भारत का मान–सम्मान विश्व में बढ़ रहा है। पूरा देश माननीय मोदी जी को अपना नेता मानता है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस और सपा ने मिलकर लोकसभा चुनाव में लोगों को बरगलाने का काम किया। जो संविधान की दुहाई देते है वो संविधान ही कांग्रेस के ही कार्यकाल में आपातकाल लगाकर बदला गया था। भाजपा पिछड़ा वर्ग मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेन्द्र कश्यप ने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में विगत 10 वर्षों में और मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व में विगत 7 वर्षों में उत्तर प्रदेश में सभी क्षेत्रों में पिछड़े, अति पिछड़े वर्ग के लोगो की भागीदारी बढ़ी है। उन्होंने कहा सपा समाजवादी नहीं परिवारवादी पार्टी है, जिसने हमेशा पिछड़ो को धोखा दिया। सपा ने पिछड़ो का वोट तो लिया लेकिन उनके विकास और कल्याण के लिए कोई कार्य नही किया।

पिछले 10 वर्षों की भाजपा की केन्द्र व 7 वर्षों की राज्य सरकार में पिछड़े व अतिपिछड़े समाज के लिए अभूतपूर्व कार्य किए हैं। केन्द्र सरकार में 27 ओ०बी०सी० सांसदों को मंत्री बनाया, जो कुल मन्त्रीमण्डल का 35 प्रतिशत है तथा यू०पी० की कैबिनेट में 23 विधायकों को मंत्री बनाया, जो कुल मन्त्रीमण्डल का 41 प्रतिशत हिस्सा है जो पिछड़ा वर्ग समाज की बड़ी भागीदारी है। पी०एस०यू०एस० केन्द्रीय विश्वविद्यालय सैनिक स्कूल, जे०एन०वी०एस० के साथ कानूनी विश्वविद्यालयों में भी मोदी सरकार ने पिछडा वर्ग समाज को 27 प्रतिशत आरक्षण घोषित करके पिछड़ा वर्ग के प्रतिभाशाली छात्र/छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त किया है। केन्द्र सरकार द्वारा मेडिकल प्रवेश परीक्षा नीट में ओ०बी०सी छात्रों को 27 प्रतिशत आरक्षण का ऐतिहासिक फैसला लिये जाने से ओ०बी०सी० वर्ग के छात्रों की उन्नति का मार्ग प्रशस्त हुआ है। पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति, छात्रों को राष्ट्रीय फैलोशिय एवं विदेशों में अध्ययन हेतु शैक्षिक ऋण सब्सिडी दी जाती है। विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना के तहत ओ०बी०सी० की 18 जातियों को रोजगार के लिए केन्द्र सरकार द्वारा 13 हजार करोड धनराशि प्रदान किये जाने से पिछडा वर्ग को आत्मनिर्भर बनने में सहयोग मिला है, जान्द्र सरकार का यह सराहनीय कदम है।

श्री कश्यप ने कहा कि केन्द्र सरकार द्वारा 50 करोड़ से अधिक जन–धन खाते खोलकर गरीब देशवासियों को बैंकिंग व्यवस्था से सीधे जोड़ने का कार्य किया गया। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा गुण्डाराज समाप्त किया गया तथा कानून व्यवस्था चुस्त–दुरुस्त किया गया। योगी सरकार में वर्ष 2024 व 2025 में ओ०बी०सी० समाज के सशक्त विकास हेतु तकरीबन 2700 करोड़ रूपये की व्यवस्था की गयी है। मा० मुख्यमंत्री, श्री योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व वाली सरकार ओ०बी०सी० छात्र–छात्राओं को शत–प्रतिशत छात्रवृत्ति व शुल्क प्रतिपूर्ति देने में सफल हुई है। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा ओ०बी०सी० के बेरोजगार युवाओं को कम्प्यूटर प्रशिक्षण/ट्रिपल सी. ओ–लेवल को प्रशिक्षित करने के लिए भी 35 करोड की धनराशि की व्यवस्था की गयी है। उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन के तहत 12.15 लाख युवाओं को प्रशिक्षित किया गया, जिनमें 4.13 लाख युवाओं को विभिन्न प्रतिष्ठित कम्पनियों में सेवायोजित कराया गया, जिसमें पिछड़ा वर्ग समाज के युवाओं की संख्या अपेक्षा से कहीं अधिक रही।

छद्म धर्म निरपेक्षता के नाम पर समाज को आपस में लड़ाने की साजिश : योगी

योगी आदित्यनाथ ने कहा कि कालांतर में जिस तरह से विदेशी आक्रांताओं ने हिंदू समाज में फूट डालने का षड्यंत्र रचा था। उसी तरह से विपक्षी दल भी छद्म धर्मनिरपेक्षता के नाम पर हिंदू समाज को आपस में लड़ाने की साजिश रच रहे हैं। ओबीसी समाज में बजरंगबली की शक्ति है, बस उस शक्ति को जगाने की आवश्यकता है। हिंदू समाज को तोड़ने में लगे रावण की लंका के दहन में देरी नहीं लगेगी। उन्होंने कहा कि पिछले साढ़े छः–सात वर्षों में प्रदेश में सरकारी नौकरियों में साढ़े छः लाख भर्तियां हुई हैं, जिसमें 60 प्रतिशत ओबीसी समाज के लोग भर्ती हुए हैं। सपा सरकार में वर्ष 2015–2016 में उत्तर प्रदेश लोक सेवा की आयोग की भर्ती में 86 में से 56 एसडीएम एक ही जाति विशेष के चयनित हुए थे। यह ओबीसी समाज के हितों पर कुठाराघात था। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि बेसिक शिक्षा की 69000 भर्ती पर प्रश्न खड़ा करने वाले लोग समाजवादी पार्टी के वही मोहरें हैं, जिन्होंने 86 में से 56 एक ही परिवार और एक ही समाज के लोगों को भर्ती किया था। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार में बेसिक शिक्षा में 125000 शिक्षकों की भर्ती हुई। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि 69000 भर्ती में अगर 27 प्रतिशत आरक्षण की बात जाए तो 18200 ओबीसी शिक्षकों की भर्ती होती, लेकिन ओबीसी समाज के 31500 शिक्षकों की भर्ती हुई। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि विपक्षी दलों को इस बात की चिंता है कि ओबीसी समाज के युवा अपने बुद्धि और विवेक के बल पर कैसे इतनी अधिक सीटें प्राप्त कर ले रहे हैं। इसलिए वह भर्ती को विवादित करने की साजिश रचते हैं। उन्होंने कहा कि सपा, बसपा और कांग्रेस की सरकार में कांवड़ यात्रा पर प्रतिबंध लगाया गया था। कांवड़ यात्रा केवल शिव भक्तों का मंगलगान ही नहीं है बल्कि इसके साथ रोजगार भी जुड़ा हुआ है। कांवड़ यात्रा से छोटे दुकानदारों और हस्तशिल्पियों का रोजगार भी मिलता है, जिसे पिछली सरकारों ने रोकने का कार्य किया था। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि कांग्रेस ने प्रदेश में 60 और सपा ने चार–चार बार शासन किया, लेकिन इन दलों की सरकारों ने ओडीओपी के लिए कुछ नहीं किया। ओडीओपी से जुड़े हुए हस्तशिलपी ओबीसी समाज से आते हैं। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि जिन लोगों ने ओबीसी समाज की नौकरियों में डकैती डाली, जिन लोगों ने युवाओं का रोजगार छीना और जिन लोगों प्रदेश के सामने पहचान का संकट खड़ा किया, वे लोग आज वह समाज में फूट डालो और राज करो की राजनीति कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि सपा ने ओबीसी समाज के लोगों का रोजगार छीना। वहीं भाजपा ने इस समाज के लोगों को रोजगार उपलब्ध कराया। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार किसानों और बटाईदारों को मुख्यमंत्री कृषक दुर्घटना बीमा के तहत पांच लाख रुपए की धनराशि उपलब्ध करा रही है। कृषि सेक्टर से जुड़े हुए ज्यादातर लोग ओबीसी समाज के आते हैं। योगी ने कहा कि जब समाज विभाजित था, तब अयोध्या में प्रभु श्रीराम, मथुरा में भगवान कृष्ण और काशी में महादेव का मंदिर अपवित्र हुआ। ओबीसी समाज सबसे अधिक गो सेवा करता था। उनसे गायों को छीनकर कसाइयों के हवाले किया जाने लगा, गोकशी होने लगी। आपकी आस्था के साथ खिलवाड़ होने लगा। उन्होंने कहा कि विपक्षी दल अयोध्या, मथुरा, काशी, कांवड़ यात्रा, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, होली, दीपावली, पर्व त्योहार, दंगों और माफिया राज पर बात नहीं करेंगे। ये लोग जाति के नाम पर आपको लड़ाने का कार्य करेंगे। इसके लिए इन्होंने स्मार्ट फोन और सोशल मीडिया को हथियार बनाया है। जिसके माध्यम से ये झूठे वक्तव्य को फैला रहे हैं। इसलिए इनसे सावधान रहने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि डबल इंजन की सरकार ओबीसी के हितों का संरक्षण करने के लिए प्रतिबद्ध है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 2047 तक भारत को दुनिया की सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति बनाने के लिए संकल्पित हैं, जिससे हम सभी को जुड़ने की आवश्यकता है। साथ ही विकसित भारत के संकल्प को साकार करना है।

चराईदेउ मैदाम?

मेरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात' में, अब मैं उस विषय को साझा करना चाहता हूं, जिसे सुनकर हर भारतवासी का सिर गर्व से ऊंचा हो जाएगा। लेकिन इसके बारे में बताने से पहले मैं आपसे एक सवाल करना चाहूंगा। क्या आपने चराई देउ मैदाम का नाम सुना है? अगर नहीं सुना, तो अब आप ये नाम बार–बार सुनेंगे, और बड़े उत्साह से दूसरों को बताएंगे। असम के चराईदेउ मैदाम को UNESCO World Heritage Site में शामिल किया जा रहा है। इस लिस्ट में यह भारत की 43वीं, लेकिन Northeast की पहली साइट होगी।

आपके मन में ये सवाल जरूर आ रहा होगा कि चराईदेउ मैदाम आखिर है क्या, और ये इतना खास क्यों है। चराईदेउ का मतलब है shining city on the hills, यानी पहाड़ी पर एक चमकता शहर। ये अहोम राजवंश की पहली राजधानी थी। अहोम राजवंश के लोग अपने पूर्वजों के शव और उनकी कीमती चीजों को पारंपरिक रूप से मैदाम में रखते थे। मैदाम, टीले नुमा एक ढांचा होता है, जो ऊपर मिट्टी से ढका होता है, और नीचे एक या उससे ज्यादा कमरे होते हैं। ये मैदाम, अहोम साम्राज्य के दिवंगत राजाओं और गणमान्य लोगों के प्रति श्रद्धा का प्रतीक है। अपने पूर्वजों के प्रति सम्मान प्रकट करने का ये तरीका बहुत यूनिक है। इस जगह पर सामुदायिक पूजा भी होती थी।

अहोम साम्राज्य के बारे में दूसरी जानकारियां आपको और हैरान करेंगी। 13वीं शताब्दी के शुरू होकर ये साम्राज्य 19वीं शताब्दी की शुरुआत तक चला। इतने लंबे कालखंड तक एक साम्राज्य का बने रहना बहुत बड़ी बात है। शायद अहोम साम्राज्य के सिद्धांत और विश्वास इतने मजबूत थे, कि उसने इस राजवंश को इतने समय तक कायम रखा। मुझे याद है कि, इसी वर्ष 9 मार्च को मुझे अदम्य साहस और शौर्य के प्रतीक, महान अहोम योद्धा लसित बोरफुकन की सबसे ऊंची प्रतिमा के अनावरण का सौभाग्य मिला था। इस कार्यक्रम के दौरान, अहोम समुदाय आध्यात्मिक परंपरा का पालन करते हुए मुझे अलग ही अनुभव हुआ था। लसित मैदाम में अहोम समुदाय के पूर्वजों को सम्मान देने का सौभाग्य मिलना मेरे लिए बहुत बड़ी बात है। अब चराईदेउ मैदाम के World Heritage Site बनने का मतलब होगा कि यहां पर और अधिक पर्यटक आएंगे। आप भी भविष्य के अपने travel plans में इस site को जरूर शामिल करिएगा।

मन की बात

अपनी संस्कृति पर गौरव करते हुए ही कोई देश आगे बढ़ सकता है। भारत में भी इस तरह के बहुत सारे प्रयास हो रहे हैं। ऐसा ही एक प्रयास है – Project PARI…अब आप परी सुनकर confuse मत होईएगा.. ये परी स्वर्गीय कल्पना से नहीं जुड़ी बल्कि धरती को स्वर्ग बना रही है। PARI यानि Public Art of India, Project PARI, public art को लोकप्रिय बनाने के लिए उभरते कलाकारों को एक मंच पर लाने का बड़ा माध्यम बन रहा है। आप देखते होंगे.. सड़कों के किनारे, दीवारों पर, नदकमतचें में बहुत ही सुंदर paintings बनी हुई दिखती हैं।

ये paintings और ये कलाकृतियाँ यही कलाकार बनाते हैं जो PARI से जुड़े हैं। इससे जहां हमारे सार्वजनिक स्थानों की सुंदरता बढ़ती है, वहीं हमारे Culture को और ज्यादा popular बनाने में भी मदद मिलती है। उदाहरण के लिए, दिल्ली के भारत मंडपम को ही लीजिए। यहां देश भर के अद्‌भुत art works आपको देखने को मिल जाएंगे। दिल्ली में कुछ underpass और flyover पर भी आप ऐसे खूबसूरत Public Art देख सकते हैं। मैं कला और संस्कृति प्रेमियों से आग्रह करूंगा कि वे भी Public Art पर और काम करें। ये हमें अपनी जड़ों पर गर्व करने की सुखद अनुभूति देगा।

मेरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात' में, अब बात, 'रंगों की' – ऐसे रंगों की, जिन्होंने हरियाणा के रोहतक जिले की ढ़ाई–सौ से ज्यादा महिलाओं के जीवन में समृद्धि के रंग भर दिए हैं। हथकरघा उद्योग से जुड़ी ये महिलाएं पहले छोटी–छोटी दुकानें और छोटे–मोटे काम कर गुज़ारा करती थी। लेकिन हर किसी में आगे बढ़ने की इच्छा तो होती ही होती है। इसलिए इन्होंने 'UNNATI Self Help Group' से जुड़ने का फैसला किया, और इस group से जुड़कर, उन्होंने block printing और रंगाई में training हासिल की। कपड़ों पर रंगों का जादू बिखेरने वाली ये महिलाएं आज लाखों रुपए कमा रही हैं। इनके बनाए Bed Cover, साड़ियाँ और दुपट्टों की बाजार में भारी मांग है।

रोहतक की इन महिलाओं की तरह देश के अलग–अलग हिस्सों में कारीगर, Handloom को लोकप्रिय बनाने में जुटी हैं। चाहे ओडिशा की 'संबलपुरी साड़ी' हो, चाहे MP की 'माहेश्वरी साड़ी' हो, महाराष्ट्र की 'पैठाणी' या विदर्भ के 'Hand block prints' हों, चाहे हिमाचल के 'भूट्टिको' के शॉल और ऊनी कपड़े हों, या फिर, जम्मू–कश्मीर के 'कनि' शॉल हों। देश के कोने–कोने में handloom कारीगरों का काम छाया हुआ है और आप ये तो जानते ही होंगे, कुछ ही दिन बाद 7 अगस्त को हम 'National Handloom Day' मनाएंगे। आजकल, जिस तरह handloom उत्पादों ने लोगों के दिलों में अपनी जगह बनाई है, वो वाकई बहुत सफल है, जबरदस्त है। अब तो कई निजी कंपनियां भी AI के माध्यम से handloom उत्पाद और Sustainable Fashion को बढ़ावा दे रही हैं। Kosha AI, Handloom India, D-Junk, Novatax, Brahmaputra Fables, ऐसे कितने ही Start&Up भी handloom उत्पादों को लोकप्रिय बनाने में जुटे हैं। मुझे ये देखकर भी अच्छा लगा कि बहुत से लोग अपने यहाँ के ऐसे local products को popular बनाने में जुटे हैं। आप भी अपने local products को 'हैशटैग माई प्रॉडक्ट माई प्राइड' के नाम से Social Media पर upload करें। आपका ये छोटा सा प्रयास, अनेकों लोगों की जिंदगी बदल देगा।

साथियो, handloom के साथ–साथ मैं खादी की बात भी करना चाहूँगा। आप में से ऐसे कई लोग होंगे जो पहले कभी खादी के उत्पादों का उपयोग नहीं करते थे, लेकिन आज बड़े गर्व से खादी पहनते हैं। मुझे ये बताते हुए भी आनंद आ रहा है – खादी ग्रामोद्योग का कारोबार पहली बार डेढ़ लाख करोड़ रुपए के पार पहुँच गया है। सोचिए, डेढ़ लाख करोड़ रुपए !! और जानते हैं खादी की बिक्री कितनी बढ़ी है? 400% (परसेंट)। खादी की, handloom की, ये बढ़ती हुई बिक्री, बड़ी संख्या में रोजगार के नए अवसर भी बना रही है। इस industry से सबसे ज्यादा महिलाएं जुड़ी हैं, तो सबसे ज्यादा फायदा भी, उन्हीं को हो रहा है। मेरा तो आपसे फिर एक आग्रह है, आपके पास भांति–भांति के वस्त्र होंगे, और आपने, अब तक खादी के वस्त्र नहीं खरीदे, तो, इस साल से शुरू कर लें। अगस्त का महीना आ ही गया है ये आजादी मिलने का महीना है, क्रांति का महीना है। इससे बढ़िया अवसर और क्या होगा – खादी खरीदने के लिए।

मेरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात' में मैंने अक्सर आपसे क्तनहे की चुनौती की चर्चा की है। हर परिवार की ये चिंता होती है कि कहीं उनका बच्चा drugs की चपेट में ना आ जाए। अब ऐसे लोगों की मदद के लिए, सरकार ने एक विशेष केंद्र खोला है, जिसका नाम है – 'मानस'। Drugs के खिलाफ लड़ाई में ये बहुत बड़ा कदम है। कुछ दिन पहले ही 'मानस' की Helpline और Portal को launch किया गया है। सरकार ने एक Toll Free Number '1933' जारी किया है। इस पर call करके कोई भी जरूरी सलाह ले सकता है या फिर rehabilitation से जुड़ी जानकारी ले सकता है। अगर किसी के पास Drugs से जुड़ी कोई दूसरी जानकारी भी है,

तो वो, इसी नंबर पर call करके 'Narcotics Control Bureau' के साथ साझा भी कर सकते हैं। 'मानस' के साथ साझा की गई हर जानकारी गोपनीय रखी जाती है। भारत को 'Drugs free' बनाने में जुटे सभी लोगों से, सभी परिवारों से, सभी संस्थाओं से मेरा आग्रह है कि MANAS Helpline का भरपूर उपयोग करें।

कल दुनियाभर में Tiger Day मनाया जाएगा। भारत में तो Tigers 'बाघ', हमारी संस्कृति का अभिन्न हिस्सा रहा है। हम सब बाघों से जुड़े किस्से–कहानियाँ सुनते हुए ही बड़े हुए हैं। जंगल के आसपास के गाँव में तो हर किसी को पता होता है कि बाघ के साथ तालमेल बिठाकर कैसे रहना है। हमारे देश में ऐसे कई गाँव है, जहां इंसान और बाघ के बीच कभी टकराव की स्थिति नहीं आती। लेकिन जहाँ ऐसी स्थिति आती है, वहाँ भी बाघों के संरक्षण के लिए अभूतपूर्व प्रयास हो रहे हैं। जन–भागीदारी का ऐसा ही एक प्रयास है "कुल्हाड़ी बंद पंचायत" । राजस्थान के रणथंभौर से शुरू हुआ "कुल्हाड़ी बंद पंचायत" अभियान बहुत दिलचस्प है। स्थानीय समुदायों ने स्वयं इस बात की शपथ ली है कि जंगल में कुल्हाड़ी के साथ नहीं जाएंगे और पेड़ नहीं काटेंगे। इस एक फैसले से यहाँ के जंगल, एक बार फिर से हरे–भरे हो रहे हैं, और बाघों के लिए बेहतर वातावरण तैयार हो रहा है।

साथियो, महाराष्ट्र का Tadoba-Andhari Tiger Reserve बाघों के प्रमुख बसेरों में से एक है। यहाँ के स्थानीय समुदायों, विशेषकर गोंड और माना जनजाति के हमारे भाई–बहनों ने Eco-tourism की ओर तेजी से कदम बढ़ाए हैं। उन्होंने जंगल पर अपनी निर्भरता को कम किया है ताकि यहाँ बाघों की गतिविधियाँ बढ़ सके। आपको आंध्र प्रदेश में नल्लामलाई की पहाड़ियों पर रहने वाले 'चेन्चू' जनजाति के प्रयास भी हैरान कर देंगे। उन्होंने Tiger Trackers के तौर पर जंगल में वन्य जीवों के movement की हर जानकारी जमा की। इसके साथ ही, वे, क्षेत्र में, अवैध गतिविधियों की निगरानी भी करते रहे हैं। इसी तरह उत्तर प्रदेश के पीलीभीत में चल रहा 'बाघ मित्र कार्यक्रम' भी बहुत चर्चा में है। इसके तहत स्थानीय लोगों को 'बाघ मित्र' के रूप में काम करने की training दी जाती है। ये 'बाघ मित्र' इस बात का पूरा ध्यान रखते हैं कि बाघों और इंसानों के बीच टकराव की स्थिति ना बने। देश के अलग–अलग हिस्सों में इस तरह के कई प्रयास जारी हैं। मैंने, यहाँ, कुछ ही प्रयासों की चर्चा की है लेकिन मुझे खुशी है कि जन–भागीदारी बाघों के संरक्षण में बहुत काम आ रही है। ऐसे प्रयासों की वजह से ही भारत में बाघों की आबादी हर साल बढ़ रही है। आपको ये जानकर खुशी और गर्व का अनुभव होगा कि दुनियाभर में जितने बाघ हैं उनमें से 70 प्रतिशत बाघ हमारे देश में हैं। सोचिए ! 70 प्रतिशत बाघ!! – तभी तो हमारे देश के अलग–अलग हिस्सों में कई Tiger Sanctuary है।

साथियो, बाघ बढ़ने के साथ–साथ हमारे देश में वन क्षेत्र भी तेजी से बढ़ रहा है। इसमें भी सामुदायिक प्रयासों से बड़ी सफलता मिल रही है। पिछले 'मन की बात' कार्यक्रम में आपसे 'एक पेड़ माँ के नाम' कार्यक्रम की चर्चा की थी। मुझे खुशी है कि देश के अलग–अलग हिस्सों में बड़ी संख्या में लोग इस अभियान से जुड़ रहे हैं। अभी कुछ दिन पहले स्वच्छता के लिए प्रसिद्ध, इंदौर में, एक शानदार कार्यक्रम हुआ। यहाँ 'एक पेड़ माँ के नाम' कार्यक्रम के दौरान एक ही दिन में 2 लाख से ज्यादा पौधे लगाए गए। अपनी माँ के नाम पर पेड़ लगाने के इस अभियान से आप भी जरूर जुड़ें और Selfie लेकर Social Media पर भी चवेज करें। इस अभियान से जुड़कर आपको, अपनी माँ, और धरती माँ, दोनों के लिए, कुछ special कर पाने का एहसास होगा।

मेरे प्यारे देशवासियो, 15 अगस्त का दिन अब दूर नहीं है। और अब तो 15 अगस्त के साथ एक और अभियान जुड़ गया है, 'हर घर तिरंगा अभियान'। पिछले कुछ वर्षों से तो पूरे देश में 'हर घर तिरंगा अभियान' के लिए सबका जोश high रहता है। गरीब हो, अमीर हो, छोटा घर हो, बड़ा घर हो, हर कोई तिरंगा लहराकर गर्व का अनुभव करता है। तिरंगे के साथ Selfie लेकर Social Media पर post करने का craze भी दिखता है। आपने गौर किया होगा, जब colony या society के एक–एक घर पर तिरंगा लहराता है, तो देखते ही देखते दूसरे घरों पर भी तिरंगा दिखने लगता है। यानी 'हर घर तिरंगा अभियान'–तिरंगे की शान में एक Unique Festival बन चुका है। इसे लेकर अब तो तरह–तरह के innovation भी होने लगे हैं। 15 अगस्त आते–आते, घर में, दफ्तर में, कार में, तिरंगा लगाने के लिए तरह–तरह के product दिखने लगते है। कुछ लोग तो 'तिरंगा' अपने दोस्तों, पड़ोसियों को बांटते भी है। तिरंगे को लेकर ये उल्लास, ये उमंग हमें एक दूसरे से जोड़ती है।

इंडी गठबंधन की जाति राजनीति और बेनकाब होते राहुल गांधी!

विगत दो वर्षों से विशेषकर कर्नाटक विधानसभा चुनाव में सत्ता प्राप्ति और फिर लोकसभा चुनाव में 99 सीटें जीत लेने के बाद राहुल गांधी और इंडी गठबंधन हर समय जाति जाति कर रहा है। संभवतः उन्हें लग रहा है कि जातिगत आरक्षण ही एक ऐसा बड़ा हथियार है जिसके माध्यम से जातियों में विभाजित हिंदू समाज को आपस में लड़ाकर भारतीय जनता पार्टी राजनैतिक रूप से पराजित किया जा सकता है और कांग्रेस के अच्छे दिन वापस लाये जा सकते हैं।

राहुल गांधी अपनी तथाकथित न्याय यात्रा के दौरान हर जनसभा में जाति का मुद्दा उठाते रहे हैं यहां तक कि वो पत्रकार वार्ता में पत्रकारों और उनके मालिकों की जाति पूछते रहे हैं। राहुल गांधी सेना प्रमुखों की जाति पूछ चुके हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का भी जाति के नाम पर अपमान करते रहे हैं। राहुल गांधी बहुत ही भद्दे तरीके से अपनी रैलियों में कहा करते हैं कि प्रधनमंत्री मोदी ओबीसी समाज से नहीं आते अपितु वह सामान्य वर्ग से आते हैं। जाति का नशा उनके दिमाग को इस तरह खा चुका है कि वो मर्यादा की सभी सीमाओं को तोड़ते हुए पीएमओ में कार्यरत अफसरों की जातियां पूछ रहे है, इस बार दो कदम आगे बढ़कर उन्होंने बजट सत्र के दौरान, बजट प्रस्तुत करने के पूर्व होने वाली हलवा सेरेमनी का चित्र दिखाते हुए उस प्रक्रिया में भाग लेने वाले अफसरो तक की जाति पूछ ली। जातिगत विद्वेष फैलाने में वो इतने आगे निकल गए कि कहने लगे सवर्ण किसी परीक्षा का प्रश्नपत्र बनेंगे तो और कोई पास नहीं हो पाएगा।

जाति जनगणना करायेंगे पर जाति नहीं बतायेंगे– राहुल गांधी व संपूर्ण विपक्ष जाति जाति की रट तो लगा रहा है किंतु कोई उनकी जाति पूछ ले तो आगबबूला हो जाता है।

सांसदों की संख्या 99 होते ही राहुल गांधी अतिउत्साह में आ गये हैं और हर बात पर यही दोहरा रहे हैं कि वह जातिगत जनगणना को करा कर ही रहेंगे। राहुल गांधी बहुत ही खतरनाक व विकृत राजनीति कर रहे हैं और वस्तुतः वामपंथी एजेंडा धारी के रूप में उभर रहे हैं जिसके अंतर्गत वह हिंदू सनातन प्रतीकों को आधार बनाकर हिंदू धर्म को ही कभी हिंसक बताकर उसका अपमान कर रहे हैं और कभी अपने आप को शिवजी और अपने सभी सांसदों व सहयोगियों को शिवजी की बारात कहकर भगवान शिव और समस्त हिंदू समाज का अपमान करते हुए जातिगत जनगणना की बात करते हैं। भारत विरोधी ताकतें जो कभी नहीं चाहतीं कि भारत सशक्त होकर उभरे और विकसित राष्ट्रों में स्थान बनाए वो सभी राहुल के इस विषवमन के पीछे हैं। हिंदू समाज को जाति के आधार पर लड़ाकर देश को कमजोर करने के लिए ही जाति का मुद्दा हिंसात्मक रूप लेने की कगार तक उछाला जा रहा है जिसका नेतृत्व गांधी परिवार कर रहा है।

बात बात पर जातिगत जनगणना की मांग करने वाले राहुल गांधी के पिता स्वर्गीय राजीव गांधी, दादी इंदिरा गांधी, दादी के पिता जवाहर लाल नेहरू सभी जातिगत जनगणना के प्रबल विरोधी थे। इन सभी का मत था कि जातिगत जनगणना से भारत खंड– खंड में विभाजित होकर कमजोर हो जायेगा । अगर जातिगत जनगणना देश के लिए इतनी ही अनिवार्य थी तो 2004 से लेकर 2013 तक जब कांग्रेस की ही सरकार परोक्ष रूप से स्वयं राहुल गांधी की माँ सोनिया गांधी चला रही थीं तब उन्होंने जातिगत जनगणना क्यों नही करवाई? वर्तमान में जो कांग्रेस शासित राज्य हैं, वहां के मुख्यमंत्री जातिगत जनगणना क्यों नहीं करवा पा रहे हैं? कांग्रेस जाति के नाम पर राजनीति करती है और इसीलिए कांग्रेस के जातिगत जनगणना पर विचार भी बदलते रहते हैं। 2010 में यूपीए की सरकार के समय लालू प्रसाद यादव, मुलायम सिंह यादव और शरद यादव जैसे कद्दावर नेताओं ने जातिगत जनगणना का मुददा उठाया था तब के कांग्रेस के बड़े नेताओं पी चिदम्बरम, आनंद शर्मा और मुकुल वासनिक ने इसका पुरजोर विरोध किया था। आनंद शर्मा आज भी जातिगत जनगणना का विरोध कर रहे हैं।

जाति जनगणना करायेंगे पर जाति नहीं बतायेंगे– राहुल गांधी व संपूर्ण विपक्ष जाति जाति की रट तो लगा रहा है किंतु कोई उनकी जाति पूछ ले तो आगबबूला हो जाता है। यह लोग जाति जनगणना तो कराना चाह रहे हैं लेकिन अपनी जाति नहीं बता पा रहे है जिससे यह भी प्रतिध्वनि निकलती है कि इनके मन में कितनी खोट है और इनका एकमात्र उद्देश्य हिंदू समाज को गली –गली में जातीय दंगों की ज्वाला में झुलसाना है ताकि ये किसी एक जाति के मसीहा बनकर अपना स्वार्थ सिद्ध कर सकें।

संसद के बजट सत्र में जाति जनगणना का मुद्दा उस समय बहुत गर्म हो गया जब लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी और बीजेपी सांसद अनुराग ठाकुर आपस में भिड़ गये। केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने बजट चर्चा के दौरान बोलते हुए कहा कि "जिसकी जाति का पता नहीं वह जाति गणना की बात करता है" उसके बाद राहुल गांधी और अखिलेश यादव बुरी

तरह से भड़क गये । राहुल गांधी को यह बात इतनी आपत्तिजनक लगी कि उन्होंने कहा कि सदन में उनका अपमान किया गया है और आगे जोड़ा कि जो लोग एससी एसटी दलित व पिछड़ो की बात करते हैं उन्हें गालियां खानी ही पड़ती हैं । सपा नेता व सांसद अखिलेश यादव तो इतने उत्तेजित हो गए कि चीखने लगे कि आप किसी से उसकी जाति कैसे पूछ सकते हैं? इस विवाद ने एक ही झटके में राहुल और अखिलेश दोनों को बेनकाब कर दिया है क्योंकि यह दोनों ही सार्वजानिक रूप से सामान्य लोगों से उनकी जाति पूछकर उनका अपमान करते रहे हैं।

यह लोग न केवल आम पत्रकारों और सरकारी अधिकारियों वरन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भी जाति के आधार पर अपमानित करते रहे हैं तब न तो किसी ने इन पर मुकदमा

आखिर राहुल गांधी जाति क्यों छिपा रहे हैं? कहीं चोर की दाढ़ी में तिनका तो नहीं है ?

क्या बिना जाति बताये होगी जनगणना?– राहुल गांधी अपनी जाति बताने में सकपका रहे हैं क्योंकि इससे उनके परिवार का इतिहास बेपर्दा हो जायेगा। वह जाति कैसे बता सकते हैं क्योंकि उनको तो अपना धर्म भी नहीं पता, उनका धर्म चुनाव दर चुनाव बदलता रहता है, उनके नाना अपने नाम के पीछे नेहरू और आगे पंडित लगाते थे। दादी ने पारसी से विवाह किया लेकिन पिता राजीव गांधी भी अपने आप को ब्राह्मण ही बताते रहे। माँ कैथोलिक ईसाई है लेकिन राहुल गांधी ने एक बार पुष्कर यात्रा के दौरान वहां पर स्वयं को कश्मीरी कौल ब्राह्मण बताते हुए अपना गोत्र दत्तात्रेय बताया था। पार्टी प्रवक्ता ने मीडिया में आकर कहा राहुल गांधी जनेऊधारी हिन्दू हैं।

दर्ज करवाया न ही धरना प्रदर्शन या पुतला फूंक कार्यक्रम हुआ किन्तु इसके विपरीत जब से हिमाचल के सांसद अनुराग ठाकुर ने राहुल की जाति पूछ ली है तब से ये लोग अनर्गल आरोप लगा रहे हैं कि अनुराग ठाकुर ने सदन में इनको गाली दी। सोशल मीडिया तथा टी वी चैनलों पर इनके प्रवक्ता दहाड़ मारकर रो रहे हैं । जब खुद की जाति बताने की बात आई तो अपना अपमान नजर आने लगा, यह वही बात हो गयी है कि गुड़ खाएंगे पर गुलगुले से परहेज करेंगे। राहुल गांधी और अखिलेश यादव को यदि भारत के सामान्य गरीब व्यक्ति की जाति पूछने का अधिकार है और यह लोग उसके आधार पर कहीं पर किसी को भी अपमानित कर सकते है तो जनता को भी ये अधिकार है कि वह इनसे इनकी जाति और धर्म का ब्यौरा ले । आज भारत की जनता यह पूछना चाह रही है कि

अब अगर राहुल गांधी वास्तव में ब्राहमण हैं तो उन्हें स्वीकार करना चाहिए था लेकिन अगर उनका बप्तिज्मा हो चुका है तो वो भी जनता को बताना चाहिए। अब जाति जनगणना की मांग करने वाले राजनीतिक दलों व नेताओं को यह समझना पड़ेगा कि जिस बात को पूछने पर आप अपमानित महसूस करते हैं उस बात को बताये बिन जाति जनगणना संभव नही है। अनुराग ठाकुर के बयान पर राहुल गांधी व फिर कांग्रेस तथा अखिलेश यादव का भड़कना विचारों का द्विधाग्रस्त होने के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। जाति के नैरेटिव के कारण ही उत्तर प्रदेश, राजस्थान और महाराष्ट्र में भाजपा की सीटें कम हो गईं हैं यही कारण है कि राहुल गांधी एंड कंपनी को लग रहा है कि जाति एक ऐसा मुद्दा है जिसके आधार पर भाजपा को हराया जा सकता है और वो उसी दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।

जबरन धर्म परिवर्तन

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ निरंतर जनहित में बड़े एवं ऐतिहासिक निर्णय ले रहे हैं। इसी कड़ी में योगी आदित्यनाथ की सरकार ने जबरन धर्म परिवर्तन एवं लव जिहाद के विरुद्ध नए विधेयक को पारित करवाकर एक और इतिहास रच दिया है। इसमें अतिशयोक्ति नहीं है कि जब से योगी आदित्यनाथ उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने हैं तभी से वे भारतीय संस्कृति के संरक्षण के लिए गंभीरता से कार्य कर रहे हैं। अपनी संस्कृति एवं धर्म की रक्षा करना प्रत्येक मनुष्य का परम कर्तव्य है तथा वह इसी का पूर्ण निष्ठा के साथ पालन कर रहे हैं।

विगत दीर्घ काल से लव जिहाद के प्रकरण सामने आ रहे हैं। प्रकरणों के अनुसार प्रेम प्रसंग में पड़कर लड़कियां दूसरे धर्म के पुरुषों से विवाह कर लेती हैं। विवाह के कुछ समय पश्चात् इन लड़कियों पर ससुराल पक्ष का धर्म स्वीकार करने का दबाव बढ़ने लगता है। बहुत सी लड़कियां ससुराल पक्ष का धर्म स्वीकार करने पर विवश हो जाती हैं, क्योंकि उनके पास इसके अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं होता। जो लड़कियां ऐसा नहीं करतीं, उनका जीवन नारकीय बन जाता है। उन्हें ससुराल में यातना एवं अपमान का सामना करना पड़ता है। अनेक प्रकरणों में पति अथवा ससुराल पक्ष द्वारा लड़कियों को बेच देने के मामले भी प्रकाश में आए हैं। ऐसे प्रकरणों में लड़कियों की हत्याओं के मामले भी प्रकाश में आए हैं। निःसंदेह ऐसे प्रकरण किसी भी सभ्य समाज के लिए शुभ संकेत नहीं हैं।

अब उत्तर प्रदेश में नया कानून बनने से कुछ संतोषजनक होने की आशा जगी है। उत्तर प्रदेश में जबरन धर्म परिवर्तन एवं लव जिहाद की रोकथाम के लिए ऐतिहासिक निर्णय लिया गया है। उल्लेखनीय है कि सोमवार को योगी आदित्यनाथ की सरकार ने उत्तर प्रदेश विधानसभा में जबरन धर्म परिवर्तन एवं लव जिहाद के विरुद्ध नया विधेयक प्रस्तुत किया, जो मंगलवार को पारित हो गया। इसे उत्तर प्रदेश विधि विरुद्ध धर्म संपरिवर्तन प्रतिषेध (संशोधन) विधेयक–2024 नाम दिया गया है। इस नए विधेयक के अनुसार नाबालिग लड़की का लव जिहाद के लिए अपहरण करने तथा उसे बेचने पर आजीवन कारावास एवं एक लाख रुपए तक के आर्थिक दंड का प्रावधान किया गया है। यदि किसी नाबालिग, दिव्यांग अथवा मानसिक रूप से दुर्बल व्यक्ति, महिला, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति का जबरन धर्म परिवर्तन कराया जाता है तो दोषी को आजीवन कारावास के साथ–साथ एक लाख रुपए का आर्थिक दंड भी दिया जा सकता है। इसी प्रकार सामूहिक रूप से जबरन धर्म परिवर्तन पर भी आजीवन कारावास एवं एक लाख रुपए के आर्थिक दंड का प्रावधान है।

ऐसे प्रकरण भी सामने आते रहते हैं कि भारत में धर्म परिवर्तन को बढ़ावा देने के लिए विदेशों से भारी मात्रा में धनराशि आती है। योगी सरकार की दूरदर्शिता के कारण अब इस पर भी रोकथाम लग सकेगी। इस विधेयक में विदेशों से धर्म परिवर्तन के लिए आने वाले धन पर भी अंकुश लगाने हेतु कठोर प्रावधान किए गए हैं। विदेशी अथवा अपंजीकृत संस्थाओं से धन प्राप्त करने पर 14 वर्ष तक का कारावास तथा 10 लाख रुपए के आर्थिक दंड का प्रावधान किया गया है। यदि कोई धर्म परिवर्तन के लिए किसी व्यक्ति के जीवन अथवा उसकी धन–संपत्ति को भय अथवा हानि में डालता है, उस पर बल प्रयोग करता है, उसे विवाह का झांसा देता है, लालच देकर किसी नाबालिग, महिला या व्यक्ति को बेचता है, तो उसके लिए न्यूनतम 20 वर्ष के कारावास का प्रावधान किया गया है। प्रकरण की गंभीरता के अनुसार इसमें वृद्धि भी की जा सकती है। दोषी को पीड़ित के उपचार एवं पुनर्वास के लिए भी आर्थिक दंड चुकाना होगा। अब जबरन धर्म परिवर्तन के संबंध में कोई भी व्यक्ति प्राथमिकी दर्ज करवा सकता है। इससे पूर्व केवल पीड़ित व्यक्ति, उसके परिवारजन अथवा संबंधी ही प्राथमिकी दर्ज करवा सकते थे।

उत्तर प्रदेश विधि विरुद्ध धर्म संपरिवर्तन प्रतिषेध (संशोधन) विधेयक-२०२४ नाम दिया गया है।

इस प्रकार योगी सरकार ने जबरन धर्म परिवर्तन रोकने की दिशा में प्रथम पग उठा लिया है। अब इस विधेयक को विधानसभा से पारित होने के पश्चात विधान परिषद भेजा जाएगा। तत्पश्चात इसे राज्यपाल के पास भेजा जाएगा। उसके पश्चात् इसे राष्ट्रपति को भेजा जाएगा।

उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व नवंबर 2020 में योगी सरकार ने एक अध्यादेश जारी किया था। इसके पश्चात् फरवरी 2021 में उत्तर प्रदेश विधानमंडल के दोनों सदनों ने इस विधेयक को पारित कर दिया था। इस प्रकार उत्तर प्रदेश विधि विरुद्ध धर्म संपरिवर्तन प्रतिषेध अधिनियम– 2021

अस्तित्व में आया था। इस विधेयक के अंतर्गत दोषी को एक से 10 वर्ष तक के कारावास का प्रावधान था। इस विधेयक के अंतर्गत केवल विवाह के लिए किया गया धर्म परिवर्तन ही अमान्य था। किसी से झूठ बोलकर अथवा उसे धोखा देकर धर्म परिवर्तन को अपराध माना गया था। यदि कोई स्वेच्छा से धर्म परिवर्तन करता है तो उसे दो माह पूर्व मजिस्ट्रेट को सूचित करने का प्रावधान था। विधेयक के अनुसार जबरन अथवा धोखे से धर्म परिवर्तन के लिए 15 हजार रुपए आर्थिक दंड के साथ एक से डेढ़ वर्ष के कारावास का प्रावधान था। यदि दलित लड़की का धर्म परिवर्तन होता है तो 25 हजार रुपए के आर्थिक दंड के साथ तीन से 10 वर्ष के कारावास का प्रावधान था।

है जो लव जिहाद को 'मिथ्या' की संज्ञा देता है। इस वर्ग का कहना है कि देश में 'लव जिहाद' नाम की कोई चीज नहीं है। प्रश्न यह भी है कि यदि ऐसा है तो फिर यही वर्ग इस प्रकार के कानूनों की आलोचना क्यों करता है?

वास्तव में यह विधेयक किसी समुदाय या वर्ग विशेष के विरुद्ध नहीं है, अपितु यह केवल जबरन धर्म परिवर्तन के विरुद्ध है। स्वेच्छा से धर्म परिवर्तन करने पर कोई रोक नहीं है। उत्तर प्रदेश सरकार में मंत्री ओमप्रकाश राजभर का कहना है– "कानून में जो संशोधन और सुधार हो रहा है उसके पीछे यह मकसद है कि और कड़ाई से नियम लागू हों और इस तरह की चीजें न हो। विपक्ष जो कह रहा है कि यह सिर्फ मुसलमानों के लिए है, यह कानून सभी

उल्लेखनीय है कि जबरन धर्मांतरण के दृष्टिगत देश के कई राज्यों में जबरन धर्म परिवर्तन विरोधी कानून लागू हैं। इनमें ओडिशा, छत्तीसगढ़, झारखंड, उत्तराखंड, मध्य प्रदेश, कर्नाटक, गुजरात, हिमाचल प्रदेश एवं हरियाणा सम्मिलित हैं। महाराष्ट्र में भी जबरन धर्म परिवर्तन के विरुद्ध विधेयक लाने की बात कही जाती रही है, किंतु इस संबंध में कोई विशेष प्रगति नहीं हो सकी है। पूर्व के कानून की तुलना में नए कानून को अधिक सशक्त एवं कठोर बनाया है। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि लव जिहाद के प्रकरण रुकने का नाम नहीं ले रहे हैं। हिन्दुत्ववादी संगठन लम्बे समय से कठोर कानून की मांग करते आ रहे हैं। उनका तर्क है कि कठोर कानून से ही उनकी बहन–बेटियां सुरक्षित रह सकेंगी। देश में एक वर्ग ऐसा भी धर्मों के लोगों के लिए बनाया गया है, सिर्फ एक धर्म के लिए नहीं, वे इसका विरोध सिर्फ इसलिए करते हैं ताकि मुसलमान उनका गुलाम बना रहे और उन्हें वोट देता रहे, वे सरकार बनाते रहें और मुसलमानों को धोखा देते रहें।"

कुछ लोग कहते हैं कि प्रेम धर्म नहीं देखता है। यदि प्रेम की बात की जाए, तो प्रेम त्याग का दूसरा रूप है। प्रेम की बात करने वाले लोगों को त्याग के नाम पर सांप सूंघ जाता है। यह कैसा प्रेम है, जो केवल लड़की से उसकी धार्मिक एवं सांस्कृतिक पहचान छीन लेता है। यदि पुरुष इतना ही प्रेम करने वाला है, तो वह लड़की का धर्म स्वीकार क्यों नहीं करता? यह कैसा एक पक्षीय प्रेम है? प्रेम के नाम पर धोखा, छल और साजिश तो नहीं ?

(लेखक – राजनीतिक विश्लेषक है)

मानवीय जीवन मूल्यों का संकट?

हृदयनारायण दीक्षित

मानवीय जीवन मूल्यों पर संकट है। इतिहास के किसी अन्य कालखण्ड में इस तरह का मानवीय संकट नहीं था। समाचार माध्यम भी जब कब विश्व युद्ध की आशंका की बातें करते हैं। विचार ही मनुष्य जाति के वाह्य स्वरूप और आंतरिक उदात्त भाव के प्रसारक रहे हैं। विचार भी अपना प्रभाव खो रहे हैं। मानवीय सभ्यता आधुनिक काल का मनुष्य विरोधी प्रेरक तत्व बन गई है। वातावरण में निश्चिन्तता नहीं है। संदेह और अनिश्चितता का वातावरण है। मनुष्य जाति भविष्य के भय से डरी हुई है। धन का प्रभाव और धन का अभाव दोनों ही मारक हैं। मानवता का बड़ा भाग पर्याप्त भोजन से वंचित है। इस वर्ग में सामान्य चिकित्सा और शिक्षा, आश्रय–घर का अभाव है। आधुनिक सभ्यता के प्रभाव में अभावग्रस्त लोगों के सामने संकट है। विज्ञान के जानकार प्रकृति के तमाम रहस्य बता रहे हैं। निसंदेह वैज्ञानिक शोधों ने चिकित्सा के क्षेत्र में क्रांतिकारी उपलब्धियां हासिल की हैं। लेकिन आधुनिक वैज्ञानिक शोधों ने पृथ्वी ग्रह के अस्तित्व के समाप्त होने का खतरा पैदा कर दिया है।

युद्ध के तमाम आश्चर्यजनक हथियार पृथ्वी और मानव जाति के अस्तित्व के लिए खतरा बन गए हैं। परमाणु हथियार सहित अनेक आश्चर्यजनक अस्त्रों की खोजों से पृथ्वी के ही अस्तित्व पर खतरा है। पृथ्वी ग्रह संकट में है और उससे पोषण पाने वाली मानव जाति भी संकट में है। वैज्ञानिकों ने तमाम ग्रहों की गतिविधि का पता लगा लिया है। आशंका है कि किसी समय पृथ्वी चन्द्रमा के निकट पहुंच सकती है। सूर्य का ईंधन लाखों वर्ष से खर्च हो रहा है। सूर्य के ठंडा हो जाने से ही मनुष्य जाति नष्ट हो सकती है। हम इन्हें भविष्य की आशंकाएं कह सकते हैं। डॉक्टर राधाकृष्णन ने 'धर्म और समाज' में 'धर्म की आवश्यकता' शीर्षक में कहा है, ''अधिक सम्भावना इस बात की है कि मानव जाति स्वयं जानबूझकर किए गए कार्यों से, अपनी मूर्खता और स्वार्थ के कारण नष्ट हो सकती है। संसार आनंद के लिए है। हम युद्ध यंत्र जात की पूर्णतः तक पहुंचने में लगाई जा रही ऊर्जाओं के केवल थोड़े से हिस्से का ही इसके लिए प्रयोग करें तो सबको आनंदमय बनाया जा सकता है।''

सम्पूर्ण मानवता विषाद ग्रस्त जान पड़ रही है। आदर्श परम्पराएं, स्वतः प्रेरित अनुशासन और राष्ट्र राज्यों द्वारा स्थापित विधि व्यवस्था शिथिल हो रही हैं। डार्विन ने लिखा है, ''मनुष्य जीवन सभ्यता में उन्नति करता जा रहा है। छोटे वर्ग समूह बड़े समुदायों में संगठित होते जाते हैं। त्यों त्यों व्यक्ति को यह बात समझ में आती जाती है कि उसे अपनी सामाजिक सहज प्रवृत्तियों और संवेदनाओं का विस्तार अपने राष्ट्र के लिए कर लेना चाहिए।''

सभ्यता आखिरकार क्या है? मनुष्य के बौद्धिक विकास का सबसे बड़ा उपकरण संवाद है और संवाद की प्रारंभिक शर्त है प्रेम पूर्ण भाषा और वाणी। वैदिक काल में संवाद की अनेक संस्थाएं थी। सभा और समितियां विचार विमर्श का मंच थी। सभा में विचार रखने वाले सभेय कहे जाते थे। इसी से शब्द बना है सभासद। सभा में प्रेमपूर्ण ढंग से अपनी बात रखने वाले व्यक्ति को सभ्य कहा जाता था। किसी समूह का शब्द आचरण और सौन्दर्यबोध सभ्यता है लेकिन प्रेमपूर्ण संवाद घटा है।

> **प्रकृति और मनुष्य के मध्य परस्परावलंबन है। मनुष्य प्रकृति का भाग है। हमारे और प्रकृति के मध्य आत्मीयता होनी चाहिए। प्रकृति की सभी शक्तियों के लिए चित्त में आत्मीय भाव के साथ आदर भाव की भी आवश्यकता है।**

प्रकृति और मनुष्य के मध्य परस्परावलंबन है। मनुष्य प्रकृति का भाग है। हमारे और प्रकृति के मध्य आत्मीयता होनी चाहिए। प्रकृति की सभी शक्तियों के लिए चित्त में आत्मीय भाव के साथ आदर भाव की भी आवश्यकता है।

लेकिन प्रकृति और मनुष्य के बीच अंतर्विरोध भी हैं। आंधी, तूफान और ऐसी ही तमाम प्राकृतिक आपदाएं मनुष्य को

व्यथा देती हैं और जीवन के लिए खतरा भी बनती हैं। ऐसी घटनाओं को प्राकृतिक मानकर अपना जीवनयापन करने की बात सही है। लेकिन अनेक संकट आधुनिक सभ्यता ने भी पैदा किए हैं। भूमण्डलीय ताप, भूगर्भ जल स्तर का गिरना, वायु प्रदूषण आदि आपदाएं उपभोक्तावादी आचरण से पैदा होती हैं।

सी० बी० जुंग ने अपनी पुस्तक 'मॉडर्न मैन इन सर्च ऑफ अ सोउल' में लिखा है, "आधुनिक सभ्यता और मनुष्य उन्नति की चरम सीमा पर है। भविष्य में लोग उससे भी आगे निकल जाएंगे।" यह बात ठीक है कि वह एक युगव्यापी विकास का अंतिम परिणाम है। लेकिन साथ ही यह मानव जाति की आशाओं की दृष्टि से अधिकतम निराशाजनक भी है। आधुनिक मनुष्य को इसकी जानकारी भी है। उसने देख लिया है कि विज्ञान, शिल्प और संगठन कितने लाभकारी हैं और वे कितने विनाशकारी हो सकते हैं। ईसाई चर्च, मनुष्यों का भाईचारा, अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक संगठन और आर्थिक हितों की एकता सब के सब खोटे सिद्ध हुए हैं। मनोविज्ञान की भाषा में कहें तो लगभग प्राणान्तक आघात पहुंचा है। परिणामस्वरुप मनुष्य अनिश्चितता में जी रहा है।

परिदृश्य चिन्ताजनक है। मनुष्य की वाह्य समृद्धि बढ़ी है। मनुष्य यंत्र हो रहा है। उसकी आत्मा खो गई है। वह खोई हुई आत्मा की पुनः प्राप्ति का प्रयास नहीं कर रहा है। भारत की प्राचीन सभ्यता में तमाम भौतिक अभावों के बावजूद मनुष्य आनंदित था। राष्ट्र के प्रति उसकी निष्ठा थी। सभी रिश्तों में आत्मीयता थी। मनुष्य में मनुष्येत्तर प्राणियों और सम्पूर्ण जगत् के प्रति भी आत्मभाव था। भारत के मनुष्य की दृष्टि और जीवन की गतिविधि सामूहिक थी। सुख दुख सामूहिक थे। पर्व उत्सव सामूहिक उत्सव आनंद का स्रोत थे। परिवार आनंद मठ था। यत्र तत्र सर्वत्र आनंद था। आधुनिक सभ्यता के प्रभाव में जीवन का आनंद रस सूख गया है। आधुनिक सभ्यता द्वारा मनुष्य को नितांत व्यक्तिवादी और मशीन बनाया है।

वैदिक सभ्यता और संस्कृति में सम्पूर्ण विश्व को परिवार जाना गया है। वसुधैव कुटुम्बकम वैदिक संस्कृति का लोकप्रिय सूत्र है। विश्व के अणु और परमाणु के प्रति श्रद्धा और आदरभाव रहा है।

वैदिक सभ्यता और संस्कृति में सम्पूर्ण विश्व को परिवार जाना गया है। वसुधैव कुटुम्बकम वैदिक संस्कृति का लोकप्रिय सूत्र है। विश्व के अणु और परमाणु के प्रति श्रद्धा और आदरभाव रहा है। शांति मानवता की प्यास है। वैदिक साहित्य में शांति को जीवन की महत्वपूर्ण उपलब्धि बताया गया है। भारतीय समाज के चिन्तकों, विद्वानों और वैदिक काल के ऋषियों ने शांति की उपासना की है। ऋग्वेद में विश्व शांति की प्रार्थना है। यह भारतवासियों की शांति की प्यास को सुंदर अभिव्यक्ति देती है। शांति मन्त्र में कहते हैं, "अंतरिक्ष शांत हों। पृथ्वी शांत हों। आकाश शांत हों। वनस्पतियां औषधियां शांत हों। शांति भी शांत हों।" यहाँ केवल मनुष्यों के बीच परस्पर सद्भाव वाली शांति की ही बात नहीं है। यहाँ पृथ्वी से लेकर आकाश तक शांति स्थापित होने की प्रार्थना है। शांति अशांति की अनुपस्थिति नहीं है। शांति मौलिक रूप में मानव मन की प्राकृतिक प्यास है। अशांत चित्त से सृजन संभव नहीं होते। अशांत चित्त विध्वंसक होता है और शांत चित्त सर्जक।

विश्व तनाव में है। हिन्दुत्व परिपूर्ण जीवन दृष्टि है। पूरी जीवन दृष्टि आतंरिक आत्मीयता के आधार पर विकसित हुई है। धरती माता है। आकाश पिता है। जल माताएं हैं। जल से जीवन का उद्भव ऋग्वेद में उल्लिखित है। जलमाताओं ने ही संसार को जन्म दिया। नदियां माताएं हैं। सूर्य संरक्षक हैं। परोपकार और सदाचार उत्कृष्ट जीवन मूल्य हैं। दुख और वैराग्य के स्थान पर आनंद और प्रवृत्ति हैं। संसार त्याज्य नहीं है। संसार धर्म क्षेत्र, कर्म क्षेत्र है। जीवन कर्म प्रधान है। जीवन में पलायन का कोई भाव नहीं। वनस्पतियां भी प्रणाम के योग्य हैं। उन्हें देवता कहा गया है। वैदिक सभ्यता में विचार विविधता है। जीवन और जगत् को समझने के लिए पूर्व मीमांसा, सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, बुद्ध और जैन 8 दर्शन हैं। भारतीय दर्शन किसी देवदूत की घोषणा नहीं है। आधुनिक सभ्यता की सभी विसंगतियों के उपचार हिन्दुत्व में हैं।

युवा शक्ति से विकसित भारत का सृजन

केन्द्रीय कौशल विकास एवं उद्यमिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) जयंत चौधरी और प्रदेश के व्यावसायिक शिक्षा, कौशल विकास और उद्यमशीलता राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) कपिल देव अग्रवाल ने गुरुवार को भारत सरकार के कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय (एमएसडीई) द्वारा राजधानी लखनऊ के इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में 'कुशल भारत विकसित भारतरू नए भारत के युवाशक्ति से विकसित भारत का सृजन' अभियान के अंतर्गत स्किल इंडिया मिशन के प्रशिक्षण प्राप्त प्रशिक्षुओं के अभिनंदन समारोह में प्रतिभाग किया। उन्होंने विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमों के माध्यम से प्रशिक्षित छात्र–छात्राओं को सम्मानित किया गया।

केंद्रीय कौशल विकास एवं उद्यमिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और शिक्षा राज्य मंत्री जयंत चौधरी ने उत्तर प्रदेश सरकार की किसी भी मांग को बिना देरी पूरा करने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि स्किल इंडिया की वेबसाइट पर प्रशिक्षण कार्यक्रमों की जानकारी आसानी से प्राप्त की जा सकती है और स्किल इंडिया मिशन के तहत प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले युवक समाज के अन्य लोगों को भी प्रेरित करें। उत्तर प्रदेश में अप्रेंटिस के माध्यम से 60,000 लोगों को प्रशिक्षित किया गया है और इस साल 3 लाख लोगों को ट्रेनिंग देने का लक्ष्य रखा गया है। बांदा में केंद्रीय विद्यालय के निर्माण के लिए मंजूरी मिल गई है। 2014 में उत्तर प्रदेश में नेशनल हाईवे की लंबाई 7,986 किमी थी, जो 2023 में बढ़कर 12,292 किमी हो गई है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (पीएमकेवीवाई) के अंतर्गत उत्तर प्रदेश में 21.60 लाख लोगों को प्रशिक्षित किया गया है, जिनमें से 16.87 लाख ने प्रमाणन पूरा कर लिया है। योजना के नवीनतम संस्करण के तहत 4. 61 लाख उम्मीदवारों को नामांकित किया गया है और 205 रोजगार मेले आयोजित किए गए हैं, जिनमें 64,589 उम्मीदवारों को शॉर्टलिस्ट किया गया है।

प्रदेश के व्यावसायिक शिक्षा, कौशल विकास और उद्यमशीलता राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) कपिल देव अग्रवाल ने कहा कि प्रधानमन्त्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में प्रदेश के युवाओं को हुनरमंद बनाकर उन्हें रोजगार और स्वरोजगार के अवसर प्रदान किए जा रहे हैं। युवाओ को कौशल प्रशिक्षण देकर राज्य के आर्थिक विकास में सहयोगी बनाना तथा प्रशिक्षित युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराकर स्वावलंबी बनाना है प्रदेश को 1 ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था के लक्ष्य को पूर्ण करने में युवा जनशक्ति की उत्पादकता का महत्वपूर्ण स्थान है।

योगी सरकार ने अनुपूरक बजट के माध्यम से कौशल विकास मिशन के संचालन के लिए 200 करोड़ रुपये तथा प्रोजेक्ट प्रवीण हेतु 100 करोड़ रुपये का प्राविधान किया है। अब तक 17 लाख 50 हजार से अधिक युवाओं को प्रशिक्षित किया गया तथा लगभग 6 लाख 50 हजार युवाओं को रोजगार दिलाया गया। चालू वर्ष में 1 लाख 65 हजार से अधिक युवाओं को रोजगार दिलाया गया। माध्यमिक शिक्षा विभाग के साथ सहयोग एवं समन्वय कर राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले कक्षा 9 से 12 तक के छात्र एवं छात्राओं को नियमित कक्षाओं के साथ–साथ निःशुल्क व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जा रहा है। वर्ष 2023–2024 में 315 विद्यालयों के 43,200 छात्रों को निःशुल्क कौशल प्रशिक्षण दिया गया है।

कौशल विकास मंत्री ने कहा कि रोजगार की अधिक संभावनाओं वाले नए–नए उभरते हुए सेक्टर्स जैसे–आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस, मशीन लर्निंग, रोबोटिक्स, क्लाउड कम्प्यूटिंग, ग्रीन जॉब्स, टैलीकॉम सेक्टर इत्यादि में प्रशिक्षण की विशेष कार्य योजना तैयार की गई है। स्थानीय आवश्यकताओं तथा रोजगार की संभावनाओं को चिह्नित करने के लिए प्रत्येक जनपद में डीएसडीपी (जिला कौशल विकास योजना) की तैयारी ताकि प्रशिक्षण के बाद युवाओं को स्थानीय स्तर पर ही रोजगार मिल सके।

5 अगस्त 2019 को 5 वर्ष होने पर विशेष

जम्मू कश्मीर में नया सवेरा

तरुण चुघ

5 अगस्त भारत और जम्मू–कश्मीर के लिए एक ऐतिहासिक तारीख है। इतिहास का अनुपम दिन है। 2019 में इसी तारीख को सात दशक से अखंड भारत, एक भारत की चिरप्रतीक्षित मांग पूरी हुई थी और जम्मू–कश्मीर भारत का अभिन्न हिस्सा बन सका था। इसके साथ ही कश्मीर की कश्मीरियत लौटी। कभी आतंकवाद, परिवारवाद, भ्रष्टाचार, हिंसा और पलायन से परिचय पाने वाला जम्मू–कश्मीर होने वाला जम्मू कश्मीर में बुलंदी और विकास के द्वार खुलने लगे। धारा 370 की समाप्ति के बाद जो नया सवेरा हुआ था, उसकी रौशनी बिखड़ने लगी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में जम्मू कश्मीर में विकास और विश्वास का उदय होते ही इसकी तस्वीर और तकदीर बदल गई। जब आतंकवाद और परिवारवाद का अस्त हुआ तो खुशहाल कश्मीर की तस्वीर दुनिया को दिखने लगी। विकासवाद और राष्ट्रवाद की रौशनी ने कश्मीर को अपना गौरवमयी इतिहास दी है। इसी का परिणाम रहा कि आजादी के अमृत वर्ष में धारा 370 जैसी अभिशाप से मुक्ति मिली और अमृत काल में विकास की रफ्तार तेज हो गई। पहली बार कश्मीर का लालचौक तिरंगामय होकर भारत माता की जय के उदघोष से गूंजा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का नाम हर ओर गुंजायमान हुआ था। प्रधानमंत्री को विकास पुरुष के रूप में देखते हुए श्रीनगर को पर्यटकीय राजधानी के रूप में विकसित किये जाने पर एक नया मार्ग खुला है, वह मार्ग है विकास का, राष्ट्रवाद का, उज्ज्वल भविष्य का, राष्ट्रीय एकता और अखंडता का।

जनसंघ से लेकर भाजपा तक कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग मानते हुए इसके लिए अनवरत संघर्ष किया। जनसंघ के समय से ही एक देश में एक विधान, एक निशान, एक प्रधान का नारा लगाते रहे। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी कश्मीर के लिए स्वतंत्र भारत के पहले बलिदानी बने। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की यही दृढ इच्छाशक्ति और संकल्प ने 5 अगस्त 2019 को कश्मीर से धारा 370 को समाप्त कर एक भारत, अखंड भारत के सपना को साकार किया। फिर धारा 370 की समाप्ति के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जम्मू कश्मीर में विकास और विश्वास का एक बयार बहाया, जिससे भारतीयता का रंग फैला। जो कश्मीर भय और देश विरोधी ताकतों का अड्डा हुआ करता था, वहां देशभक्ति का माद्दा दिख रहा है। कभी परिवारवाद और आतंकवाद के चंगुल में फंसा कश्मीर आज राष्ट्रवाद और विकासवाद का झंडा बुलंद कर रहा है। एक देश में एक विधान, एक निशान, एक प्रधान का सपना साकार हुआ। अखंड भारत, एक भारत, समर्थ भारत और सशक्त भारत की लकीर कश्मीर में खींच दी गई। जम्मू–कश्मीर का सामाजिक, भौगोलिक और आर्थिक एकीकरण सुनिश्चित हो गया है।

औद्योगिकीकरण के क्षेत्र में जम्मू–कश्मीर देश के पिछड़े राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों में एक था। पांच अगस्त, 2019 से पहले जम्मू कश्मीर की संवैधानिक और प्रशासनिक व्यवस्था के तहत देश–विदेश का कोई भी नागरिक या निवेशक जम्मू कश्मीर में स्थायी रूप से नहीं बस सकता था। इसलिए बाहरी निवेशक जम्मू कश्मीर में निवेश से कतराते थे। आतंकी हिंसा इसके आर्थिक–औद्योगिक विकास में बाधा थी। बेरोजगारी बढ़ रही थी। सरकारी नौकरी रसूखदारों को ही मिलती थीं। पहले जम्मू और कश्मीर के साथ भारत के अन्य राज्यों से अलग व्यवहार किया जाता था। इसके कारण यह राज्यस की मुख्धारा से दूर था। अनुच्छे द 370 के कारण संसद को जम्मू–कश्मीर के बारे में रक्षा, विदेश मामले और संचार के विषय में कानून बनाने का अधिकार था, लेकिन किसी अन्य विषय से संबंधित कानून को लागू करवाने के लिए केन्द्र को राज्य सरकार की मंजूरी लेनी होती थी। भारत की संसद जम्मू–कश्मीर के संबंध में सीमित क्षेत्र में ही कानून बना सकती थी। अनुच्छेद 370 के कारण से जम्मू–कश्मीर राज्य पर भारतीय संविधान की अधिकतर धाराएं लागू नहीं होती थीं। केन्द्र के 170 कानून जो पहले लागू नहीं थे, अब वे इस क्षेत्र में लागू कर दिए गए हैं। वर्तमान में सभी केन्द्रीय कानून जम्मू और कश्मीर में लागू हैं। अब तस्वीर पूरी तरह बदल चुकी है। आज परिस्थिति भी पूरी तरह बदल चुकी है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह की इच्छा शक्ति से धारा 370 के समाप्त होते ही जम्मू–कश्मीर के लोग अब देश की मुख्य धारा से जुड़ गए हैं। व्यापार और उद्योगों की स्थापना में तेजी आई है। इसका असर राज्य की जीडीपी पर सकारात्मक रूप से दिख रहा है। अनुच्छेद 370 हटने के बाद जम्मू कश्मीर में निवेश की सुरक्षा की गारंटी देती नई औद्योगिक नीति का असर नजर आने लगा है। पांच साल

साल के अंतराल में निवेश आने लगे हैं। निवेश के लिए कई समझौता हो चुके हैं। स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा क्षेत्र से जुड़े देश के कई बड़े समूह भी निवेश करने का प्रस्ताव जमा करा चुके हैं। इसके साथ ही पर्यटन, फिल्म पर्यटन, बागवानी, फसल कटाई के बाद का प्रबंधन, कृषि, खाद्य प्रसंस्करण, रेशम उद्योग, स्वास्थ्य, फार्मास्यूटिकल्स, उत्पादन, आइटी, नवीकरणीय ऊर्जा, बुनियादी ढांचा व रियल एस्टेट, हथकरघा व हस्तकला और शिक्षा के क्षेत्र में भी तस्वीर बदल गई हैं।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का 'एक देश, एक विधान, एक प्रधान' का संकल्प पूरा हुआ तो धरती का स्वर्ग कहा जाने वाला जम्मू–कश्मीर और लद्दाख अब देश के बांकी हिस्से के साथ विकास की राह पर आगे बढ़ रहा है। देश के साथ कश्मीर के कदम से कदम दशकों के फासले को कम करते हुए नरेन्द्र मोदी सरकार ने विकास की दौड़ में पीछे छूट रहे जम्मू–कश्मीर और लद्दाख से अनुच्छेद 370 के प्रावधानों को निरस्ती कर 70 साल की टीस खत्म की। अब उसे मुख्य धारा से जोड़ देश के अन्य राज्यों के बराबर लाकर खड़ा किया है। करीब दो साल से ही ये क्षेत्र विकास के नए सफर पर निकल पड़ा है।

वाल्मीकि समुदाय, गोरखा लोगों और पश्चिमी पाकिस्तान से उजाड़े और खदेड़े गए शरणार्थियों को पहली बार राज्य में होने वाले चुनाव में मत देने का अधिकार मिला। मूल निवासी कानून लागू किया गया। नई मूल निवासी परिभाषा के अनुसार 15 वर्ष या अधिक समय तक जम्मू– कश्मीर में रहने वाले व्यक्ति भी अधिवासी माने जाएंगे। 1990 में कश्मीर घाटी से भगाए गए कश्मीरी पंडितों को फिर से बसाने का रास्ता साफ हो गया है। कश्मीरी प्रवासियों की वापसी के लिए नौकरियों और पारगमन आवासों के निर्माण का कार्य प्रगति पर है। दशकों से रूकी हुई शाहपुर–कंडी बांध परियोजना पर कार्य शुरू किया गया।

केन्द्र सरकार ने जम्मू–कश्मीर में सभी व्यक्तिगत लाभार्थी योजनाओ तथा फ्लैगशिप योजनाओं पर द्रुतगति से कार्य प्रारंभ किया। प्रधानमंत्री विकास पैकेज 2015 के तहत कई विकास परियोजनाएं पूर्ण हो चुकी हैं ।अंत्योदय के मूल मंत्र और सबका साथ, सबका विकास व सबका विश्वास की भावना के प्रति समर्पित नरेंद्र मोदी सरकार ने दशकों तक उपेक्षित जम्मू–कश्मीर में विकास को नई रफ्तार दी है। भारत सरकार की किसी औद्योगिक प्रोत्साहन योजना के तहत पहली बार होगा कि औद्योगिक विकास को जम्मू–कश्मीर के ब्लॉक स्तर तक ले जाएगी। इस प्रकार कश्मीर की तस्वीर और तकदीर दोनों बदल रही है और शीघ्र ही जम्मू कश्मीर देश के विकसित राज्यों की पंक्ति में आकर खड़ा होगा।

जम्मू कश्मीर आज पर्यटन की राजधानी बन गया है, जी 20 की मेजबानी का इतिहास बना, शांति और सुशासन का केंद्र बना है, अखंड भारत का हिस्सा बनकर आतंकवाद को नकार रहा है, भ्रष्टाचार और परिवारवाद को दरकिनार कर रहा है।

वित्तीय वर्ष 2024–25 के बजट में जम्मू–कश्मीर की बुलंदी और विकास की बुनियाद तैयार कर दी गई है। पर्यटन, कृषि, रोजगार, उद्योग, शिक्षा, स्वास्थ्य समेत सभी क्षेत्रों में समग्र विकास की बुनियाद तैयार की गई है।

केन्द्रीय बजट में जम्मू और कश्मीर में कृषि और संबद्ध क्षेत्रों की प्रतिस्पर्धीय परियोजना अंतर्राष्ट्रीय कृषि विकास कोष से 100 मिलियन अमेरिकी डॉलर के अनुमानत मूल्य पर लागू किए जाने के साथ ही समग्र कृषि विकास कार्यक्रम के तहत 5013 करोड़ रुपये की स्वीकृति से सभी 29 परियोजनाओं का पांच वर्षों में कार्यान्वन करके कृषि क्षेत्र में प्रगति के अध्याय लिखे जाएंगे। **"विश्व का सबसे बड़ा अनाज भंडारण"** योजना के तहत अनाज भंडारण सुविधा की कमी वाले छह जिलों में अनाज भंडारण इकाइयों का निर्माण किया जाएगा।

12,000 अतिरिक्त स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) बनाए जाएंगे, जिससे रोजगार के अवसर मिलेंगे।

जम्मू और कश्मीर संभाग में छह–छह आफ बीट नये पर्यटन स्थल विकसित होंगे, 75 चिन्हित विरासत स्थलों, सांस्कृतिक स्थलों का पुनरुद्धार और जीर्णोद्धार किया जाएगा तथा आठ सांस्कृतिक केन्द्रों की स्थापना की जाएगी।

'मेड इन जम्मू–कश्मीर' के लक्ष्य को पूरा करने के लिए कार्य किए जाएंगे तथा जम्मू और कश्मीर ग्रामीण रोजगार सृजन कार्यक्रम के तहत वित्तीय वर्ष 2024–25 में 1,372 इकाइयां स्थापित करने का लक्ष्य है। उद्यमिता इकोसिस्टम बनाने के लिए नई स्टार्टअप नीति पेश की जाएगी। स्वस्थ जम्मू–कश्मीर बनाने के लिए जम्मू और श्रीनगर में दो कैंसर संस्थानों को 2024–25 के दौरान पूरी तरह से चालू किया जाना, डीएनबी सीटों को 400 तक बढाना और 1.35 करोड़ आबादी के लिए आभा आईडी का निर्माण करना, एम्स, अवन्तीपोरा को मार्च 2025 तक कार्यात्मक बनाना है। इस प्रकार धारा 370 रूपी अभिशाप से मुक्त होकर जम्मू–कश्मीर आज विकास का वरदान पा चुका है।

एक पेड़ माँ के नाम

मीना चौबे

दश कूप सम वापी, दश वापी समोह्रदः।
दशह्रदसमः पुत्रो, दशपुत्रसमो द्रुमः।

दस कुओं के बराबर एक बावड़ी है, दस बावड़ियों के बराबर एक तालाब, दस तालाबों के बराबर एक पुत्र है और दस पुत्रों के बराबर एक वृक्ष है। मत्स्य पुराण का यह कथन हमें पेड़ लगाने और उनकी देखभाल करने के लिए प्रोत्साहित करता है। हमारे यहां किसी राजा की महानता का वर्णन करते हैं तो लिखते हैं कि उसने अपने शासन काल में सड़के बनवाईं थीं और उसके दोनो ओर घने छायादार वृक्ष लगवाए थे.. अतः साथियों हमारे जीवन मे वृक्षारोपण कई कारणों से आवश्यक है... इसमें

प्रथमः– ..वृक्षारोपण से जैव विविधता का संरक्षण यानि पर्यावरण संरक्षण होता है, वृक्ष वायु को शुद्ध करते हैं, ऑक्सीजन उत्पन्न करते हैं और जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित करने में मदद करते हैं।

दूसराः– वृक्ष जैव विविधता को बनाए रखने में मदद करते हैं, जिससे प्राकृतिक संतुलन बना रहता है।

तीसराः– वृक्षारोपण से मिट्टी का संरक्षण होता है, वृक्ष मिट्टी के क्षरण को रोकते हैं और मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार करते हैं।

चौथाः– वृक्षारोपण से जल संचयन में मदत मिलती है वृक्ष वर्षा जल को संचित करने में मदद करते हैं और जल चक्र को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

पांचवाः– वृक्षारोपण से आर्थिक लाभ भी होता है, वृक्षारोपण से लकड़ी, फल, और अन्य उत्पाद प्राप्त होते हैं, जो आर्थिक विकास में योगदान करते हैं।

छठाः– वृक्षारोपण से अनेक प्रकार से स्वास्थ्य लाभ मिलते है, वृक्ष तनाव कम करने, शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार करने में मदद करते हैं।

ऐसे अनेको कारणों से, वृक्षारोपण हमारे जीवन और धरती के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

ऐसे में पर्यावरण संरक्षण के लिए वृक्षारोपण करते समय सभी निम्नलिखित बिंदुओं का ध्यान रखना चाहिए..

हमे वृक्षारोपण के समय पेड़ो की सही प्रजाति का चयन कर ऐसे पेड़ लगाने चाहिए जो स्थानीय जलवायु और मिट्टी के अनुसार उपयुक्त हों। साथ ही पेड़ लगते वक्त सही स्थान का चयनकरना चाहिए पेड़ लगाने के लिए हमे ऐसा स्थान चुनना चाहिए जो पानी और धूप से सुरक्षित हो।

वृक्षारोपण के उपरांत वृक्षो को तीन बर्ष तक एक शिशु की भांति "गोद" लेकर पेड़ो को नियमित देखभाल करना चाहिए– जैसे कि पानी देना, खाद देना, और कीटनाशकों का उपयोग करना।

किसी अन्य जानवर द्वारा नुकसान से बचाने के लिए उसे घेर कर सुरक्षित करना ,

साथ ही वृक्षारोपण के लिए सामुदायिक सहयोग लेकर वृक्षारोपण के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि अधिक से अधिक लोग वृक्षारोपण में भाग ले सकें।

वृक्षारोपण के लिए जागरूकता फैलाना लोगों को वृक्षारोपण के महत्व के बारे में जागरूक करें, ताकि वे इसके प्रति जिम्मेदार बनें।

साथ ही वृक्षारोपण के लिए सरकारी योजनाओं का लाभ उठाना, सरकारी योजनाओं का लाभ उठाकर वृक्षारोपण में आर्थिक सहायता प्राप्त कर सकते हैं। अंत में आप सभी से आग्रह है कि इस पुण्य कार्य मे जन सहभागिता के द्वारा वृक्षों का संरक्षण करें और उन्हें कटने से बचाएं। ऐसा करने से ही हम प्रधानमंत्री जी के आह्वान एक पेड़ माँ के नाम को पूर्णता देते हुए वृक्षारोपण से पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान कर सकते हैं।

यूपी विधि विरुद्ध धर्म संपरिवर्तन प्रतिषेध अधिनियम, 2021

धर्म परिवर्तन पर यूपी सरकार ने जो विधेयक पेश किया है उसमे और सख्त कानून बनाया है जिससे संविधान के मूल सिद्धांतों की रक्षा हो सके। इसी कड़ी में यू0पी0 धर्म संपरिवर्तन प्रतिषेध विधेयक पेश किया गया है। जिसमें पहले से मौजूदा सजा प्रावधानों को और कड़ा किया गया है, जैसे कि अधिकतम सजा को 10 साल से बढ़ाकर आजीवन कारावास करना; शिकायत दर्ज करने की अनुमति देने के लिए दायरे को बढ़ाना; जमानत को और अधिक कठिन बनाना जैस प्रमुख बदलाव प्रस्तावित है क्यूंकी यूपी विधि विरुद्ध धर्म संपरिवर्तन प्रतिषेध अधिनियम, 2021 के तहत मौजूदा प्रावधान पर्याप्त नहीं हैं, इसलिए धर्मांतरण विरोधी कानून को और अधिक कठोर बनाया जा है।

इस विधेयक के तहत अवैध धर्म परिवर्तन के अपराध की संवेदनशीलता और गंभीरता, महिलाओं की गरिमा और सामाजिक स्थिति, अवैध धर्म परिवर्तन और जनसांख्यिकीय परिवर्तन में विदेशी और राष्ट्र विरोधी तत्वों को ध्यान में रखते हुए, उत्तर प्रदेश विधि विरुद्ध धर्म संपरिवर्तन प्रतिषेध अधिनियम में प्रदान किए गए जुर्माने और दंड की राशि को बढ़ाया गया है और जमानत की शर्तों को और भी कठोर बनाया गया है, अधिनियम के मौजूदा दंडात्मक प्रावधान नाबालिग, विकलांग, मानसिक रूप से विकलांग व्यक्ति, महिला या अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति से संबंधित व्यक्ति के संबंध में धार्मिक रूपांतरण और सामूहिक धर्मांतरण को रोकने और नियंत्रित करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं, इसलिए उपरोक्त अधिनियम में संशोधन करने की आवश्यकता थी:–

विधेयक में प्रस्तावित प्रमुख परिवर्तन इस प्रकार हैं:

- अधिनियम किसी भी पीड़ित व्यक्ति, उसके माता–पिता, भाई, बहन, विवाह या गोद लेने से संबंधित किसी भी व्यक्ति को अवैध धर्मांतरण के मामले में प्रथम सूचना रिपोर्ट (एफआईआर) दर्ज करने की अनुमति देता है।
- विधेयक इस प्रावधान के दायरे को बढ़ाकर "किसी भी व्यक्ति" को शामिल करता है. इसमें कहा गया है, "अधिनियम के प्रावधानों के उल्लंघन से संबंधित कोई भी जानकारी कोई भी व्यक्ति दे सकता है।"
- विधेयक में नए प्रावधान में कहा गया है कि कोई भी व्यक्ति जो धर्म परिवर्तन कराने के इरादे से किसी व्यक्ति को डराता है, हमला करता है या बल का प्रयोग करता है. विवाह का वादा करता है या फिर उकसाता है, किसी नाबालिग, महिला या व्यक्ति की तस्करी करने या अन्यथा उन्हें बेचने के लिए षड्यंत्र रचता है या प्रेरित करता है या इस संबंध में उकसाता है, या फिर षड्यंत्र करता है, उसे कम से कम 20 वर्ष के कठोर कारावास से दंडित किया जाएगा, जिसे आजीवन कारावास तक बढ़ाया जा सकता है।
- इस धारा के तहत लगाया गया जुर्माना पीड़ित को चिकित्सा व्यय और पुनर्वास के लिए दिया जाएगा. विधेयक में कहा गया है, "अदालत आरोपी द्वारा धर्म परिवर्तन के पीड़ित को देय उचित मुआवज़ा भी स्वीकृत करेगी, जो 5 लाख रुपये तक हो सकता है, जो जुर्माने के अतिरिक्त होगा।"
- विधेयक में एक अन्य प्रावधान यह भी है कि जो कोई भी व्यक्ति अवैध धर्म परिवर्तन के संबंध में किसी विदेशी या अवैध संस्था से धन प्राप्त करता है, उसे कम से कम सात वर्ष के कठोर कारावास से दंडित किया जाएगा, जिसे 14 वर्ष तक बढ़ाया जा सकेगा और उसे न्यूनतम 10 लाख रुपये का जुर्माना भी देना होगा।
- विधेयक के अनुसार, जो कोई भी नाबालिग, विकलांग या मानसिक रूप से विकलांग व्यक्ति, महिला या अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति के व्यक्ति के संबंध में प्रावधान का उल्लंघन करता है, उसे 14 साल तक के कठोर कारावास का सामना करना पड़ेगा, और उसे कम से कम 1 लाख रुपये का जुर्माना भी देना होगा. मौजूदा अधिनियम में 10 साल तक की सजा का प्रावधान है, जबकि न्यूनतम जुर्माना 25,000 रुपये निर्धारित किया गया है।

हर घर तिरंगा अभियान

भारतीय जनता पार्टी के राज्य मुख्यालय पर सोमवार को हर घर तिरंगा अभियान को लेकर कार्यशाला सम्पन्न हुई। पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी और प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह ने कार्यशाला में उपस्थित प्रतिनिधियों का मार्गदर्शन किया। कार्यशाला में प्रदेश पदाधिकारी, क्षेत्रीय अध्यक्ष, क्षेत्रीय प्रभारी, जिलाध्यक्ष, जिला प्रभारी, मोर्चों के प्रदेश अध्यक्ष व हर घर तिरंगा अभियान के क्षेत्र व जिलों के संयोजको सहित अन्य प्रमुख पार्टी पदाधिकारी उपस्थित रहे।

पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने पार्टी मुख्यालय पर कार्यशाला के बाद पत्रकारों से वार्ता करते हुए कहा कि भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता देशवासियों के साथ मिलकर विगत वर्षों से देश भर में हर्षोल्लास के साथ राष्ट्र की एकता एवं अखंडता के संकल्प की प्रतिबद्धता के साथ स्वतंत्रता दिवस को हर घर तिरंगा व तिरंगा यात्रा सहित विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से मनाते आ रहे हैं। देश के यशस्वी प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी ने मन की बात कार्यक्रम के 112वें संस्करण में कहा कि 15 अगस्त का दिन अब दूर नहीं है और अब तो 15 अगस्त के साथ एक और अभियान जुड़ गया है, हर घर तिरंगा अभियान। पार्टी ने उत्तर प्रदेश में 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस के दिन हर घर तिरंगा के संकल्प के साथ अभियान की विस्तृत रूपरेखा के लिए आज पार्टी के राज्य मुख्यालय पर कार्यशाला आयोजित की गई। पार्टी के निर्णयानुसार 11, 12, व 13 अगस्त 2024 को प्रत्येक विधानसभा में तिरंगा यात्रा युवा मोर्चा के कार्यकर्ता ने निकाला।

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने कहा कि 12 से 14 अगस्त, 2024 तक पार्टी के पदाधिकारी, कार्यकर्ता, जनप्रतिनिधि स्थानीय नागरिकों के साथ मिलकर महापुरुषों की प्रतिमाओं एवं स्मारकों के आस–पास स्वच्छता का कार्यक्रम चलाया एवं अमर बलिदानियों, महापुरूषों की प्रतिमाओं पर माल्यार्पण करके कृतज्ञ नमन किया।

श्री चौधरी ने कहा कि 13, 14 व 15 अगस्त, 2024 को प्रत्येक पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता जन–जन से सम्पर्क करके प्रत्येक घर एवं व्यवसायिक केन्द्रों

हर घर तिरंगा अभियान के लिए जिला स्तर पर 6 से 7 अगस्त तक जिला कार्यशाला आयोजित की जायेंगी। इसके साथ ही 8 से 10 अगस्त तक मंडल स्तर पर बैठकें आयोजित की जायेंगी। उन्होंने कहा कि अभियान का प्रदेश संयोजक प्रदेश महामंत्री श्री अनूप गुप्ता को बनाया गया है। वहीं प्रदेश मंत्री श्री शंकर गिरि, श्री विजय शिवहरे, श्री बसन्त त्यागी तथा प्रदेश प्रवक्ता डा.समीर सिंह को अभियान का प्रदेश सहसंयोजक बनाया गया है। इससे पूर्व हर घर तिरंगा अभियान की प्रदेश कार्यशाला में प्रशिक्षण देते हुए प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह ने कहा कि हर घर तिरंगा अभियान के लिए बूथ स्तर तक कार्ययोजना बनाकर कार्य करना है। प्रत्येक कार्यक्रम से स्थानीय नागरिकों को जोड़ना है। हर घर पर तिरंगा फहराए इसके लिए सभी पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं को योजनाबद्ध तरीके से जिम्मेदारी सौंपकर काम करना है। उन्होंने कहा कि समय से जिला व मंडलों की बैठकें सम्पन्न कर शक्तिकेन्द्र व बूथ स्तर पर अभियान को प्रारम्भ करना है।

पूर्व योजना, पूर्ण योजना एवं कार्यशाला के परिणाम स्वरूप प्रदेश के पौने दो करोड़ घरों पर तिरंगा फहराया गया।

पर तिरंगा फहराने हेतु अपनी भागीदारी सुनिश्चित करेंगे। पार्टी 14 अगस्त को विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस पर प्रत्येक जनपद में गोष्ठी का आयोजन करेगी और विभाजन की त्रासदी पर चर्चा करेगी। इसके साथ ही पार्टी विभाजन विभीशिका स्मृति दिवस पर मौन जुलूस भी निकालेगी तथा विभाजन की विभीशिका पर प्रदर्शनी के माध्यम से भी नागरिकों के समक्ष चर्चा किया। जिला केंन्द्रो पर संगोष्ठी करते हुए विभाजन के काले अध्याय को याद करते हुए लाखों की संख्या में मारे गये लोगों को श्रद्धांजलि दी जायेगी। 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस के कार्यक्रम में पार्टी के पदाधिकारी बड़े पैमाने पर जगह–जगह सार्वजनिक कार्यक्रमों में भाग लेंगे। प्रत्येक बूथ के हर घर पर तिरंगा फहरे इसके लिए पार्टी के कार्यकर्ता घर–घर संपर्क कर लोगों को प्रेरित भी किये।

विभाजन विभीषिका : पंजाब और बंगाल में लाशों के ढेर

रमेश शर्मा

पन्द्रह अगस्त 1947 को भारतीय स्वतंत्रता और यह वर्तमान स्वरूप सरलता से नहीं मिला। यह दिन मानों रक्त के सागर से तैरकर आया है। बलिदानियों ने जितना बलिदान विदेशी आक्रांताओं से मुक्ति के लिये दिया। उतना ही बलिदान अपने स्वत्व को सुरक्षित रखने के लिये दिया है और स्वतंत्रता के साथ हुये भारत विभाजन में तो भीषण नरसंहार हुआ ही था लेकिन इससे पहले भारत विभाजन की माँग को बल देने के लिये भी हत्यारों ने लाशों के ढेर लगा दिये थे। यह नरसंहार 16 अगस्त 1946 से शुरु हुआ और मात्र पाँच दिन में बंगाल और पंजाब में लाशों के इतने ढेर लग गये थे कि उन्हे उठाने वाले भी नहीं बचे थे। लोग हत्यारों के भय से भागकर जंगलों और अन्य प्रांतों में भाग गये थे। लाशों की सड़ाँध से बीमारियाँ और मौतें हुईं सो अलग। इन पर लगाम 21 अगस्त के बाद लग सकी।

अपने लिये पृथक देश पाकिस्तान की माँग को सशक्त बनाने केलिये मुस्लिम लीग ने इस डायरेक्टर एक्शन का आव्हान अचानक नहीं किया था। इसकी तैयारी सालों से की थी। एक अलग मुस्लिम राष्ट्र का वातावरण बनना 1887–88 के आसपास से आरंभ हो गया था। इसकी झलक सर सैय्यद अहमद के भाषणों से मिलती है। इसे आकार देने केलिये 1906 में मुस्लिम लीग अस्तित्व में आई और 1930–31 में पाकिस्तान नाम भी सामने आ गया था। उसी प्रकार इस डायरेक्ट एक्शन की तैयारी भी वर्षो से की जा रही थी। 1931 में मुस्लिम लीग ने बाकायदा सशस्त्र सैनिकों की भर्ती आरंभ कर दी थी। इसे "मुस्लिम लीग आर्म गार्ड" नाम दिया गया था। 1944 तक अलग–अलग नगरों में इनकी संख्या 22 हजार तक पहुँच गई थी। फरीदपुर में इसका प्रशिक्षण केन्द्र था। इसके एक प्रशिक्षण शिविर में बंगाल के मुख्यमंत्री सोहरावर्दी भी उपस्थित थे उन्होंने इस इन "आर्म गार्ड" को पाकिस्तान केलिए "उपलब्धि" बताया था। 1946 में ऐसे ही एक प्रशिक्षण शिविर में अब्दुल मोबेन खान ने संख्या बढ़ाकर एक लाख करने की आवश्यकता बताई थी। बंगाल में इनकी गतिविधि का केन्द्र कलकत्ता था। इसीलिए बंगाल का विवरण भारत में है। किंतु पंजाब और सिंध में इसका केन्द्र रावलपिंडी, लाहौर और मुल्तान में था। यह क्षेत्र अब पाकिस्तान में हैं इसलिये वहाँ का कोई वि वरण अब भारत में नहीं मिलता।

भारत विभाजन के लिये अंग्रेज और मुस्लिम लीग एक राय थे पर काँग्रेस में कुछ असमंजस थी इसलिए निर्णय की घोषणा में विलंब हो रहा था। काँग्रेस के हर नेता ने पहले विभाजन का विरोध किया था। काँग्रेस पर दबाव बनाने के लिये मुस्लिम लीग ने डायरेक्ट एक्शन के नाम पर यह नरसंहार किया था। डायरेक्ट एक्शन की घोषणा करने के पहले लीग ने खुली चेतावनी दी थी। जुलाई 1946 में मोहम्मद अली जिन्ना ने बॉम्बे में अपने घर पर आयोजित आयोजित पत्रकार वार्ता में घोषणा की थी कि– "मुस्लिम लीग संघर्ष शुरू करने की तैयारी कर रही है" और "एक योजना भी तैयार कर ली है" उन्होंने स्पष्ट कहा था – "यदि मुसलमानों को अलग पाकिस्तान नहीं दिया गया तो वे "सीधी कार्रवाई" शुरू करेंगे"। और अगले दिन जिन्ना ने 16 अगस्त 1946 को "प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस" होने की घोषणा कर दी। जिन्ना ने कांग्रेस को चेतावनी दी– "हम युद्ध नहीं चाहते हैं, यदि आप युद्ध चाहते हैं तो हम आपके प्रस्ताव को बिना किसी हिचकिचाहट के स्वीकार करते हैं। हमारे पास या तो एक विभाजित भारत होगा या एक नष्ट भारत होगा" जिन्ना की इस शब्दावली में भविष्य की पूरी तस्वीर का संकेत है। इसके साथ मुस्लिम लीग के सभी वरिष्ठ नेता संभावित पाकिस्तान के पूरे क्षेत्र में सक्रिय हो गये। बंगाल में इस अभियान की कमान मुख्यमंत्री सोहरावर्दी के हाथ में थी।

मुस्लिम लीग की इस चेतावनी के साथ ही बंगाल और पंजाब के मुस्लिम आबादी बाहुल्य इलाकों से हिन्दुओं का पलायन आरंभ हो गया था। हिन्दुओं में इस भय का कारण बंगाल और पंजाब में निरंतर बढ़ती साम्प्रदायिक घटनाएँ थीं। जिनमें 1930 के बाद तेजी आई। जिसमें पुलिस तटस्थ रहती। पुलिस के तटस्थ रहने का कारण यह था कि जहां मुस्लिम लीग समर्थक सरकारें थीं वहां पाकिस्तान समर्थक नौजवानों को योजनानुसार पुलिस में भर्ती किया गया था। और अन्य प्रांतों में सशस्त्र बालेन्टियर तैयार किये थे। इसलिये इन क्षेत्रों में हिन्दुओं में

भारत विभाजन के लिये अंग्रेज और मुस्लिम लीग एक राय थे पर काँग्रेस में कुछ असमंजस थी इसलिए निर्णय की घोषणा में विलंब हो रहा था।

भय होना स्वाभाविक था और पलायन आरंभ हो गया था। अंततः 1946 में 16 अगस्त का दिन आया। धर्म स्थलों सबने मिलकर इतनी हिंसा की जिसे देखकर समस्त भारत वासियों की आत्मा कांप गयी। और अंत में बंटवारे का मसौदा तैयार हो गया। पाकिस्तान की माँग के लिये हुआ यह डायरेक्ट एक्शन कितना भीषण था इस का अंदाजा इस बात से ही लगाया जा सकता है कि केवल तीन दिन में बंगाल और पंजाब की गलियाँ लाशों से पट गयीं थीं। लाखों घर तोड़ डाले गये थे लूट और महिलाओं से किये गये अत्याचार की गणना ही न हो सकी। यह डायरेक्ट एक्शन देश भर में अलग–अलग स्थानों पर अलग दिन चला तो कहीं एक दिन कहीं सप्ताह भर। कहीं कहीं तो तनाव में महीनों रहा। बंगाल के कंट्रोल रूम का नियंत्रण सीधा मुख्यमंत्री सोहरावर्दी के हाथ में था। वे वहीं बैठकर निर्देश दे रहे थे। अंत में 21 अगस्त को वायसराय ने बंगाल का प्रशासन अपने हाथ में लिया और सेना भेजी। तब 22 अगस्त से स्थिति नियंत्रण में आना आरंभ हुई। अलग पाकिस्तान की मांग पर अड़े मुस्लिम लीग और जिन्ना की पीठ पर अंग्रेजों का हाथ था। जिन्ना और उनकी टीम को हर काम करने और अभियान चलाने की मानों खुली छूट थी। इसका पूरा फायदा मुस्लिम उठा रही थी । बंगाल की पुलिस के साथ मुस्लिम लीग के सशस्त्र नौजवान सक्रिय थे तो उत्तर प्रदेश बिहार आदि अनेक स्थानों में लीग के सशस्त्र नौजवान खुले आम हिंसा कर रहे थे। ये नौजवान इशारा मिलते ही मैदान में आकर डट जाते थे। इस डायरेक्टर एक्शन में बंगाल में ढाका, कलकत्ता चटगाँव के अलावा पंजाब सिंध में रावलपिंडी, मुल्तान, लाहौर, पेशावर, कैम्पबेलपुर, झेलम आदि स्थानों पर भारी हिंसा हुई। इस हिंसा के संख्या के अलग अलग दावे हैं। पंजाब में यह संख्या चालीस हजार तक अनुमानित है तो और बंगाल में बाईस हजार। मुस्लिम लीग के प्रभाव वाले स्थानों से जगह जगह एक निश्चित समय पर सशस्त्र भीड़ निकली। जो दिखा उसे मार डाला गया। पंजाब में कहीं कहीं प्रतिरोध भी हुआ और दंगे शुरु हुये लेकिन बंगाल में कोई प्रतिरोध न हो सका। वहां हिंसा एक तरफा रही थी इसका कारण यह था कि बंगाल में सत्ता के सूत्र सोहरावर्दी के हाथ में थे। उन्होंने अवकाश घोषित कर दिया था। सरकारी तंत्र में मौजूद जिन्ना और पाकिस्तान समर्थकों को अवसर मिला। सरकारी सैनिक भी हथियार लेकर निकल पड़े, जो गैर दिखा उसे मार डाला गया, मौत का तांडव हो गया। अकेले कलकत्ता, नौवाखाली और ढाका में सोलह से 18 अगस्त के बीच बीस हजार मौतों का अनुमान है। जबकि पंजाब और बंगाल में लगातार हुये इस कत्ले–आम के सारे आकड़े जोड़े तो एक लाख तक होने का अनुमान हैं। दहशत इतनी ज्यादा कि लोग लाशें उठाने तक न आये। लाशे हफ्तों तक पड़ी सड़ती रहीं। उससे बीमारियाँ फैली, घायलों की जो बाद में मृत्यु हुई उन आँकड़ों का विवरण कहीं नहीं है। अधिकांश विवरण तो पाकिस्तान चला गया। जो बचा है वह कलकत्ता, उत्तर प्रदेश, हैदराबाद, बिहार आदि के हैं।

अंततः साल भर बाद भारत विभाजित हो गया। पाकिस्तान को पंजाब और बंगाल के आधे आधे हिस्से दिये गये। पाकिस्तान समर्थक पूरा पंजाब और पूरा बंगाल चाहते थे। जब बातचीत से बात न बनी और इन दोनों प्रांतों का विभाजन निश्चित हुआ तब पाकिस्तान समर्थकों ने पुनः हिंसा शुरू करदी। वे हिंसा के द्वारा अधिक से अधिक भूमि पर कब्जा करने की रणनीति उतर आये। वे पुनः मारकाट पर उतर आये। आजादी के समझौते के अनुरूप ब्रिटिश सेना दस अगस्त से अपना कैंप खाली करने लगी थी। और तेरह अगस्त तक लगभग ज्यादा तर कैंप खाली हो गये थे। इसका एक कारण यह भी था कि 1857 की क्रान्ति में अंग्रेज़ी सैनिक निशाना बनाये गये थे। इसलिये अंग्रेजी हुकूमत को अपने सैनिकों को सुरक्षित स्थानों पर पहले भेजना था। इससे हिंसक तत्वों का हौसला बढ़ा और उन्होंने फिर मारकाट शुरु कर दी। नतीजा क्या हुआ कितने लोग मारे गये यह सब इतिहास के पन्नो में दर्ज है। पंजाब और बंगाल की गलियाँ एक बार फिर लाशों से पट गईं। ये खूनी गलियों में से ज्यादातर अब पाकिस्तान में हैं और कुछ बंगलादेश में।

निसंदेह भारत विश्व शक्ति बनने की ओर अग्रसर हो रहा है पर इतिहास की घटनाओं से सावधान होकर आगे बढ़ने क आवश्यकता है। इतिहास की घटनाएँ समूचे भारत वासियों को जाग्रत और संगठित रहने का संदेश देतीं हैं। जो घट गया है उसे बदला नहीं जा सकता है। आज अतीत की घटनाओं से सबक लेकर भविष्य की राह बनाने का समय है। सुरक्षित भविष्य के लिये भारत वासियों को संगठित रहने का संकल्प लेना होगा और अपने बीच किसी भी भेद कराने वाली बातों से सतर्क रहना होगा। तभी अमृत महोत्सव सार्थक हो सकेगा।

स्नेह एवं सुरक्षा का महापर्व ''रक्षा बंधन''

डा. हरनाम सिंह

अपनी श्रेष्ठ परंपराओं का रक्षण करने के लिए ही रक्षाबंधन उत्सव मनाते है।धर्मो रक्षति रक्षितः अर्थात् हम सब मिलकर धर्म की रक्षा करें। समाज में मूल्यों का रक्षण करें। भाई बहन के स्नेह व समाज में परस्पर प्रेम, सहयोग, विश्वास, समरसता, सुरक्षा का महापर्व हैरक्षा बंधन। पर्व– त्यौहार सामाजिक समरसता एवं सांस्कृतिक मूल्यों को बढ़ावा देते हैं। रक्षाबंधन उत्सव इसी परम्परा की एक सशक्त कड़ी है। पर्व यानी जो पूर्ण कर दे, तृप्त कर दे, उत्साहित कर दे। हर व्यक्ति समाज का ऋणी हैं निरपेक्ष भावना से समाज हित का कार्य कर वह ऋण चुकाने का दायित्व समाज के हर व्यक्ति को अपना प्रथम कर्तव्य मानकर निभाना चाहिए। रक्षाबंधन केवल एक त्योहार नहीं बल्कि हमारी परंपराओं का प्रतीक है, जिसने आज भी हमें अपने परिवार व संस्कारों से जोड़े रखा है। राखी का वास्तविक अर्थ है कि किसी को अपनी रक्षा के लिए बांध लेना। रक्षाबंधन भाई–बहन के स्नेह व ममता की डोर में बंधा ऐसा पर्व है, जिसे परस्पर विश्वास की डोर ने सदियों से बांध रखा है। सामान्यतः राखी के त्योहार में बहनें भाई को राखी बांधती हैं। लेकिन राखी के त्योहार को और भी तरिके से मनाया जाता है, जैसे पुत्री अपने पीता को, शिष्य अपने गुरु को और औरतें उस आदमी को बाँध सकती है, जो कि उसकी रक्षा कर सके। इस पर्व को सार्वजनिक रूप से लोगों के बीच में भी मनाया जाता है। प्रकृति संरक्षण के लिए वृक्षों को भी राखी बांधने की परंपरा का आरंभ हो गया है। सगे भाई बहन के अतिरिक्त अनेक भावनात्मक रिश्ते भी इस पर्व से बंधे होते हैं जो धर्म, जाति और देश की सीमाओं से भी परे होते हैं। रक्षा बंधन आत्मीयता और स्नेह के बंधन से रिश्तों को मजबूती प्रदान करने का पर्व है। भाव यही है कि सम्पूर्ण समाज, सम्पूर्ण समाज की रक्षा का व्रत ले। लोग श्रेष्ठ जीवन मूल्यों की रक्षा का व्रत लें।

जाति धर्म के बंधनों से बिल्कुल मुक्त यह त्योहार सौहार्द, सद्भाव, और सद्भावना की भावना को बढ़ावा देकर मानव समुदाय को एकता के सूत्र में बांधने की प्रेरणा देता है । समरसता,राष्ट्रभक्ति व राष्ट्रीयता के अखण्ड प्रवाह का पर्व रक्षाबंधन कर्तव्यों के द्वारा अपनी शक्ति और सामर्थ्य की रक्षा हेतु संकल्प लेने के लिए भी प्रेरित करता है। राखी बांधना सिर्फ भाई–बहन के बीच का कार्यकलाप नहीं है। राखी देश की रक्षा, पर्यावरण की रक्षा, हितों की रक्षा आदि के लिए भी बांधी जाती है। विश्वकवि रवींद्रनाथ ठाकुर ने इस पर्व पर बंग–भंग के विरोध में जनजागरण किया था और इस पर्व को एकता और भाईचारे का प्रतीक बनाया था। रक्षा सूत्र सम्मान और आस्था प्रकट करने के लिए भी बांधा जाता है। रक्षाबंधन का महत्व आज के परिप्रेक्ष्य में अत्यधिक इसलिए बढ़ गया है, क्योंकि आज मूल्यों के क्षरण के कारण सामाजिकता सिमटती जा रही है और प्रेम व सम्मान की भावना में भी कमी आ रही है। यह पर्व आत्मीय बंधन को मजबूती प्रदान करने के साथ–साथ हमारे भीतर सामाजिकता का विकास करता है। यह त्योहार परिवार, समाज, देश और विश्व के प्रति अपने कर्तव्यों को पूरा करने को याद दिलाता है।रक्षाबंधन के दिन अपने कर्तव्यों को ईमानदारी से पूरा करने का भी संकल्प ले। संकल्प नारी की सुरक्षा का, अपने देश की सुरक्षा का, अपनी प्रकृति की रक्षा का, अपने सद्गुणों की रक्षा का। वैदिक काल में जब लोग ऋषियों के पास आशीष लेने जाया करते थे, तो ऋषिगण उनकी कलाईयों पर रक्षा – बंध बांधते थे । वैदिक मन्त्रों से अभिमंत्रित मोली या सूत का धागा बंधकर उनकी रक्षा की मंगलकामना करते थे ।

रक्षाबंधन का उल्लेख पौराणिक कथाओं में भी मिलता है। इसका सम्बन्ध देवराज इन्द्र से भी है । कहतें है कि एक बार देवराज इंद्र और दानवों के बीच में भीषण युद्ध हुआ था।जब देवराज इन्द्र की हार होने लगी थीतब देवराज इन्द्र की पत्नी शुचि ने गुरु बृहस्पति के कहने पर देवराज इंद्र की कलाई पर रेशम का धागा मंत्रों की शक्ति से पवित्र कररक्षासूत्र बांधा था। तब जाकर समस्त देवताओं के प्राण बच पाए थे।जिस दिन यह कार्य किया गया उस दिन श्रावण पूर्णिमा का दिन था। श्रावण पूर्णिमा के दिन से ही यह धागा –रक्षासूत्र बांधने की

प्रथा चली आ रही है।

पुराणों के अनुसार रक्षा बंधन पर्व लक्ष्मी जी का राजा बली को राखी बांधने से भी जुडा हुआ है। एक बार राजा बलि ने स्वर्ग की प्राप्ति के लिए यज्ञ करने लगे।राजा बलि कि इस मनोइच्छा का भान होने पर देवताओं के राजा इन्द्र चिंतित हो उठे।घबरा कर इन्द्र भगवान विष्णु की शरण में जाते हैं और उनसे स्वर्ग बचने की प्राथना करते हैं। जिसके फलस्वरूप भगवान विष्णु वामन अवतार लेकर, ब्राह्माण वेश धर कर, राजा बलि के यहां भिक्षा मांगने पहुचे। ब्राह्माण बने वामन अवतार श्री विष्णु ने भिक्षा में तीन पग भूमि राज बलि से मांग ली। राजा बलि अपने वचन पर अडिग रहते हुए, श्री विष्णु को तीन पग भूमि दान में दे दी। इसपर वामन रुप में भगवान ने एक पग में स्वर्ग ओर दूसरे पग में पृथ्वी को नाप लिया। अभी तीसरा पैर रखना शेष था। बलि के सामने संकट उत्पन्न हो गया। ऐसे मे राजा बलि अपना वचन नहीं निभाते हुए अपना सिर भगवान के आगे कर दिया और कहां तीसरा पग आप मेरे सिर पर रख दीजिए। वामन भगवान ने ठीक वैसा ही किया, श्री विष्णु के पैर रखते ही, राजा बलि परलोक पहुंच गये।बलि के द्वारा वचन का पालन करने पर, भगवान विष्णु अत्यन्त प्रसन्न्द हुए, उन्होंने आग्रह किया कि राजा बलि उनसे कुछ मांग लें। इसके बदले में बलि ने रात दिन भगवान को अपने सामने रहने का वचन मांग लिया।श्री विष्णु को अपना वचन का पालन करते हुए, राजा बलि का द्वारपाल बनना पडा। इस समस्या के समाधान के लिये लक्ष्मी जी को नारद जी ने एक उपाय सुझाया। लक्ष्मी जी ने राजा बलि के पास जाकर उसे राखी बांध अपना भाई बनाया और उपहार स्वरुप अपने द्वारपाल बने अपने पति भगवान विष्णु को मांग कर अपने साथ ले आई। इस दिन का यह प्रसंग है, उस दिन श्रावण मास की पूर्णिमा थी। उस दिन से ही रक्षा बंधन का पर्व मनाया जाने लगा।

राखी से जुडा हुआ एक प्रसंग महाभारत में भी पाया जाता है। शिशुपाल का वध करते समय कृष्ण जी की तर्जनी अंगूली में चोट लग गई, जिसके फलस्वरुप अंगूली से लहू बहने लगा। लहू को रोकने के लिये द्रौपदी ने अपनी साडी की किनारी फाडकर, श्री कृष्ण की अंगूली पर बांध दी।इसी ऋण को चुकाने के लिये श्री कृष्ण ने चीर हरण के समय दौपदी की लाज बचाकर इस ऋण को चुकाया था ।इस दिन की यह घटना है उस दिन भी श्रावण मास की पूर्णिमा ही थी।

रक्षाबंधन का यह पर्व पुराणों से होता हुआ, महाभारत अर्थात द्वापर युग में गया, और आज आधुनिक काल में भी इस पर्व का महत्व कम नहीं हुआ है। भारत के कई क्षत्रों में इसे अलग – अलग नामों से अलग – अलग रुप में मनाया जाता है। जैसे उतरांचल में इसे श्रावणी नाम से मनाया जाता है।प्राचीन काल से यह पर्व भाई–बहन के निश्चल स्नेह के प्रतीक के रुप में माना जाता है। आधुनिक समय में रक्षाबंधन सीख डे रहा है कि समाज में मूल्यों का रक्षण करें। अपनी श्रेष्ठ परंपराओं का रक्षण करें। हर व्यक्ति समाज का ऋणी हैं। निरपेक्ष भावना से समाज हित का कार्य कर वह ऋण चुकाने का दायित्व समाज के हर व्यक्ति को अपना प्रथम कर्तव्य मानकर निभाना चाहिए। सशक्त, समरस एवं संस्कार संपन्न समाज ही किसी देश की शक्ति का आधार होता है। यह पर्व अपनी वास्तविक गरिमा में हो जाए, तो समाज की बहुत सी भीषण समस्याओं का उन्मूलन सहज ही हो जाएगा।

(लेखक लखनऊ विश्वविद्यालय, अर्थशास्त्र विभाग में सहायक आचार्य है।)

सर्व स्पर्शी-सर्व व्यापी सदस्यता अभियान

भारतीय जनता पार्टी उत्तर प्रदेश की सदस्यता अभियान कार्यशाला प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी की अध्यक्षता में इन्दिरा गांधी प्रतिष्ठान, गोमती नगर, लखनऊ में सम्पन्न हुई। 01 सितम्बर से शुरू होने वाला भाजपा का सदस्यता अभियान पूरे प्रदेश में व्यापक स्तर पर चलाया जाएगा। सदस्यता अभियान में 01 सितम्बर से देश का कोई भी नागरिक भाजपा द्वारा सदस्यता के लिए जारी किए गए नम्बर 8800002024 पर मिस्डकॉल, क्यूआर कोड, नमो एप तथा भाजपा की वेबसाइट के माध्यम से सदस्यता ग्रहण कर सकता है। कार्यशाला में उपस्थित प्रतिनिधियों को मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ, राष्ट्रीय महामंत्री व राष्ट्रीय सदस्यता अभियान के सहसंयोजक श्री दुश्यंत गौतम, पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी, प्रदेश के उपमुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य व श्री ब्रजेश पाठक, प्रदेश के सहप्रभारी श्री संजीव चौरसिया तथा प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह ने संबोधित किया।

इस अवसर पर पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ. रमापति राम त्रिपाठी, श्री सूर्य प्रताप शाही, श्री स्वतंत्र देव सिंह, पूर्व उपमुख्यमंत्री डॉ. दिनेश शर्मा जी सहित उत्तर प्रदेश से पार्टी के राष्ट्रीय पदाधिकारी, प्रदेश पदाधिकारी, क्षेत्रीय अध्यक्ष, क्षेत्रीय महामंत्री, जिला प्रभारी, जिलाध्यक्ष, मोर्चो के प्रदेश अध्यक्ष, प्रदेश मीडिया प्रभारी, सहप्रभारी, प्रदेश प्रवक्ता, पार्टी के राज्यसभा व लोकसभा में सांसद, विधायक, विधान परिषद सदस्य, पार्टी संगठन के विभागो के संयोजक सहसंयोजक, प्रकोष्ठों के संयोजक सहसंयोजक, जिला पंचायत अध्यक्ष, नगर निगमों के महापौर, आईटी व सोशल मीडिया के संयोजक व सहसंयोजक और बोर्ड, निगम व आयोगों के अध्यक्ष व उपाध्यक्ष सहित अन्य प्रमुख पार्टी पदाधिकारी सम्मिलित हुए।

मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा कि अयोध्या, गोमतीनगर व कन्नौज की घटना ही समाजवादी पार्टी का 'नवाब ब्रांड' है। कोलकाता की अराजकता पर चिकित्सक व आधी आबादी आंदोलित है, लेकिन सपा मुखिया दुष्कर्मियों व सरकार का बचाव कर रहे हैं। सपा मुखिया का बेशर्मीपूर्ण बयान ही उनकी पार्टी का असली चेहरा है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में साजिश हो रही है। इसे समझने की आवश्यकता है। मुख्यमंत्री ने आरोप लगाया कि बहुसंख्यक समाज के विपरीत कथित धर्मनिरपेक्षता की राजनीति करने वाले दलों के स्वर भारत की मूल विचारधारा पर होने वाले हमले में नहीं निकलते। उन्होंने कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ाते हुए कहा कि हमें बैकफुट पर जाने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि विपक्ष के कारनामों की पोल खोलने की जरूरत है। मुख्यमंत्री कांग्रेस और समाजवादी पार्टी पर हमलावर रहे। उन्होंने कार्यकर्ताओं का आह्वान किया कि इस अभियान को सफलता की नई ऊंचाइयों तक पहुंचाइए।

मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि कोलकाता की अराजकता पर चिकित्सक व आधी आबादी आंदोलित है, लेकिन सपा मुखिया दुष्कर्मियों व सरकार का बचाव कर रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कार्यकर्ताओं से कहा कि उत्तर प्रदेश में साजिश हो रही है। इसे समझने की आवश्यकता है।

मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि हर घर तक पहुंचिए और परिवार के हर सदस्यों से संवाद बनाइए। उनसे कहिए कि उपचुनाव में विपक्षी दलों के नेताओं से पूछें कि आखिर एक–एक लाख रुपये के बॉन्ड भरवाए गए थे। वह कहां हैं। सोशल मीडिया से लेकर आमजन के बीच कांग्रेस व सपा के झूठ का पर्दाफाश कीजिए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राजनीतिक अस्थिरता का दृश्य श्रीलंका व बांग्लादेश में दिखा। भारतीय राजनीति में लोकसभा चुनाव के छह माह पहले से इसकी सुगबुगाहट देखने को मिल रही थी। सोशल मीडिया पर अफवाह फैलाई जा रही थी। यह भाजपा व हमारी विचारधारा को रोकने के षडयंत्रों की ओर

इशारा करती है। यदि देश में सक्षम नेतृत्व न होता तो वे अस्थिरता पैदा करने में सफल हो गए होते। देश में राजनीतिक स्थिरता के लिए भारतीय जनता पार्टी आवश्यक है।

मुख्यमंत्री श्री योगी ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी 2014 में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में देश ही नहीं, बल्कि दुनिया का सबसे बड़ा राजनीतिक दल बना। आमजन के मन में जिज्ञासा है कि भाजपा कर्मठ कार्यकर्ताओं व सक्षम नेतृत्व के बल पर सबसे बड़ा राजनीतिक दल नहीं होता तो तय था कि 2024 में जिस प्रकार के अंतरराष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तर के षडयंत्र हुए थे, वे सफल होकर भारत को लंबे समय तक अस्थिरता के दौर में ढकेलने का कार्य करते।

मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि भाजपा मूल्यों व आदर्शों की राजनीति करने वाला एकमात्र दल है। विरोधी विचारधारा के लोग भी भाजपा के कैडर, अनुशासन, संगठन, कार्यपद्धति व कार्यक्रम को मानते हैं। भाजपा के पास कैडर बेस्ड पार्टी का स्ट्रक्चर है। देश में जब भी चुनौती आती है तो यह कैडर काम करता है। दल से बढ़कर देश है, संकट के समय इस भाव के साथ भाजपा का कार्यकर्ता सेवा के लिए तैयार रहता है। कोरोना में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के आह्वान पर 'सेवा ही संगठन' के संकल्प के साथ भाजपा कार्यकर्ता पीड़ितों के साथ खड़ा रहा। आपदा, त्रासदी, बाढ़, भूकंप आदि के समय भी संगठनात्मक ढांचा समर्पित भाव के साथ सेवा करता दिखता है।

हर बूथ पर 200 सदस्य बनाना है। इसके लिए कार्यकर्ता गांवों में अलग-अलग तबकों के बीच जाएं और लेखक, साहित्यकार, समाज सुधारक, किसान, युवा, सेवानिवृत्त सैनिक समेत हर वर्ग को जोड़ें।

मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि हर व्यक्ति भाजपा के साथ जुड़ना चाहता है। मुख्यमंत्री ने अपील की कि एक मोबाइल फोन से एक ही सदस्य बनाएं। हर बूथ पर 200 सदस्य बनाना है। इसके लिए कार्यकर्ता गांवों में अलग–अलग तबकों के बीच जाएं और लेखक, साहित्यकार, समाज सुधारक, किसान, युवा, सेवानिवृत्त सैनिक समेत हर वर्ग को जोड़ें, सूची बनाएं। मलिन–दलित बस्तियों में जाकर पहले उनकी सुनिए, फिर अपनी कहिए। केंद्र व राज्य की योजनाओं, रोजगार व कनेक्टिविटी से अवगत कराइए। संवाद सदस्यता अभियान के जरिए जनता से जुड़िए। आधी आबादी भाजपा से जुड़ना चाहती है। मुख्यमंत्री ने कार्यकर्ताओं को मंत्र दिया कि घर–घर जाएं और सिर्फ मुखिया से ही नहीं, बल्कि हर सदस्य से मिलें। महिला मोर्चा की पदाधिकारी महिलाओं तथा युवा मोर्चा के कार्यकर्ता युवाओं से मिलें।

मुख्यमंत्री ने बताया कि पहली से 25 सितंबर तक पहले चरण का अभियान चलेगा। द्वितीय चरण पहली से 15 अक्टूबर तक चलेगा और 15 से 31 अक्टूबर तक सक्रिय सदस्यता का अभियान चलेगा। सक्रिय सदस्य के लिए आवश्यक होगा कि वह 100 सदस्य बनाया हो। बूथशः फिजिकल वेरीफिकेशन कर सकें तो कोई अफवाह व षडयंत्र चुनौती नहीं रह पाएगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि चुनाव में सपा व कांग्रेस समाज के बड़े तबके को गुमराह करने में सफल रहे। भाजपा जातिवादी नहीं, बल्कि सर्वसमावेशी पार्टी है। हमें सर्वसमाज के पास जाना है। हमारे लिए देश प्रथम है। भाजपा से समाज व देश को अपेक्षाएं हैं। मुख्यमंत्री ने कार्यकर्ताओं से कहा कि भाजपा पर संविधान बदलने, आरक्षण समाप्त करने का आरोप लगाने वालों को जवाब दीजिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि सपा कांग्रेस का पिछलग्गू बनकर कार्य कर रही है।

मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि 2047 तक भाजपा को मजबूत बनाना है तो भारतीय जनता पार्टी को सशक्त बनाना होगा। आमजन का विश्वास है कि भाजपा सशक्त होगी तो भारत मजबूत होगा। उन्होंने कहा कि दुनिया भारत की प्रगति देख रही है। 2004 में भारत की अर्थव्यवस्था 12वें व 2014 में 10वें नंबर पर थी। अभी पांचवें नंबर पर है। तीन वर्ष के अंदर भारत तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि देश में समाज के हर तबके को बिना भेदभाव शासन की योजना का लाभ मिला। जाति–मजहब नहीं, बल्कि सबका साथ–सबका विकास की भावना के साथ योजनाओं का लाभ दिया गया।

भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री एवं राष्ट्रीय सदस्यता सह प्रभारी श्री दुष्यंत गौतम ने कहा कि कभी संसद में हमारी पार्टी के दो सांसद हुआ करते थे और आज माननीय मोदी जी के नेतृत्व में हमनें लगातार तीसरी बार केन्द्र में सरकार बनाई है। हमने हम दो हमारे दो का व्यंग सुना। हमने राम मंदिर बनायेंगे तारीख़ नहीं बतायेंगे के भी ताने सुने, लेकिन हम संकल्पवान बने रहे। हमने अपने संकल्पों को पूरा करने का मार्ग चुना यह केवल कार्यकर्ताओं और संगठन की वजह से ही पूरा हो सका है।

उन्होंने कहा कि हमें सदस्यता अभियान को गंभीरता से लेना है। भाजपा का कार्यकर्ता हनुमान है, वह जो ठान लेता है उसे पूरा करता है। हमें प्रत्येक व्यक्ति, वर्ग तथा क्षेत्र तक पहुंचकर सभी को पार्टी का सदस्य बनाने के लिए काम करना है। श्री गौतम ने कहा कि देश के निर्माण का जिम्मा भाजपा कार्यकर्ताओं के कंधे पर ही है।

उन्होंने कहा कि 1947 में हम आजाद तो हुए लेकिन वह हमें एक बहुत बड़ी त्रासदी के साथ मिली। धारा 370 और पीओके का निर्माण भी इन्हीं त्रासदियों का हिस्सा है। देश का विभाजन और लाखों लोगों की शहादत के बाद यह आज का भारत हमें मिला है। भारत और भारतीयता पर कुठाराघात करने के षड्यंत्र आजादी के पहले और बाद ही नहीं अभी भी हो रहे हैं।

राष्ट्रीय महामंत्री ने कहा कि भाजपा के कार्यकर्ताओं के लिए देश पहले, पार्टी दूसरे और व्यक्ति अंतिम ही हमारा ध्येय है।

लोग पूछते हैं कि भाजपा और कांग्रेस में क्या फर्क है? सबसे बड़ा फर्क यही है कि कांग्रेस के जवाहर लाल नेहरू ने प्रधानमंत्री बनने के लिए देश के दो टुकड़े कराये और हमारे अध्यक्ष डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने भारत की एकता के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया। उन्होंने कहा कि संगठन की शक्ति का ही परिणाम है कि भाजपा ने मोदी जी जैसा प्रधानमंत्री दिया है। वे तीसरी बार लगातार प्रधानमंत्री बने हैं। नेहरू भी बने थे लेकिन तब विपक्ष का नामोनिशान भी नहीं था। आज 2500 पार्टियों और टुकड़े टुकड़े गैंग के लोग जो सदन भी नहीं चलने देते हैं उनके झूठ का मुक़ाबला करते हुए हमने यह उपलब्धि अपने कार्यकर्ताओं के बल और जनविश्वास के बल पर अर्जित की है। झूठ की राजनीति कैसी होती है, यह कैसे की जाती है कांग्रेस और इंडी अलायंस के लोगों से बेहतर कोई नहीं कर सकता है। कैसे इन्होंने संविधान बदल देंगे, आरक्षण ख़त्म हो जाएगा के नाम पर झूठ फैलाया। जबकि संविधान की प्रस्तावना बदलने का काम तो इंदिरा गांधी की सरकार ने किया। आपातकाल लागू कर संविधान की धज्जियाँ उड़ाने का काम कांग्रेस की ही सरकार ने किया। कहा कि भाजपा देव दुर्लभ कार्यकर्ताओं की पार्टी है। कोरोना काल में भाजपा के कार्यकर्ताओं ने सेवा के बहुत काम करके अपने प्राणों की आहुति दी। उनके लिए देश और समाज पहले था। किसी अन्य पार्टी के नेता और कार्यकर्ता अपने घरों से बाहर नहीं निकले। श्री गौतम ने कहा कि हम सबको पार्टी संगठन की योजनानुसार सदस्यता अभियान को प्रभावी ढंग से पूरे प्रदेश में व्यापक स्तर तक चलाना है।

पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने सदस्यता अभियान की कार्यशाला में उपस्थित प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए कहा कि भाजपा ने अपने संगठन के कार्य विस्तार की दृष्टि से सदस्यता अभियान शुरू किया है। जिन्हें भी अभियान से जोड़ना है ऐसे कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण करना है। 2014 में हमने बड़ा अभियान लिया था, 2019 में भी हमने सदस्यता का अभियान चलाया था। भाजपा का संगठन अखिल भारतीय स्तर से लेकर बूथ तक है। भाजपा विश्व का सबसे बड़ा राजनैतिक दल है। सबसे ज़्यादा सांसद, विधायक और अधिकांश राज्यों में भाजपा की सरकारें हैं। देश के हर हिस्से में भाजपा का प्रभाव है। उत्तर प्रदेश में भी प्रदेश के लगभग 1.62 लाख बूथों पर भाजपा का संगठन है।

उन्होंने कहा कि हम सदस्यता का महाअभियान शुरू करने जा रहे हैं। 1 सितंबर से जब अभियान शुरू होगा तो हमें प्रदेश के हर घर में भाजपा का सदस्य बनाना है, इसके लिए संगठन के अभियान को योजनापूर्वक घर–घर, गांव–गांव तक पहुंचाना होगा। हमारी सरकार ने जनता से किए अपने वादों और संकल्पों को पूरा किया है। पार्टी कार्यकर्ताओं को पूरे जोश के साथ संगठनात्मक प्रक्रिया को आगे बढ़ाना है। प्राथमिक सदस्य, सक्रिय सदस्य, बूथ समिति और ऊपर का संगठन बनाना है। इसके लिए पार्टी के अभियान में सब सक्रियता से जुड़कर अपनी भूमिका का निर्वहन करें।

प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि जनसंघ के रूप में भाजपा की यात्रा शुरू हुई थी, हमारे पहले अध्यक्ष डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने देश की एकता और अखंडता के लिए अपना बलिदान दिया। पहले हमें क्षेत्र विशेष की पार्टी कहा जाता था, आज समाज के सभी वर्गों और सभी क्षेत्रों में भाजपा का व्यापक आधार है। उत्तर से दक्षिण तक, पूरब से पश्चिम तक हर जगह भाजपा का संगठन मजबूती के साथ कार्य कर रहा है। उन्होंने कहा पिछले दस वर्षों में केंद्र में भाजपा की सरकार है। 1962 के बाद पहली बार ऐसा अवसर है कि किसी पार्टी को तीसरी बार सरकार बनाने का अवसर मिला है। पहले जब ऐसा हुआ था तब विपक्ष का कोई मतलब नहीं था हर तरफ केवल कांग्रेस ही कांग्रेस थी। आज विपक्ष के झूठे और मनगढ़ंत वादों के बाद भी तीसरी बार भाजपा की सरकार बनी है।

श्री चौधरी ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में राम मंदिर निर्माण, धारा 370 की समाप्ति तथा ट्रिपल तलाक जैसी कुरीति को समाप्त करने सहित हमने अपने सभी संकल्पों को पूरा किया। मोदी जी ने भारत को दुनिया की तीसरी अर्थव्यवस्था बनाने का संकल्प लिया है। इसे भी हम पूरा करेंगे, हम जनाकांक्षाओं को पूरा करने वाले लोग हैं। भाजपा सांस्कृतिक विरासत के साथ ही लोगों के जीवन स्तर को ऊपर ले जाने वाली पार्टी है। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष ने पार्टी कार्यकर्ताओं का आह्वान किया वे सदस्यता अभियान को संगठन पर्व के रूप में मनाते हुए समाज के प्रत्येक वर्ग, क्षेत्र के लोगों को पार्टी का सदस्य बनाकर उन्हें अपने विचारधारा से जोड़ने का काम करें।

प्रदेश के उपमुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य ने अपने संबोधन में कहा कि संगठन गढ़े चलो सुपंथ पर बढ़े चलो, भला हो जिसमें देश का वो काम सब किए चलो इन्हीं पंक्तियों के आधार पर हम सब काम करते है। जिस काम में देश का, समाज का, गरीब का, महिला का, युवा का, किसान का भला

हो भाजपा वही काम करती है।

उन्होंने कहा कि भाजपा का लक्ष्य देश को मज़बूत बनाना और प्रत्येक देशवासी के जीवन में खुशहाली लाना है। हमारा व्यक्तिगत अस्तित्व पार्टी और देश से बड़ा नहीं है। हमारे लिए पहले देश, फिर दल और फिर व्यक्ति। दूसरे दलों में पहले पार्टी मुखिया बाद में सब कुछ होता है। उन्होंने कहा कि पार्टी का सदस्यता अभियान शुरू होने जा रहा है। चाहे 2027 हो या 2029 का आने वाला चुनाव। हमें अपने संपर्कों को जीवंत रखना है। सदस्यता के लिए जो लक्ष्य हमें मिले उसे पूरा करने के लिए सम्पर्क व संवाद बनाना है। हमें घर घर जाकर लोगों से व्यक्तिगत रूप से मिलना है। हमें जीवंत संपर्क बनाकर लोगों को भाजपा से जोड़ना है। देश और दल के लिए खुद को खपाना पड़े तो हमें इसके लिए तैयार रहना होगा।

प्रदेश के उपमुख्यमंत्री श्री ब्रजेश पाठक ने कहा कि देश में 2014 और प्रदेश 2017 से अबतक भाजपा की सरकार चल रही है। देश और प्रदेश में अभूतपूर्व परिवर्तन हो चुका है। पूरी दुनिया भारत और मोदी जी की तरफ़ देख रही है। आज दुनिया के सभी मंचों पर भारत ने नेतृत्व किया है। जब 2014 में सरकार बनाने का अवसर मिला था तब हम 12वें स्थान पर थे आज हम विश्व में पाँचवीं आर्थिक शक्ति हैं।

उन्होंने कहा कि आज प्रदेश में बिजली, पानी सड़क हर मुद्दे पर सफल हैं। 2017 में क़ानून व्यवस्था एक बड़ा मुद्दा थी। हमने प्रदेश को बेहतर कमान दी है। पहले गुंडे माफिया सरकार का हिस्सा थे, व्यापारी भी परेशान थे, बहू बेटी भी असुरक्षित थी। भाजपा सरकार ने 2017 के पहले की इन सभी बीमारियों को दूर करने का काम किया है।

श्री पाठक ने कहा कि आज हर ज़िले में मेडिकल कॉलेज बन रहा है। हर घर पीने का साफ़ पानी मुहैया कराये जाने की क़वायद की जा रही है। प्रदेश एक्सप्रेस वे प्रदेश है। विपक्षी गठबंधन की गुंडई, अराजकता, भाई भतीजावाद की बातें जनता तक पहुँचानी है।

श्री पाठक ने कहा कि सदस्यता अभियान में सभी को जुटना है, सभी मिलकर काम करेंगे तो भाजपा को मज़बूती मिलेगी। हमें सबके बीच जाना है और अपनी उपलब्धियों के आधार पर सभी वर्ग के लोगों को भाजपा का सदस्य बनने के लिए प्रेरित करना है।

पार्टी के प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह ने सदस्यता अभियान के संदर्भ में विस्तारपूर्वक चर्चा करते हुए कहा कि संगठन की शक्ति का आधार सदस्यता है। इस अभियान की योजना व्यापक और प्रभावी है। सदस्यता अभियान पूर्व योजना–पूर्णयोजना के आधार पर चलाते हुए सर्वस्पर्शी और सर्वव्यापी सदस्यता के लिए हम सबको काम करना है। उन्होंने बताया कि एक सितम्बर से सदस्यता अभियान प्रारम्भ होगा। एक सितम्बर को सदस्यता अभियान प्रारम्भ होगा। उन्होंने बताया कि 22 से 24 अगस्त तक सदस्यता अभियान को लेकर जिला कार्यशालायें व मोर्चों की कार्यशालायें आयोजित करनी है। जबकि 25 से 27 अगस्त तक मंडल स्तर पर सदस्यता अभियान की कार्यशालायें आयोजित करनी है। 31 अगस्त को सभी बूथों पर एक साथ सदस्यता अभियान को लेकर बूथ स्तर पर कार्यशाला का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि सदस्यता अभियान को लेकर क्षेत्र, जिला, मंडल और बूथ स्तर पर टीम गठित करनी है। 2 और 3 सितम्बर को प्रदेश में अलग–अलग स्थानों पर सदस्यता लांचिंग के कार्यक्रम आयोजित किये जाएगें। 4 व 5 सितम्बर को जिला स्तर पर प्रेस कान्फ्रेंस एवं सदस्यता लांचिग का आयोजन होगा। 11 से 17 सितम्बर तक सदस्यता को लेकर विशेश अभियान चलाया जाएगा जिसमें सभी पार्टी पदाधिकारी व जनप्रतिनिधि सम्मिलित होगें एवं बूथ स्तर पर सदस्यता करेंगे। 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस पर शिक्षको की सदस्यता और 17 सितम्बर को विश्वकर्मा जयन्ती पर सदस्यता के लिए विशेष अभियान चलाने को कहा सप्ताह में अंतिम रविवार को अटल पर्व के रूप में सदस्यता करें। उन्होने कहा कि पार्टी द्वारा शुरू किये जा रहे सदस्यता अभियान में सांसद 20 हजार, विधायक 10 हजार, महापौर 20 हजार, नगर पालिका अध्यक्ष 5 हजार, नगर पंचायत अध्यक्ष 2 हजार, नगर निगम पार्षद एक हजार, नगर पालिका के पार्शद 500 व नगर पंचायत के पार्षद 200, निगम आयोग बोर्ड के अध्यक्ष 1000, जिला पंचायत अध्यक्ष 15 हजार, युवा मोर्चा 15 लाख, महिला मोर्चा, पिछडा मोर्चा, अनूसूचित जाति मोर्चा को 10–10 लाख, अल्पसंख्यक मोर्चा व अनुसूचित जनजाति मोर्चा को 2–2 लाख सदस्य बनाने का लक्ष्य दिया गया है।

श्री धर्मपाल सिंह ने सदस्यता को लेकर व्यापक स्तर पर प्रचार प्रसार का अभियान चलाने पर जोर देते हुए कहा कि समाज के प्रभावशाली व्यक्तियों, विशिश्ठ समूहों के लोगों सहित समाज के सभी वर्गों के लोगों को पार्टी का सदस्य बनाने के लिए हमें व्यापक स्तर पर कार्य करना है। प्रदेश महामंत्री संगठन ने सार्वजनिक स्थानों पर सदस्यता कैंप आयोजित किये जाने पर भी चर्चा की।

श्रद्धांजलि | **पुण्यतिथि-16 अगस्त**

जननेता 'भारत रत्न' अटल बिहारी वाजपेयी

अटलजी ने भारतीय राजनीति में एक अनूठी और गौरवशाली विरासत छोड़ी है। उन्होंने वास्तव में भारत की भावना का प्रतिनिधित्व किया, जहां लोकतांत्रिक परंपराओं ने राष्ट्र के सामाजिक-सांस्कृतिक ताने-बाने को आकार दिया है। वह राजनीति में आपातकाल और तानाशाही प्रवृत्तियों का विरोध करने में भी सबसे आगे रहे। उनका राष्ट्रवाद लोकतांत्रिक भावना से ओत-प्रोत था, जिसमें भारतीय समाज की विविधताओं को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सरोकारों के विभिन्न मुद्दों पर आम सहमति विकसित करने की परंपरा के माध्यम से संबोधित किया गया है। अपने लंबे संसदीय जीवन में वे विपक्ष में रहते हुए भी महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपनी अमिट छाप छोड़ने में सफल रहे।

राष्ट्र को परेशान करनेवाली विभिन्न समस्याओं पर उनकी पकड़ के कारण ही उन्होंने राष्ट्रीय लोकाचार और मूल्य आधारित राजनीति के भीतर सभी समस्याओं का समाधान खोजने का प्रयास किया। देश की मिट्टी से जुड़े वह एक ऐसे नेता थे, जो अपनी राजनीतिक अंतर्दृष्टि के लिए जाने जाते थे, इस बात का उनके राजनीतिक विरोधी भी सम्मान करते थे। राष्ट्र को उन पर इतना विश्वास था कि संकट के समय उनके राजनीतिक विरोधियों ने भी उनकी सलाह ली थी। 'मां भारती' के सच्चे सपूत के रूप में उन्होंने कई मौकों पर दलगत राजनीति से ऊपर उठना पसंद किया और राष्ट्रीय हितों की वेदी पर पार्टी के हितों का त्याग करने के विकल्प को भी चुना। जब आपातकाल घोषित किया गया, तो जनसंघ का विलय व्यापक राष्ट्रीय हित में जनता पार्टी में कर दिया गया। सिद्धांतों और विचारधारा पर एक अडिग नेता के रूप में वह भारतीय जनता पार्टी बनाने के लिए अपने सहयोगियों के साथ जनता पार्टी से बाहर आए। उनका सैद्धांतिक और मूल्य आधारित राजनीति पर अटूट विश्वास था।

पूर्व रियासत ग्वालियर (अब मध्य प्रदेश राज्य का हिस्सा) में 25 दिसंबर, 1924 को एक सामान्य स्कूल शिक्षक के परिवार में जन्मे श्री वाजपेयी का सार्वजनिक जीवन

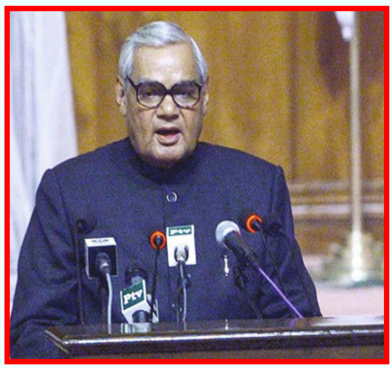

राष्ट्र को उन पर इतना विश्वास था कि संकट के समय उनके राजनीतिक विरोधियों ने भी उनकी सलाह ली थी। 'मां भारती' के सच्चे सपूत के रूप में उन्होंने कई मौकों पर दलगत राजनीति से ऊपर उठना पसंद किया और राष्ट्रीय हितों की वेदी पर पार्टी के हितों का त्याग करने के विकल्प को भी चुना

में उदय उनके राजनीतिक कौशल और भारतीय लोकतंत्र की खूबसूरती को दर्शाता है। दशकों बाद वह एक ऐसे नेता के रूप में उभरे, जिन्हें उनके उदार विश्वदृष्टि और लोकतांत्रिक आदर्शों के लिए जाना गया।

एक उत्कृष्ट वक्ता के रूप में उन्होंने अपनी जादुई शैली से जनता को मंत्रमुग्ध किया। राष्ट्र उन्हें प्रधानमंत्री के रूप में देखना चाहता था और यह सपना देश में लोगों के बढ़ते समर्थन के साथ साकार भी हुआ। प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने उल्लेखनीय सफलता के साथ हर मोर्चे पर देश का नेतृत्व किया। भारत एक शांतिपूर्ण परमाणु शक्ति संपन्न देश के रूप में उभरा, जो अंतरराष्ट्रीय आर्थिक प्रतिबंधों के बावजूद भी अपने पथ पर चलता रहा। एक सच्चे 'अटल' के रूप में वे कभी दबाव में नहीं झुके, बल्कि यह उनके लिए वैश्विक स्तर पर भारत की आंतरिक ताकत को साबित करने का एक अवसर था। उन्होंने बुनियादी ढांचे के क्षेत्र को बड़े पैमाने पर बढ़ावा देते हुए और भारत को विभिन्न मोर्चों पर 'आत्मनिर्भर' बनाते हुए सुशासन और विकास की एक नई गाथा लिखी। जैसाकि उन्होंने अपने एक भाषण में कहा था, उन्होंने समय के कैनवास पर अमिट छाप छोड़ी है। उनके द्वारा दिखाया गया मार्ग उभरते हुए नए भारत के लिए मार्गदर्शक बन गया।

अटलजी ने पीढ़ी-दर-पीढ़ी देशभक्ति और राष्ट्र प्रेम की गहन भावना के साथ सार्वजनिक जीवन में योगदान देने के लिए सभी को प्रेरित किया है। भारतीय राजनीति में विकल्प देने के उद्देश्य से शुरू हुए राजनीतिक आंदोलन की परिणति उनके रूप में हुई, क्योंकि वे भारत के पहले गैर-कांग्रेसी प्रधानमंत्री बने जिन्होंने अपना कार्यकाल पूरा किया। यह उनके नेतृत्व में बनाया गया एक इतिहास था और देश के लाखों लोगों द्वारा पोषित एक विरासत थी। एक सच्चे राजनेता, लोकतंत्रवादी, आम सहमति बनानेवाले और सबसे बढ़कर वह राजनीति में एक सज्जन पुरुष के रूप में जाने जाते रहे। अटलजी का स्वर्गवास 16 अगस्त, 2018 को 93 वर्ष की आयु में हो गया।

'कमल संदेश' अटलजी को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

23 अगस्त/बलिदान दिवस

शहीद गुलाब सिंह लोधी लखनऊ में झंडे वाले पार्क का सत्याग्रह

भारत की स्वाधीनता के आंदोलन में लाखों लोगों ने अपना बलिदान दिया है। उन दिनों हर गली, मोहल्ले, गाँव और नगर में लोग तिरंगा झंडा लेकर नारे लगाते हुए जुलूस निकालते थे। पुलिस उन्हें रोकती, मारती और गिरफ्तार कर लेती थी। यह आंदोलन अहिंसक था। अतः लोग चुपचाप यह सब सह लेते थे। पर इससे उनका उत्साह कम नहीं होता था। वे अगले दिन दूने उत्साह से फिर सड़कों पर आ जाते थे।

ऐसा ही आंदोलन उ.प्र. की राजधानी लखनऊ में भी हो रहा था। लखनऊ में अमीनाबाद एक प्रसिद्ध स्थान है। शहर का प्रमुख बाजार होने के कारण वहाँ दिन भर भीड़भाड़ रहती थी। उसके पास ही एक बड़ा पार्क है, जहाँ बाजार में आये लोग दिन में सुस्ता लेते थे। स्वाधीनता सेनानियों ने इसी पार्क में तिरंगा फहराने की घोषणा कर दी।

इसके लिए अलग अलग स्थानों से सत्याग्रहियों के जत्थे आते थे; पर वहाँ पुलिस और फौज का कड़ा पहरा रहता था। वे उन्हें मारपीट कर भगा देते थे। ऐसे ही एक जत्था उन्नाव जिले से आया था। उसमें शामिल एक युवक का नाम था गुलाब सिंह लोधी। उसका जन्म 1903 में ग्राम चंदीकाखेड़ा (फतेहपुर चौरासी) में श्रीराम रतनसिंह लोधी के घर में हुआ था। उसके पिताजी उस क्षेत्र के बड़े किसान एवं जमींदार थे।

23 अगस्त, 1935 को हर दिन की तरह पार्क के आसपास अच्छी भीड़ थी। कुछ लोग माल बेच रहे थे, तो कुछ खरीद रहे थे। सत्याग्रही अपने घोषित समय पर वहाँ आये और झंडा लेकर पार्क में घुसने लगे। पुलिस और फौज भी मुस्तैद थी। अतः वे अपने प्रयास में सफल नहीं हो सके। कुछ लोगों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया तो कुछ वापस चले गये। बाजार वालों के लिए यह रोज की बात थी। अतः वे अपने काम में लगे रहे।

पर थोड़ी देर बाद हुई हलचल से सबका ध्यान भंग हो गया। असल में गुलाब सिंह अपने जत्थे के साथ आया तो था; पर वह उनसे कुछ हटकर चुपचाप खड़ा हो गया। जत्थे के नेता के पास बड़ा तिरंगा झंडा था, जो पुलिस ने जब्त कर लिया; पर गुलाब सिंह अपने साथ एक छोटा झंडा भी लेकर आया था। उसे एक बैल हांकने वाले डंडे (पैना) पर बाँधकर उसने कपड़ों में इस प्रकार छिपा लिया कि वह किसी को दिखाई नहीं देता था। उसके माथे पर साफा बँधा था। ऐसा लगता था कि वह अपनी बैलगाड़ी में गाँव से कुछ माल बेचने आया है और खाली समय में पेड़ के नीचे सुस्ता रहा है।

सत्याग्रहियों की गिरफ्तारी और उनके जाने के बाद पुलिस भी कुछ उदासीन हो गयी। इसका लाभ उठाकर गुलाब सिंह ने चुपचाप एक कोने की तारबाड़ उठाई और उसके नीचे से पार्क में घुस गया। इसके बाद वह एक बड़े पेड़ पर चढ़ गया और वहाँ तिरंगा झंडा फहराकर उच्च स्वर में नारे लगाने लगा। इससे पुलिस हड़बड़ा गयी और पार्क का द्वार छोड़कर उसकी ओर दौड़ी। इसी बीच हजारों लोग पार्क में घुस गये और वे भी नारे लगाने लगे।

इस सबसे पुलिस बौखला गयी। उसकी सुरक्षा के बावजूद सत्याग्रह सफल हो गया था। उनके कप्तान को जब कुछ समझ में नहीं आया तो उसने गुलाब सिंह की ओर बंदूक तानकर गोली चला दी। गोली लगते ही गुलाब सिंह धरती पर गिर पड़ा और कुछ ही देर में उसके प्राण छूट गये। उस समय भी उसके मुँह से भारत माता की जय और वंदे मातरम् के नारे निकल रहे थे।

इसके बाद से वह 'झण्डेवाला पार्क' कहलाने लगा। आजादी के बाद वहाँ गुलाब सिंह लोधी की प्रतिमा स्थापित की गयी। 23 अगस्त को हजारों लोग वहाँ उन्हें श्रद्धांजलि देने आते हैं। उस वीर की स्मृति में 2013 में पाँच रु0 मूल्य का एक डाक टिकट भी जारी किया गया है।

श्रृद्धांजलि

"बाल जी" पंचतत्व में विलिन

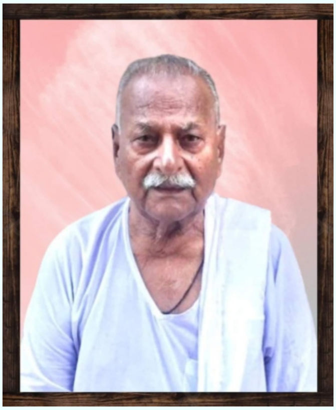

लखनऊ! राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व अखिल भारतीय सह व्यवस्था प्रमुख एवं अवध प्रांत के पूर्व प्रांत प्रचारक श्रीमान बालकृष्ण जी का निधन राम मनोहर लोहिया चिकित्सा संस्थान लखनऊ में हो गया।

श्री बालकृष्ण जी के पार्थिव देह के अन्तिम दर्शन भारती भवन, लखनऊ में प्रातः 7:30 से 10:00 बजे तक हुये।

उनका अन्तिम संस्कार गंगा तट, भैरों घाट, कानपुर सम्पन्न हुआ। स्व0 श्री बालकृष्ण जी पिता – स्व. मन्नूलाल त्रिपाठी जी, माता – स्व. शान्ति देवी जी

ये (कुल 5 भाईयों में से दूसरे क्रम पर)

इनका जन्म– 05–03–1937 ग्राम– कंठीपुर, ब्लाक– शिवराजपुर, तहसील– बिल्हौर, कानपुर देहात इन्होंने शिक्षा – एम.काम., डीएवी कालेज कानपुर, शिक्षा पूरी होने के बाद आप कानपुर के एर्गन मिल में सेवारत थे। कानपुर के तत्कालीन विभाग प्रचारक स्व. अशोक सिंहल जी की प्रेरणा से नौकरी छोड़कर सन 1962 में आप संघ के प्रचारक निकले।

1962 में बिल्हौर से प्रचारक निकले, तहसील प्रचारक बिल्हौर, नगर प्रचारक कानपुर, जिला प्रचारक, विभाग प्रचारक, प्रांत शारीरिक प्रमुख, सह प्रांत प्रचारक, प्रांत प्रचारक अवध प्रांत, संयुक्त क्षेत्र सम्पर्क प्रमुख, उ.प्र. व उत्तराखंड, अखिल भारतीय सह व्यवस्था प्रमुख, आदि दायित्वों का आपने निर्वहन किया।

आपातकाल के समय आपने कानपुर में भूमिगत होकर सक्रिय रूप काम किया।

वर्तमान में आपका केन्द्र 'भारती भवन' लखनऊ था।

स्वर्गीय बालकृष्ण जी के निधन पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प.पू. सरसंघचालक डॉ. मोहन जी भागवत एवं मा. सरकार्यवाह श्रीमान दत्तात्रेय होसबाले जी ने गहन शोक प्रकट किया है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक सेवक संघ के सह सरकार्यवाह मा. अरुण कुमार जी ने भारती भवन में स्व. बालजी के पार्थिव देह पर पुष्पांजलि अर्पित की।

उ.प्र. के मुख्यमन्त्री योगी आदित्यनाथ जी ने भी आपके निधन पर गहरा दुख व्यक्त किया है। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी व प्रदेश महामंत्री (संगठन) धर्मपाल सिंह ने राश्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिश्ठ प्रचारक, पूर्व अखिल भारतीय सह व्यवस्था प्रमुख एवं अवध प्रान्त के पूर्व प्रान्त प्रचारक श्री बालकृशण जी के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है।

प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने शोक संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि राश्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिश्ठ प्रचारक, पूर्व अखिल भारतीय सह व्यवस्था प्रमुख एवं अवध प्रान्त के पूर्व प्रान्त प्रचारक श्री बालकृशण जी का निधन अत्यंत दुखदायी है। ईश्वर गोलोकवासी पुण्यात्मा को अपने श्री चरणों में स्थान दे तथा शोकाकुल स्वयंसेवको व परिजनों को विपदा की घड़ी में संबल प्रदान करे।

उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री श्री बृजेश पाठक जी ने भी भारती भवन में पार्थिव देह पर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पूर्वी उ.प्र. के क्षेत्र प्रचारक श्रीमान अनिल जी, क्षेत्र प्रचारक प्रमुख श्री राजेन्द्र सिंह जी, अवध प्रांत प्रचारक श्री कौशल जी, इतिहास संकलन के अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री श्रीमान संजय जी, संयुक्त क्षेत्र ग्राम विकास प्रमुख श्रीमान वीरेंद्र सिंह जी, क्षेत्र कार्यकारिणी के सदस्य श्री रामजी भाई, क्षेत्र प्रचार प्रमुख श्रीमान सुभाष जी राष्ट्रधर्म के निदेशक श्रीमान मनोजकांत जी, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी जी, राज्यसभा सदस्य डा. दिनेश शर्माजी, भाजपा के पूर्व संगठन मंत्री जय प्रकाश चतुर्वेदी जी, पूर्व महापौर संयुक्ता भाटिया जी, विधान परिषद सदस्य डा. महेन्द्र सिंह जी, विहिप के प्रांत संगठन मंत्री श्री विजय प्रताप जी, स्वामी रामेश्वर दास जी, विद्या भारती के क्षेत्र संगठन मन्त्री श्री हेमचंद्र जी, बाल आयोग की सदस्य डा. शुचिता चतुर्वेदी जी, सिविल हॉस्पिटल लखनऊ के सीएमओ डा. नरेन्द्र जी आदि ने भी स्व. बालजी के पार्थिव देह पर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

विकसित भारत @ 2047

स्वतंत्रता
दिवस

भारत रत्न श्रद्धेय पं. अटल बिहारी वाजपेयी
पुण्यतिथि-16 अगस्त 2018

पत्रिका पंजीकरण – RNI-51899/91, शीर्षक कोडः UPHIN16701, डाक पंजीकरण – SSP/LW/NP-117-2024-26
अगस्त संयुक्तांक अंक 2024 – प्रेषित डाकघर – R.M.S. चारबाग, लखनऊ – प्रेषण तिथि : 26–29 (द्वितीय पाक्षिक)

भारतीय जनता पार्टी के लिए मुद्रक तथा प्रकाशक प्रो. श्यामनन्दन सिंह द्वारा नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ से मुद्रित व भाजपा कार्यालय, 7, विधानसभा मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।